

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयते ॥

सत्संग शिक्षणश्रेणी की पाठ्यपुस्तक : 2

# घनश्याम चरित्र

लेखक

प्रो. रमेश एम. दवे



प्रकाशक

स्वामिनारायण अक्षरपीठ

शाहीबाग, अहमदाबाद - 380 004.

**GHANSHYAM CHARITRA** (Hindi Edition)  
(Childhood stories of Bhagwan Swaminarayan)

By Ramesh M. Dave

A textbook for examination prescribed under the curriculum set by  
Bochasanwasi Shri Akshar Purushottam Swaminarayan Sanstha.

**Inspirer:** HDH Pramukh Swami Maharaj

**Presented by:**

Bochasanwasi Shri Akshar Purushottam Swaminarayan Sanstha  
'Swaminarayan Akshardham', N.H. 24, Akshardham Setu,  
Yamuna Kinara, New Delhi - 110 092. India.

**Publishers:**

SWAMINARAYAN AKSHARPITH  
Shahibaug, Amdavad - 380 004. India.

**4th Edition:**

January 2007. Copies: 10,000 (Total Copies: 23,000)

**Warning:**

**Copyright:** ©Swaminarayan Aksharpith

This book is published by Swaminarayan Aksharpith. Material  
from this book cannot be used without due acknowledgement to  
Swaminarayan Aksharpith, Shahibaug, Amdavad. For any  
reprints the written permission of the publishers is necessary.

**ISBN:** 81-7526-017-3

**रज्जकर्ता :** बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था (बी.ए.पी.एस.)

‘स्वामिनारायण अक्षरधाम’, नेशनल हाईवे 24, अक्षरधाम सेतु,

यमुना किनारा, नई दिल्ली - 110 092.

**प्रेरणामूर्ति :** प्रकट ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज

**सूचना :** सर्वाधिकार सुरक्षित : © स्वामिनारायण अक्षरपीठ

इस पुस्तक के अंश किसी भी स्वरूप में प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की  
लिखित सम्मति अनिवार्य है।

**चतुर्थ संस्करण :** जनवरी, 2007

**प्रति :** 10,000 (कुल प्रति : 23,000)

**मूल्य :** रु. 20.00



**मुद्रक एवं प्रकाशक :**

**स्वामिनारायण अक्षरपीठ**

शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.

## कृपाकथन

ब्रह्मस्वरूप स्वामीश्री योगीजी महाराज द्वारा स्थापित व पोषित युवक प्रवृत्ति तीव्र गति से विस्तृत होती जा रही है। इस प्रवृत्ति से जुड़े युवाओं की आकांक्षा तथा ज्ञानपिपासा को संतुष्ट करने तथा उन्हें भगवान स्वामिनारायण प्रबोधित अक्षरपुरुषोत्तम के सिद्धांत की ओर अभिमुख करने के उद्देश्य से बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था ने क्रमबद्ध पुस्तकों के प्रकाशन का आयोजन किया है।

इन पुस्तकों द्वारा बालकों और युवाओं को व्यवस्थित, सुगम तथा सरल ढंग से सत्संग का शुद्ध ज्ञान प्राप्त होगा। भगवान स्वामिनारायण द्वारा उद्बोधित आदर्शों के पालन व प्रचार के लिए ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज द्वारा स्थापित यह संस्था, इस प्रकार की अनेक सत्संग प्रवृत्तियों में संलग्न है कि जिससे विश्व में हमारी महान हिन्दू संस्कृति का प्रचार व प्रसार हो।

भगवान स्वामिनारायण का दिव्य संदेश विश्व के कोने-कोने में प्रसारित हो तथा सभी मुमुक्षुओं को शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति हो इसी हेतु इन पुस्तकों का भिन्न-भिन्न भाषाओं में प्रकाशन किया गया है।

इन पुस्तिकाओं के आधार पर सत्संग शिक्षण परीक्षाएँ आयोजित की जाएँगी साथ ही बालकों-युवकों को प्रमाणपत्र देकर प्रोत्साहित किया जाएगा। इस पुस्तकों को तैयार करने में ईश्वरचरण स्वामी, रमेशभाई दवे, किशोरभाई दवे तथा अन्य सहयोगियों ने भारी परिश्रम उठाया है, उनको हमारे आशीर्वाद हैं।

अत्यंत स्नेहपूर्वक

जय श्री स्वामिनारायण।

**शास्त्री नारायणस्वरूपदासजी**

**( प्रमुखस्वामी महाराज )**

## निवेदन

परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तमनारायण भगवान् स्वामिनारायण ने इस पृथ्वी पर आकर अनन्त दिव्य चरित्र किये हैं। इन अपार चरित्रों का सम्पूर्ण वर्णन करना मुश्किल है - असम्भव है। फिर भी उनके चरित्रों को तीन विभागों में विभाजित किए गए हैं, 'घनश्याम चरित्र' 'नीलकंठ चरित्र' एवं 'सहजानंद चरित्र।' प्रस्तुत पुस्तिका में भगवान् स्वामिनारायण के प्रागट्य से लेकर उनके गृहत्याग की घटना तक के चरित्रों का विवरण किया गया है। बचपन में श्रीहरि का नाम 'घनश्याम' रखा गया था। इसीलिए इस प्रथम भाग का नाम घनश्याम चरित्र दिया गया है।

यह पुस्तक अब आपके हाथों में बहुरंगी चित्रों के साथ उपलब्ध होगा। प्रस्तुत नूतन संस्करण आबालवृद्ध सभी के लिए रुचिकर रहेगा। यहाँ तो श्रीहरि के बाल्यजीवन का केवल अल्प मात्र परिचय ही है।

आइए, रोचक शैली में लिए हुए बाल घनश्याम के चरित्रों में मन एकाग्र करके उनकी लोकोत्तर प्रतिभा का दर्शन करें।

सत्संग शिक्षण परीक्षा के अभ्यासक्रम के भागरूप 'सत्संग प्रारंभ' स्तर की परीक्षा के लिए इस पुस्तिका का समावेश किया गया है।

हम भी भगवान् स्वामिनारायण तथा प्रकट गुरुहरि प्रमुखस्वामी महाराज की प्रसन्नता के लिए सत्संग शिक्षण परीक्षा देकर उत्तम परिणाम प्राप्त करें ऐसी शुभकामना के साथ यह सुंदर चरित्र ग्रंथ आपके हाथ में रखते हुए हम अत्यंत हर्षित हैं।

- प्रयोजक

॥ श्रीस्वामिनारायणो विजयते ॥



ठम अभी स्वामी के बालक, मनेंगे स्वामी के लिए ।  
 ठम अभी श्रीजी के युवक, लड़ेगे श्रीजी के लिए ॥  
 नहीं डरते नहीं करते, ठमारी जान की पत्रवाह ।  
 ठमें है भय नहीं किसीसे, जन्मे हैं मृत्यु के लिए ॥  
 ठमने है यज्ञ आरंभ, अदा बलिदान ठम देंगे ।  
 ठमारा अक्षयपुरुषोत्तम, गुणातीत गान के लिए ॥  
 ठम अभी श्रीजी की अंतान, अक्षय में वास ठमारा है ।  
 स्वधर्मी भूत नमार्ई है, अब ठमें शर्म किसके लिए ॥  
 मिले हैं मोती-से स्वामी, हुए ठम पूर्णकाम अभी ।  
 प्रगट पुरुषोत्तम पाये, अंत से मुक्ति के लिए ॥

## क्रमिका

1. घनश्याम का जन्म .....	1	26. महावत की रक्षा .....	47
2. बालप्रभु का पराक्रम .....	3	27. नई बत्तीसी .....	49
3. रामदयाल को दर्शन .....	6	28. बालमित्रों को भोजन करवाया ..	50
4. प्रभु का नामकरण .....	7	29. ज़मात को भोजन, अभिमान का नाश .....	52
5. पुत्र की परीक्षा .....	8	30. लक्ष्मीबाई ने देखा - एक चमत्कार .....	55
6. कर्ण वेध संस्कार .....	9	31. एकादशी की महिमा .....	57
7. लक्ष्मीजी को वरदान .....	10	32. घनश्याम को यज्ञोपवीत संस्कार .....	59
8. सिद्धियाँ प्रभु की सेवा में .....	12	33. रामचन्द्र के रूप में दर्शन ....	61
9. खिचड़ी के बदले खीर .....	14	34. पत्थर पर यात्रा .....	63
10. नाई को चमत्कार .....	16	35. मौसी को चमत्कार .....	64
11. कालिदत्त मरण की शरण में	17	36. सारी रसोई खा गए .....	66
12. ठण्डे जल से चेचक की बीमारी गई .....	19	37. गौरी गाय की खोज में .....	68
13. मछलियों को जीवित किया	20	38. पानी पर चले .....	69
14. चिड़ियों को समाधि .....	22	39. चोर चिपक गए .....	71
15. बन्दर को समाधि .....	24	40. दो रूपों में दर्शन .....	73
16. बन्दरों की पिटाई .....	25	41. अन्धे को आँखें दीं .....	75
17. रामदत्त को आम चखाया ...	27	42. नित्यक्रम .....	77
18. मुमुक्षु किस दिशा की ओर ?	29	43. काशी की सभा में दिग्विजय .....	78
19. एक साथ अनेक मंदिरों में दर्शन .....	30	44. भक्तिमाता और धर्मपिता देहोत्सर्ग .....	80
20. भूतहा कुआँ .....	32	45. घनश्याम का गृहत्याग .....	81
21. पहलवानों की पराजय .....	34	46. सरयू के किनारे .....	83
22. लोभी हलवाई को चमत्कार	37	47. भाभी का विलाप .....	85
23. 'खांपा' तलैया .....	39		
24. सोलह चिह्न .....	42		
25. हिंसा बन्द करवाई .....	45		

# घनश्याम चरित्र

---





## 1. घनश्याम का जन्म

उत्तर प्रदेश में अयोध्या के पास 'छपिया' नाम का एक छोटा सा परन्तु सुन्दर गाँव है। गाँव के चारों ओर बरगद, पीपल, आम, इमली, अमरुद और अनार के पेड़ हैं। उसके पास ही में जामुन का वन है। वहाँ सारा दिन पक्षियों के मीठे स्वर सुनाई देते हैं। कोयल, मैना, तोता, मोर और देवचिड़िया आदि कई पक्षी हमेशा चहकते रहते हैं। छोटी-छोटी गलियों, मन्दिरों एवं छोटे-बड़े मकानों से गाँव शोभायमान दिख रहा है।

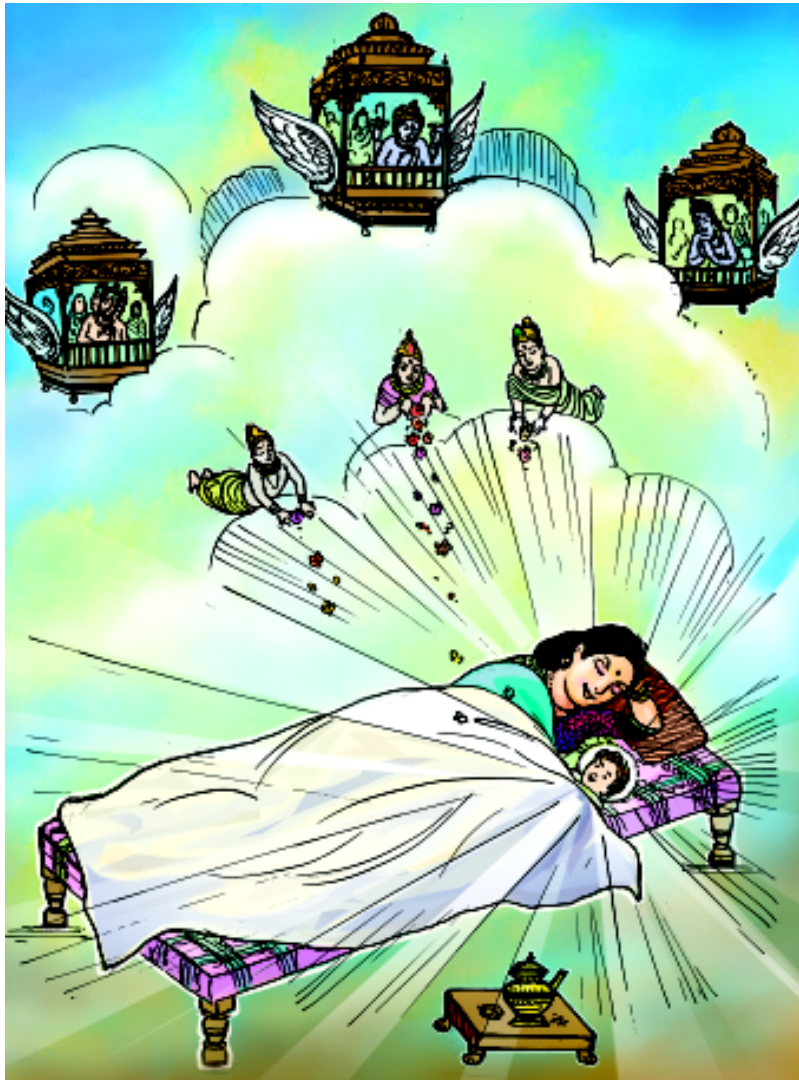
आज संवत् 1837, चैत्र शुक्ला नवमी की तिथि पर (दि. 3-4-1781) रात के दस बजे का समय है। धर्मदेव के घर के बाहर बच्चे खुशी से नाच रहे हैं, स्त्रियाँ गीत गाती हुई; थाली में कुमकुम, गुलाल, फूलमाला एवं रेशमी वस्त्र लेकर हँसती हुई धर्मदेव के घर की ओर जा रही हैं। आज तो उनके घर के चारों ओर काफ़ी भीड़ हो गई है। बाहर यज्ञशाला में ब्राह्मण मंत्रपाठ कर रहे हैं। धर्मदेव खड़े-खड़े ब्राह्मणों, गरीबों और साधु-सन्तों को अन्न, वस्त्र, गौ एवं स्वर्णाभूषण के दान दे रहे हैं, घर के चारों ओर दीपमाला प्रकाशमान है। शहनाई और नगाड़े की आवाज़ गूँज रही है।

रात्रि के समय इतना आनन्द मंगल क्यों? कोई विशेष कारण है? जी



हाँ, आज तो धर्मदेव के यहाँ भक्तिमाता ने पुत्र को जन्म दिया है। अरे! भगवान नारायण ने स्वयं भक्तिमाता के उदर से जन्म लिया है। आज तो भगवान बालक के रूप में अवतरित हुए हैं। बालक के प्राकट्य के साथ ही शरीर से दिव्य प्रकाश निकलने लगा और सारा घर प्रकाशित हो गया।

इस प्रकाश को देखकर गाँव के लोग आश्चर्यचकित हो गए। स्वर्ग



से विमान में बैठकर अनेक देवता, धर्मदेव के पुत्र के दर्शन के लिए पधारे। उन्होंने आकाश से चन्दन और पुष्पों की वर्षा की। चारों ओर जयघोष होने लगा।

## 2. बालप्रभु का पराक्रम

छपिया गाँव में कालिदत्त नाम का एक तांत्रिक था। वह दुष्टों का सरदार था। लोग उसे राक्षस समझकर उसके डर से काँपते रहते थे। उसे खबर मिली कि धर्मदेव के यहाँ प्रभु प्रकट हुए हैं, इससे वह ईर्ष्या और द्वेष के कारण व्याकुल हो उठा। एक दिन बड़े सवेरे उसने अपने अधीन डायन स्त्रियों को आदेश दिया कि 'जाओ, धर्मदेव के घर जिस बालक का जन्म हुआ है, उसे मार डालो।'

कृत्याएँ अर्थात् उस तांत्रिक का साथ देनेवाली डायन स्त्रियाँ कालिदत्त का आदेश पाते ही छपिया गाँव जा पहुँचीं। वे सभी धर्मदेव का घर खोजने लगीं।

वे स्त्रियाँ वास्तव में भयंकर थीं। उनकी लालसुर्ख आँखें, बड़े-बड़े नुकीले दाँत, कुरूप चेहरे और डरावनी आवाज़ से हर कोई काँपने लगता। वे दौड़ती हुई धर्मदेव के घर आ पहुँची। उन्होंने धीरे से झाँककर देखा तो पता चला कि भक्तिमाता बालप्रभु को दूध पिला रही हैं। डायनों ने घर के भीतर प्रवेश किया और अचानक माता के हाथों से बालप्रभु को झपटकर आम के उपवन की ओर दौड़ पड़ीं। माता ने आक्रंद के साथ हनुमानजी के चरणों में अपने बेटे को बचाने के लिए प्रार्थना की।

उस ओर छोटे-से उपवन में पवनपुत्र हनुमानजी बिराजमान थे। उन्होंने प्रार्थना सुनी और बालप्रभु को लेकर भागती हुई डायनों के सामने आकर खड़े रह गए। वे ठिठककर खड़ी रह गईं। पवनपुत्र ने उनके हाथों से बालप्रभु को अपनी गोद में ले लिया। उसके बाद एक-एक डायन को पकड़कर उनकी चोटियाँ अपनी पूँछ के साथ बाँधकर सभी को ज़ोरों के साथ ज़मीन पर पटकने लगे। कुछ डायनों के लम्बे बालों को पकड़कर मारा, तो कुछ को हवा में उछालकर ज़मीन पर पटक दिया। अंजनीपुत्र के पराक्रम से ये स्त्रियाँ चीख-चीखकर रोने लगीं। सारे उपवन में हाहाकार मच

गया। सभी की हड्डी-पसली टूट गई। गिड़गिड़ाते हुए वे सभी हनुमानजी की क्षमाप्रार्थना करने लगीं कि 'हे प्रभु, कृपया हमें छोड़ दीजिए, हम अब कभी भी छपिया गाँव की ओर नहीं आएँगीं।'

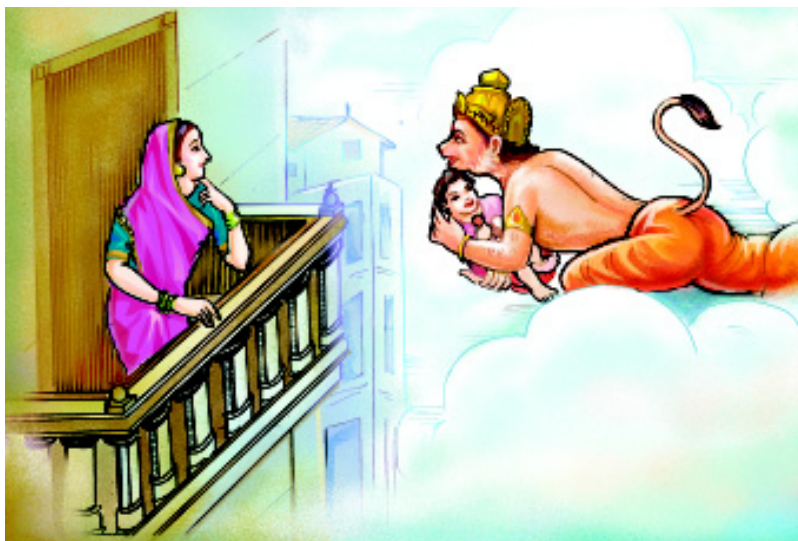
सभी डायन जीवन-दान पाकर उस उपवन से हमेशा के लिए भाग निकलीं। हनुमानजी सभी को छोड़कर बालप्रभु को गोद में लिए भक्तिमाता के पास आ पहुँचे, 'लीजिए माताजी, यह आपका बालक। यह तो भगवान हैं और मैं उनका सेवक हूँ। जब भी मेरी आवश्यकता हो, उनकी सेवा के लिए मुझे अवश्य बुलाना; मैं आपकी सेवा में तुरंत उपस्थित हो जाऊँगा।'

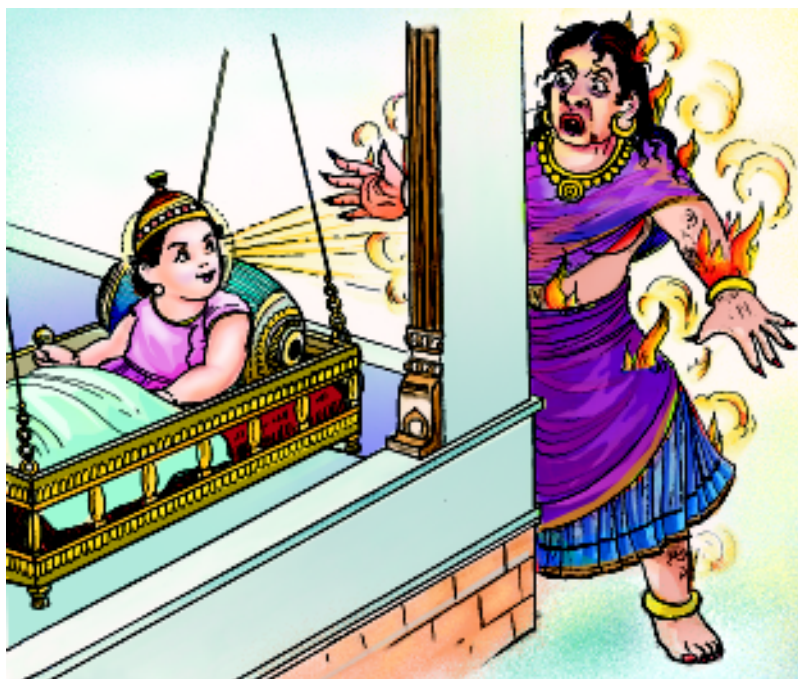
हनुमानजी प्रणाम करके तुरन्त अदृश्य हो गए। भक्तिमाता, बालप्रभु को लाड़-प्यार के सरोवर में नहलाने लगी।

डायन स्त्रियों ने सारी घटना कालिदत्त को सुनाई और कहा कि 'हम बालप्रभु को परेशान करने के लिए अब कभी छपिया नहीं जाएँगीं, क्योंकि उनके सेवक हनुमानजी ने हमें मार-मारकर ढेर कर दिया था।'

यह सुनते ही कालिदत्त का क्रोध भड़क उठा। उसने तुरन्त राक्षसी के समान दिखनेवाली सबसे बड़ी डायन 'कोटरा' को बालप्रभु की हत्या के लिए पुनः भेजा।

कोटरा नामकी डायन पुनः लुक-छिपकर आई और धर्मदेवजी के घर





के उस भाग में कहीं छिप गई, जहाँ बालप्रभु पालने में खेल रहे थे। वह प्रतीक्षा करने लगी कि घनश्याम कब अकेले हों। घनश्याम को अंतर्धामी रूप से कोटरा की प्रत्येक हरकतों का पता चल गया था। उन्होंने अचानक तिरछी नज़र से कोटरा की ओर देखा और तुरन्त उस डायन स्त्री का शरीर जलने लगा।

वह चीखने-चिल्लाने लगी 'अरे कोई मुझे बचाओ, मैं जल रही हूँ, मर रही हूँ।' उसके पैर काँपने लगे। वह उसी पल लड़खड़ाकर ज़मीन पर गिर पड़ी और उसके प्राण निकल गए। पहाड़-सी भयंकर कोटरा को भगवान ने मौत की नींद सुला दिया।

डायन कोटरा को देखकर सारे गाँव के बच्चे डर के मारे न जाने कहाँ जाकर छिप गए थे, परंतु अन्य लोग बालप्रभु के इस पराक्रम से आश्चर्यचकित होकर बार-बार वंदना करने लगे। अब धर्मदेव और भक्तिमाता भी भय से मुक्त हुए। उन्होंने बालप्रभु को भीतर के कमरे में छोटे-से पालने में ले जाकर सुला दिया।



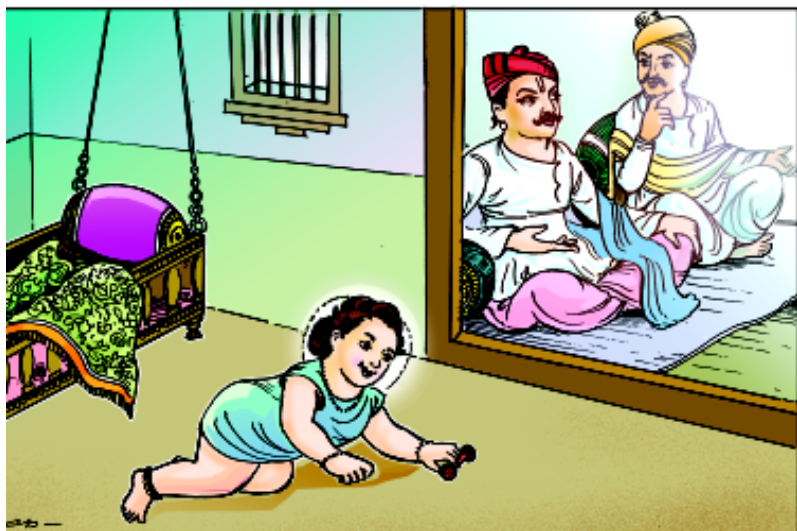
### 3. रामदयाल को दर्शन

बालप्रभु घनश्याम जब ढाई मास के हुए तब माता-पिता को उनकी विलक्षणता का विशिष्ट दर्शन हुआ।

उस दिन भक्तिमाता प्रभु को पालने में सुलाकर रसोईघर में गई। उनके जाते ही प्रभु पालने में उठ बैठे। उन्होंने दूर से एक खिलौना देख लिया। वे स्वयं उस खिलौने को लेने के लिए पालने से उतरकर घुटनों के बल चलने लगे।

यह देखकर धर्मदेव के मित्र रामदयाल ने पूछा, 'धर्मदेवजी! आपके पुत्र की उम्र क्या है?' 'रामदयालजी! बस अभी कोई ढाई मास का ही हुआ है।' 'क्या बात करते हो धर्मदेवजी!' रामदयाल विस्मय से सोचने लगे कि संभव है यह ईश्वर के अवतार ही होंगे। अन्यथा इतनी छोटी सी उम्र में इतनी चतुराई कैसे आ सकती है?

वे पालने के पास जाकर बालप्रभु का दर्शन करने लगे। देखा तो प्रभु के शरीर से एक विशिष्ट प्रकार का प्रकाश-पुंज निकल रहा था, जिसके कारण धीरे-धीरे सारा कमरा दिव्य तेज से भर गया। रामदयाल आश्चर्यचकित होकर श्रीहरि के चरणों में बार-बार प्रणाम करने लगे।



#### 4. प्रभु का नामकरण

जब बालप्रभु की उम्र तीन मास की हुई, तो एक दिन मुनिवर्य मार्कण्डेय ऋषि धर्मदेवजी के घर पधारे। पूरे परिवार ने उनका भावपूर्ण स्वागत किया। सुन्दर आसन देकर उनको बिराजमान किए तथा विधिपूर्वक पूजा की। तत्पश्चात् धर्मदेवजी ने प्रणाम करते हुए कहा, 'महात्मन्, मैं जानता हूँ कि आप बहुत बड़े ज्योतिषी हैं, कृपया मेरे इस प्यारे पुत्र का नामकरण करके, उसका भविष्य बतलाकर मुझे धन्यभागी करें।'

मार्कण्डेय मुनि ने बालक को देखकर अपना पंचांग खोला, उँगली पर गिनती की और हँसते हुए कहने लगे कि 'धर्मदेव मैं आपके पुत्र के विषय में क्या-क्या बताऊँ। यह कोई सामान्य बालक नहीं है। यह तो स्वयं ईश्वर का अवतार है। कर्क राशि में जन्म होने के कारण उसका नाम 'हरि' रहेगा, उसके शरीर का वर्ण श्याम होने के कारण लोग उसे 'कृष्ण' भी कहेंगे, इन दोनों नामों को मिलाकर वे 'हरिकृष्ण' भी कहलाएँगे। फिलहाल आप उसे 'घनश्याम' कहकर बुलाइए। आपका पुत्र तप, त्याग, योग, धर्म, नीति, सत्य, विवेक आदि अनेक सद्गुणों से परिपूर्ण हैं, इसलिए यह 'नीलकण्ठ' नाम से



भी प्रसिद्ध होगा। यह पृथ्वी पर एकांतिक धर्म की स्थापना करेगा तथा अनेक लोगों के दुःखों का नाश करेगा। देश और विदेशों में चारों ओर उसकी कीर्ति प्रसारित होगी। समाधि लगवाकर वह साधारण मुमुक्षुओं का भी उद्धार करेगा तथा भगवान का नाम-स्मरण एवं भक्ति कराकर यह हर किसी को ब्रह्म के आनंद में सराबोर करेगा।'

यह सुनकर धर्मदेवजी आनन्दविभोर हो गए। उन्होंने मुनि को सुंदर वस्त्राभूषण, गौएँ, सुवर्णमुद्राएँ आदि की दक्षिणा से प्रसन्न किया।

## 5. पुत्र की परीक्षा

एक दिन धर्मदेवजी ने सोचा कि आज तो मुझे अपने बच्चे की परीक्षा लेनी ही है। उन्होंने अपने मन की बात भक्तिमाता से कही। दोनों ने मिलकर एक चौकी पर सुंदर रेशमी वस्त्र बिछा दिया। उस पर एक स्वर्णमुद्रा, एक धर्मग्रंथ तथा एक छोटी-सी तलवार रख दी। वे दोनों दूर कोने में बैठकर देखने लगे कि इन तीनों चीजों में से घनश्याम क्या उठाएगा?

थोड़ी ही देर में घनश्याम घुटनों के बल वहाँ आ पहुँचे और एक पल का भी विलंब किए बिना तुरन्त धर्मग्रंथ उठा लिया। यह देखकर धर्मदेवजी और भक्तिमाता विस्मित हो गए। मन ही मन दोनों ने सोच लिया कि निश्चित ही हमारा यह पुत्र पढ़-लिखकर बहुत बड़ा विद्वान बनेगा।





## 6. कर्ण वेध संस्कार

अब बालक घनश्याम सात मास के हो गए थे। एक दिन भक्तिमाता ने सोचा कि अब हमें घनश्याम के दोनों कान बंधकर आभूषण पहनाने चाहिए।

उन्होंने तुरंत अपने गाँव के नाई को बुलाया, जो बहुत हल्के हाथों से बच्चों के कान बेधने की कला में प्रवीण था। भक्तिमाता बड़े प्यार से घनश्याम को लेकर घर के आंगन में आ पहुँची। ठीक सामने एक बड़ा इमली का पेड़ था, उसके नीचे एक छोटे-से चबूतरे पर बैठकर उन्होंने बाल घनश्याम को अपनी गोद में बिठाया। जैसे ही कान बेधनेवाला नाई अपने हाथ में सूई तथा अपनी अन्य सामग्री लेकर घनश्याम के पास पहुँचा, उसी पल घनश्याम के शरीर से प्रकाश-पुंज निकलने लगा। नाई चौंककर इधर-उधर देखने लगा परंतु उसकी तो आँखें ही चौंधिया गई थी। उसने जहाँ भी देखा सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश फैला हुआ दिखाई देता था! भयभीत होकर वह चिल्लाने लगा!

तुरन्त घनश्याम ने अपना तेज अपने शरीर में समेट लिया और अपनी माता की गोद से वे अदृश्य हो गए! माता व्याकुल होकर इधर-उधर देखने लगी कि बेटा कहाँ चला गया। उसी समय घनश्याम इमली की ऊँची डाली पर बैठे हुए दिखाई दिए।



भक्तिमाता सोचने लगीं कि बेटे को नीचे बुलाने के लिए अब और कोई उपाय नहीं है। उन्होंने तुरंत रामप्रतापभाई को पुकारते हुए कहा कि 'बेटा, देखो यह तुम्हारा भाई, इमली के पेड़ पर चढ़ बैठा है, तुम्हें उसे अभी उतारना पड़ेगा।'

रामप्रतापभाई झट से पेड़ पर चढ़ने लगे और जब वे ऊपर पहुँचे तो घनश्याम नीचे आ चुके थे! रामप्रतापभाई ने घनश्याम को जब भक्तिमाता की गोद में देखा तो वे विस्मित हो गए। उन्होंने फिर एकबार ऊँची डाली की ओर देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना ही नहीं रहा। क्योंकि वहाँ भी घनश्याम दूसरे रूप में इमली के पेड़ पर दिखाई दे रहे थे!

रामप्रतापजी बहुत देर तक घनश्याम के दो स्वरूपों का दर्शन करते रहे। बेचारा कान बींधनेवाला नाई कुछ भी बोलने-समझने में सक्षम न था।

अगले ही क्षण घनश्याम ने इमली की डाली पर बैठा हुआ अपना स्वरूप अदृश्य कर दिया और कहने लगे कि 'माँ, मुझे तो अब गुड़ खाना है।' माँ उनको समझाने लगीं, 'बेटा, कान बिंधवाकर तब खाना।' परंतु घनश्याम एक से दो नहीं हुए। उन्होंने जब अपना हठ नहीं छोड़ा, तब प्रेमवश अपने पुत्र को प्रसन्न करने के लिए भक्तिमाता अंगूर लेकर आ पहुँचीं और कहा, 'यदि शांतिपूर्वक बैठकर कान बिंधवाओगे तो खाने के लिए गुड़ मिलेगा।' इतना कहकर घनश्याम को गुड़ दिया। वे माता की गोद में बैठकर गुड़ खाते रहे और नाई कान बींधकर बालप्रभु को प्रणाम करके चला गया।

## 7. लक्ष्मीजी को वरदान

घनश्याम अब धीरे-धीरे चलना सीख रहे थे। एक दिन सुबह भक्तिमाता की उँगली थामकर घनश्याम घर के आँगन में आ पहुँचे।

उसी समय लक्ष्मीजी तथा कुछ देवियाँ आकाशमार्ग से कहीं जा रही थीं। अचानक लक्ष्मीजी ने घनश्याम को देखा तो साथ की देवी से कहने लगीं, 'देवी, तुम इसी समय पक्षी का रूप धारण करके घनश्याम के घर में आँगन के दरवाजे के पास बैठो। जब घनश्याम तुम्हें पकड़ने के लिए आएँ, तो उड़कर दूसरे स्थान पर बैठ जाना। भले ही घनश्याम थक जाएँ, तुम कभी उसकी पकड़ में मत आना।'



वह देवी उसी क्षण घनश्याम के घर जा पहुँची और लक्ष्मीजी अदृश्य होकर घनश्याम की लीला देखने लगीं।

लक्ष्मीजी की सखी ने चिड़िया का रूप लेकर आँगन में दरवाजे के पास बैठकर चहकने लगी। घनश्याम ने उसे देखकर पलभर में अपना हाथ इतना बढ़ाया कि वह उनकी मुठ्ठी में बन्द हो गई। बहुत प्रयत्न करने पर भी वह घनश्याम की पकड़ से छूट नहीं पाई। चिड़िया 'चीं चीं चीं' करके चिल्लाती रही। अब भगवान की परीक्षा लेने के लिए उसके मन में पछतावा होने लगा।

भक्तिमाता ने घनश्याम के हाथों में 'चीं... चीं...' करती हुई चिड़ियाँ को देखा तो घबराकर पुकारने लगीं, 'अरे, घनश्याम, छोड़ दो उसे!' वह डर रही थी कि कहीं चिड़ियाँ की चोंच से घनश्याम के हाथों में खून न निकल आए! आखिर उन्होंने घनश्याम के हाथ से चिड़िया को मुक्ति दिलवाई। जैसे ही घनश्याम ने उसे छोड़ा कि वहाँ चिड़िया के स्थान पर एक सुन्दर स्त्री खड़ी दिखाई दी!

उसने प्रणाम करते हुए घनश्याम से कहा, 'प्रभु, मैं लक्ष्मीजी की सहेली हूँ, उन्हीं के कहने से मैं चिड़िया का धारण करके लेकर आपके पास आई थी। घबराहट में मेरी चोंच आपको कहीं चुभ तो नहीं गई? अपराध के लिए मुझे क्षमा करें प्रभु!' देवी की प्रार्थना सुनकर बालप्रभु ने उसे आशीर्वाद दिया। अचानक उसी क्षण लक्ष्मीजी भी वहाँ प्रकट हुईं। घनश्याम को प्रणाम करके उन्होंने कहा, 'प्रभु, कृपया मुझे अपनी सेवा का अवसर दीजिए।'

घनश्याम ने उनको वचन दिया कि 'मैं जब सौराष्ट्र में (गुजरात का एक इलाका) आऊँगा तब तुम भी वहाँ उपस्थित होना। मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण करूँगा।' लक्ष्मीजी यह सुनकर अति प्रसन्न हुईं। घनश्याम से आशीर्वाद प्राप्त कर वह अपनी सखी के साथ मुस्कुराती हुई अदृश्य हो गईं।

## 8. सिद्धियाँ प्रभु की सेवा में

घनश्याम की मामी का नाम लक्ष्मीबाई था। एक दिन प्रातः लक्ष्मीबाई ने भक्तिमाता से पूछा, 'आज की रसोई में क्या बनाएँ?' भक्तिमाता ने कहा, 'आज रसोई की इतनी जल्दी नहीं है, सब कामों से निपटाकर आप केवल हलवा बना देना।' लक्ष्मीबाई अपना अन्य काम निपटाने लगीं। फिर रसोई का आरंभ किया।

परंतु भोजन की तैयारी में इतनी देर लगी कि भक्तिमाता भूख से व्याकुल होने लगीं। अचानक घनश्याम को इस बात का पता चल गया। उन्होंने मन ही मन आठ सिद्धियों को भोजन लाने की आज्ञा कर दी। कुछ ही क्षणों में आठों सिद्धियाँ हाथों में थाल लिए हुए आकाश से धर्मदेव के घर उतर आयीं।

इतनी स्वरूपवती देवियों को रंग-बिरंगे वस्त्रों में देखकर भक्तिमाता दिग्मूढ़ हो गईं। सिद्धियों ने थाल रखकर प्रणाम करते हुए विनयपूर्वक कहा,

‘माताजी! हम अष्ट सिद्धियाँ हैं, आप भूख से व्याकुल हो रही हैं, यह जानकर बालप्रभु ने हमें भोजन लेकर उपस्थित होने की आज्ञा दी थी। इसीलिए हम भाँति-भाँति के मिष्ठान्न-पकवान लेकर उपस्थित हुई हैं, कृपया आप भोजन स्वीकार करें।’

भक्तिमाता अभी तक विस्मय और संकोच में पड़ी हुई थी। उसी समय बालप्रभु झूले से उतरकर वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने एक थाल से थोड़ा सा भोजन स्वीकार किया फिर माताजी से कहा, ‘माँ, आप भी भोजन कीजिए।’ भक्तिमाता ने प्रभु को गोद में बिठाकर देवियों की सेवा स्वीकार की।

भक्तिमाता अभी भोजन करके निवृत्त ही हुई थीं कि उसी समय



लक्ष्मीबाई गरम हलवा लेकर वहाँ आ पहुँचीं। वहाँ का दृश्य ही अद्भुत था! आठ सिद्धियों को भोजन का थाल लिए देखकर वे आश्चर्यचकित रह गईं।

सिद्धियों ने कहा, 'माताजी! हम आपके लिए प्रतिदिन भोजन लाऊँगी।' यह सुनकर बालप्रभु ने कहा, 'प्रतिदिन नहीं, जिस दिन मामीजी को भोजन तैयार करने में बिलम्ब हो, उसी दिन लाया कीजिए।' घनश्याम के आदेश को स्वीकार कर प्रत्येक सिद्धि भगवान का चरणस्पर्श करके अन्तर्धान हो गईं।

## 9. खिचड़ी के बदले खीर

एक दिन बालप्रभु घनश्याम ने अपनी माताजी से कहा, 'माँ, आज तो मुझे बहुत भूख लगी है।' माता ने दोपहर की ठण्डी खिचड़ी घनश्याम के पास रखी और कहा, 'बेटा, यह खिचड़ी खाओ... तब तक मैं दूध लेकर आती हूँ।' इतना कहकर वे अपनी गोशाला में जा पहुँचीं।

उनके पास गोमती नामक एक बहुत प्यारी सी गाय थी। वह सुबह-शाम दो समय दूध दिया करती थी, परंतु आज दूध देने का समय बीत गया था। भक्तिमाता जब गाय दुहने लगीं, तो दूध का बूंद तक नहीं निकला। वह निराश होकर सोचने लगीं कि अब अपने लाड़ले को दूध कैसे पिलाऊँगी। उसी समय घनश्याम हाथ में गिलास लेकर गोशाला में आ पहुँचे। माँ ने कहा 'बेटा, दूध मिलने में अभी देर है, तुम जाकर खिचड़ी खा लो।'

'माँ, मुझे तो दूध के साथ ही खाना है।' इतना कहकर घनश्याम ने अपना गिलास गाय के थन के नीचे कर दिया। अचानक गाय के थन से दूध की धारा बहने लगी। कुछ ही पलों में गिलास भर गया। भक्तिमाता आश्चर्यचकित थीं। क्योंकि दूध की धारा रुकने का नाम नहीं लेती थी। वे घर में जाकर बड़ा बर्तन ले आईं। गाय के थन के नीचे रखते ही वह भी दूध से भर गया और दूध की धारा निरंतर जारी रही। माताजी पुनः एकबार घर से बड़ा बरतन ले आईं, वह भी भर गया। 'ऐसे तो घर के सारे के सारे बरतन दूध से ही भर जाएँगे।' उन्हें आश्चर्य मिश्रित कौतूहल हुआ!

घनश्याम ने कहा, 'माताजी ! घबड़ाएँ नहीं, आपको बरतन लाने की आवश्यकता अब नहीं रहेगी। दूध की यह धारा तो मेरी इच्छा से बहती थी,





अब मेरी इच्छा से वह बन्द भी हो जाएगी!’ परंतु भक्तिमाता को विश्वास न हुआ और वे दूसरा बरतन लेने घर में गई; वापस लौटों तो देखा कि दूध की धारा बन्द हो गई है! ऐसा चमत्कार देखकर वे विस्मित होकर सोचने लगीं, घनश्याम बड़ा प्रतापी पुत्र है।

भक्ति माँ ने सोचा कि जब इतना सारा दूध इकट्ठा हो गया है, तो क्यों न घनश्याम के लिए खीर ही बनाऊँ? उन्होंने घनश्याम से कहा, ‘बेटा, अब ठण्डी खिचड़ी मत खाना, मैं अभी खीर-पूड़ी की रसोई बनाए देती हूँ।’ इतना कहकर वे रसोई में लग गई और स्वादिष्ट खीर-पूड़ी की रसोई बनाकर उन्होंने अपने लाड़ले घनश्याम को भोजन करवाया।

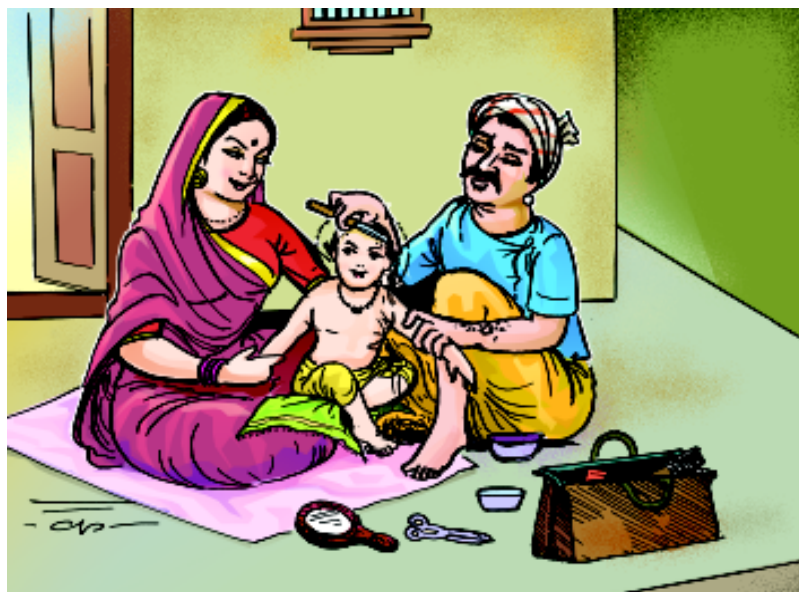
## 10. नाई को चमत्कार

बालक घनश्याम जब तीन वर्ष के हुए तो पं. धर्मदेवजी ने सोचा कि अब बेटे का मुंडन संस्कार करवाना चाहिए। उन्होंने अच्छा मुहूर्त देखकर अमई नाम के एक नाई को अपने घर बुलवाया। वह अपनी सामग्री लेकर उपस्थित हो गया।

भक्तिमाता, घनश्याम को गोद में लेकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ गई। अमई ने अपना उस्तरा उठाया और घनश्याम के बाल उतारने लगा। अभी आधा ही मुण्डन हुआ था कि घनश्याम एकाएक अदृश्य हो गए। अन्य लोग तो घनश्याम को माँ की गोद में बैठे देख रहे थे, परंतु अमई बेचारा उन्हें देख ही नहीं पा रहा था! घबड़ाहट के कारण उसका उस्तरा हाथ में वैसे ही स्थिर रह गया। माता ने कहा, 'भाई, अमई! यों चुपचाप क्यों बैठे हो? जल्दी मुण्डन पूरा करो!'

'लेकिन माई,' अमई ने काँपते हुए उत्तर दिया, 'मैं क्या करूँ, मुझे तो घनश्याम दिखाई ही नहीं देते हैं, उनका मुण्डन कैसे करूँ?'

यह सुनकर माता ने घनश्याम के कान में कहा, 'बेटा, आधा मुण्डन किया हुआ चेहरा अच्छा नहीं लगता, पूरा मुण्डन करवा लो और अमई को दर्शन दो।' घनश्याम ने अमई की ओर कृपादृष्टि की, तो वे पुनः उसे दिखाई देने लगे। अमई विस्मित होकर पुनः अपना काम करने लगा। वह समझ गया कि वास्तव में यह कोई साधारण बालक नहीं है। लगता है ये कोई देव अथवा स्वयं भगवान ही हैं। उसने घनश्याम का चरणस्पर्श किया और आशीर्वाद लेकर अपने घर चला गया।





घनश्याम नारायण सरोवर में स्नान करके धर्मपिता के साथ ब्राह्मणों को दान देने लगे। पिता ने आज सभी को बताशे बाँटे और ब्रह्मभोज की व्यवस्था में लग गए।

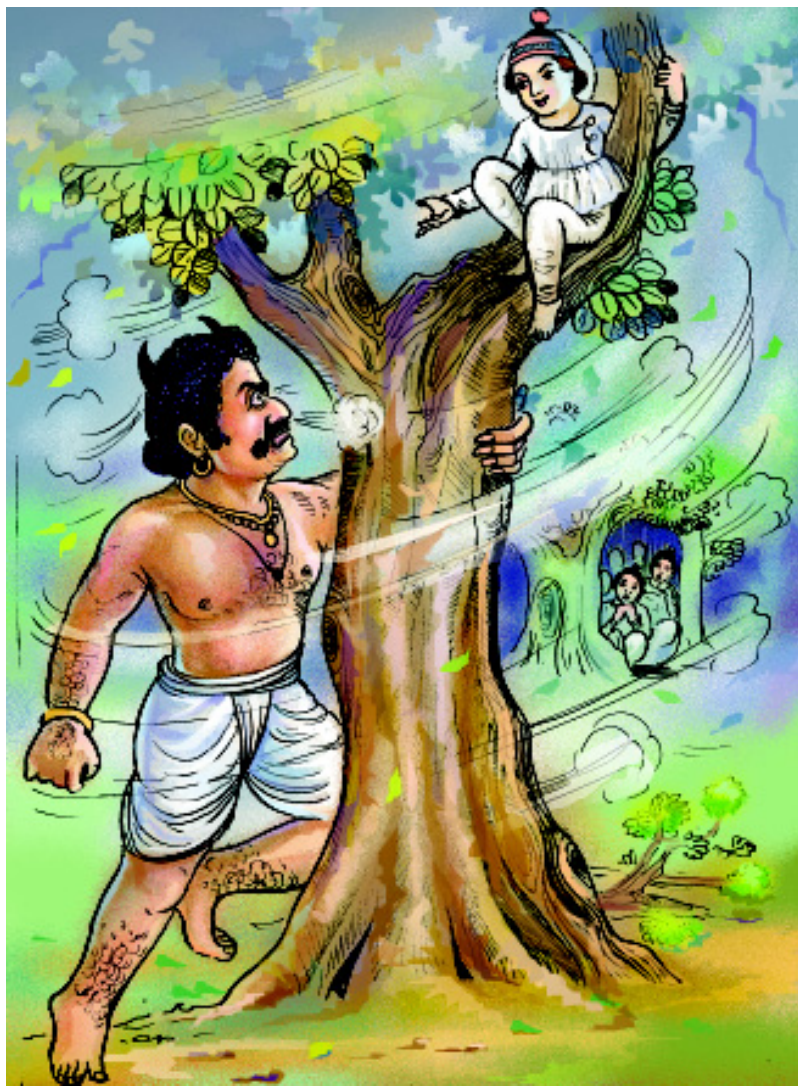
## 11. कालिदत्त मृत्यु की शरण में

पं. धर्मदेवजी तथा भक्तिमाता जब ब्रह्मभोज की व्यवस्था में लगे हुए थे, उसी दौरान घनश्याम ने अपने बालमित्रों को बुलाकर कहा, 'चलो! हम सभी लोग नारायण सरोवर के पास आम के वन में खेलने के लिए चलें।'

सभी नाचते-कूदते घनश्याम के साथ नारायण सरोवर के पूर्व में स्थित आम के विशाल वन में जा पहुँचे। वहाँ सभी पेड़ों पर चढ़कर इमली-पीपली आदि खेल खेलने लगे। अचानक वहाँ राक्षसी वृत्ति का तांत्रिक कालिदत्त आ पहुँचा। यहाँ बच्चों के साथ घनश्याम को खेलते हुए देखकर उसका द्वेष भड़क उठा।

कालिदत्त, घनश्याम को पकड़ने के लिए आगे बढ़ा। घनश्याम समझ गए कि आज कालिदत्त छोड़नेवाला नहीं है। उन्होंने उसकी ओर ज्यों ही भृकुटि टेढ़ी की कि कालिदत्त के शरीर में आग जैसी जलन होने लगी। उसने भयंकर क्रोध के साथ अपनी तंत्रविद्या से विनाशक बवण्डर पैदा कर दिया। बरसात की बौछारें शुरू हो गई। चारों ओर घना अँधकार छा गया। कड़के की ठण्ड और भारी बरसात के कारण सभी बच्चे थर-थर काँपने लगे। कालिदत्त की चीत्कार से पूरा उपवन भयानक खंडहर में बदल गया। बच्चे डर के मारे विशाल वटवृक्ष के बड़े खोखले में छिप गए।

घनश्याम एक आमके पेड़ पर जाकर बैठे थे। कालिदत्त चिल्लाता हुआ घनश्याम को खोजने लगा। जब उसने देखा कि घनश्याम आम की डाली पर बैठे हैं, उसने अपना शरीर आकाश तक फैलाया और कूदकर उस आम के पेड़ पर पड़ा। एक भयंकर आवाज़ हुई, पेड़ की शाखाएँ टूटकर दूर तक बिखर गईं। उसने अट्टहास किया और सोचा कि अब घनश्याम अवश्य वृक्ष के नीचे कुचल गए होंगे। वह टूटी हुई शाखाओं को टटोलकर घनश्याम की मृतदेह की खोज करने लगा, परंतु घनश्याम वहाँ नहीं थे! वे तो उसी डाली पर थे, जहाँ पहले बैठे हुए थे। कालिदत्त की



छटपटाहट देखकर बालप्रभु मंद-मंद स्मित करने लगे। कालिदत्त ने यह देखा तो आगबबूला होकर उसने फिर एकबार हमला बोल दिया। परंतु प्रभु ने इस तांत्रिक की ओर तीव्र दृष्टिपात किया कि वह देखते ही देखते उसी पेड़ के साथ अपने आप टकराने लगा। कुछ ही देर में सिर पटक-पटककर वह उसी स्थान पर ढेर हो गया। उसके मरते ही उपवन की आँधी शान्त हो

गई, बरसात थम गई, चारों ओर उजाला फैल गया। घनश्याम पेड़ से नीचे उतरकर अपने साथियों को पुकारने लगे।

उस ओर भक्तिमाता को घनश्याम का स्मरण हुआ। वे तो कहीं नहीं मिल रहे थे। चिंतित होकर उन्होंने धर्मदेव तथा परिवारजनों को इसकी सूचना दी। सभी लोग बच्चों को खोजते हुए गाँव के बाहर अमराई के उपवन में आ पहुँचे। यहाँ चारों ओर विनाशकारी तांडव देखकर धर्मदेव सब कुछ समझ गए। माता ने गद्गदभाव से घनश्याम को हृदय से लगा लिया। घनश्याम के मिल जाने से सभी बहुत प्रसन्न थे। कालिदत्त के शव को देखकर सभी विस्मित होकर कहने लगे, कालिदत्त को अपने किए हुए कर्म का फल मिल गया है।

## 12. ठण्डे जल से चेचक की बीमारी गई

ग्रीष्मऋतु की गर्मी असह्य हो जाती है। ऐसी ही गर्मी के दिनों में घनश्याम को तेज बुखार आया। वे घर में ही रहते थे। कुछ दिनों तक उन्होंने भोजन भी नहीं किया था। यह खबर मिलते ही चंदा मौसी उनकी तबियत की खबर लेने घनश्याम के घर आ पहुँची। उन्होंने घनश्याम के शरीर पर हाथ फेरा तो पता चला कि उनको तो चेचक की बीमारी हो गई है, इसीलिए बुखार भी उतरने का नाम नहीं लेता। उन्होंने भक्तिमाता से कहा, 'बहन, घनश्याम को चेचक निकली हैं, इसीलिए भीतरवाले कमरे में सुला दो।'

भक्तिमाता घनश्याम को सुलाकर भगवान के चरणों में प्रार्थना करने लगीं। कुछ देर के बाद घनश्याम की मामी लक्ष्मीबाई ने आकर देखा तो घनश्याम का बुखार तेज हो गया था। चेचक के कारण बालप्रभु का सुंदर मुख निस्तेज दिख रहा था। उन्होंने कहा, 'देवी, अब बीस दिन तक घनश्याम को घर से बाहर नहीं जाने देना और स्नान भी नहीं करवाना, पानी के स्पर्श से चेचक और भी बढ़ जाते हैं।'

घनश्याम अपने बिछौने पर पड़े हुए सब कुछ सुन रहे थे। उन्होंने कहा, 'मामी, बिना नहाये कैसे चलेगा? हम तो ब्राह्मण हैं, हमें तो हर रोज संध्या वंदन करना चाहिए। स्नान के बिना संध्या वंदन कैसे होगा। आप ठण्डा जल ले आइए, मैं इसी समय स्नान करूँगा। मेरे चेचक भी मिट



जाएँगे और बुखार भी उतर जाएगा।’

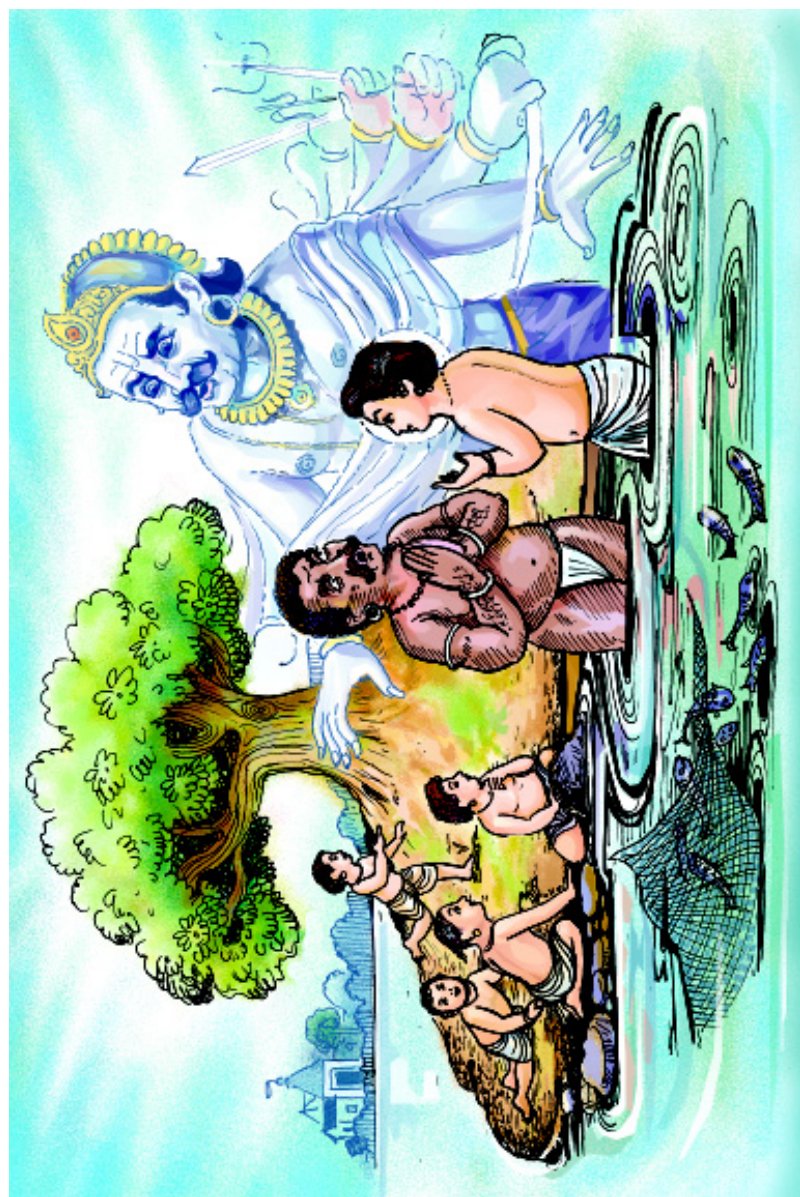
भक्तिमाता बालप्रभु के वचन पर विश्वास करती थीं। उन्होंने कुएँ से जल निकाला और बालप्रभु को नहलाने लगीं। मामी ना कहती रहीं और बालप्रभु स्नान करते रहे। पानी के कुछ घड़े घनश्याम के शरीर पर पड़ते ही उनके शरीर पर उमड़े चेचक के दाने मिट गए और बुखार भी उतर गया! अब मुखारविंद पर चेचक के कुछ धुँधले दाग बच गए थे। घनश्याम की यह लीला देखकर चन्दा मौसी और लक्ष्मीबाई को लगा कि ‘निश्चित रूप से यह बालक स्वयं भगवान ही हैं।’ वे उनको प्रणाम करके प्रफुल्लित होकर अपने घर चली गईं।

### 13. मछलियों को जीवित किया

एक दिन घनश्याम ने अपने बालमित्र - वेणी, माधव और प्राग को बुलाकर कहा, ‘चलो! आज हम मीन सरोवर में स्नान करने चलें।’

घनश्याम के कहने पर वे सभी तैयार हो गए, और मीन सरोवर जा पहुँचे। सरोवर के किनारे पर एक वटवृक्ष था, उसके नीचे सभी ने अपने-अपने कपड़े बदले। अचानक घनश्याम की दृष्टि एक मछुआरे पर पड़ी। काले वर्ण का लम्बा-चौड़ा शरीरवाला वह मछुआरा खड़े-खड़े मछलियाँ पकड़ रहा था





और टोकरियों में रखता जाता था। छटपटाती मछलियों को देखकर घनश्याम का हृदय द्रवित हो गया। उन्होंने मछलियों की ओर करुणाभरी दृष्टि से देखा। सभी मछलियाँ जीवित हो, कूद-कूदकर तालाब के पानी में चली गईं।

यह देखकर मछुआरा आग-बबूला हो उठा। इधर-उधर देखने लगा कि यह कैसे संभव हुआ! घनश्याम पर दृष्टि पड़ते ही उसने सोचा कि इसी ने मेरी मछलियों को जिंदा किया है। वह घनश्याम प्रभु को पीटने के लिए आगे बढ़ा तो उन्होंने सोचा कि इस अभिमानी का घमंड तोड़ना चाहिए और हिंसा करनेवाले को उसके पापों का दण्ड अवश्य मिलना चाहिए। उन्होंने तुरंत यमराज का रूप धारण किया। यह देखते ही मछुआरा भय के मारे काँपने लगा।

बड़ी-बड़ी मूँछें, बड़े-बड़े दाँत, लाल सुर्ख आँखें, लम्बी और लाल जीभ तथा अठारह हाथों में तलवार, भाला, त्रिशूल आदि भयंकर शस्त्रास्त्र लिए हुए यमराज का भयावह रूप देखकर मछुआरा भय और पसीने से लथपथ हो गया। यमराज ने उसको यमपुरी और नरक के भयानक दुःखों का दर्शन करवाया। यमदूतों ने उसकी इतनी पिटाई की कि वह मार खा-खाकर ढेर हो गया। उसकी हड्डी-पसली टूट गई और वह 'बचाओ, बचाओ' की पुकार लगाने लगा। अन्त में उसे अपनी भूल समझ में आ गई।

घनश्याम से क्षमायाचना करते हुए वह कहने लगा, 'मेरी हड्डी-पसली टूट गई है। यमपुरी और नरक का स्मरण आते ही मैं डर के मारे काँपने लगता हूँ। मुझसे भारी भूल हुई, कृपा कर मुझे क्षमा कीजिए। आज से मछली मारने जैसा महापाप कभी नहीं करूँगा। हे प्रभु, आप स्वयं भगवान हैं, आप मेरे पाप नष्ट कर दीजिए।'

इतना कहकर वह घनश्याम के चरणों में गिर पड़ा। घनश्याम ने उसे हिंसा छोड़ने का तथा शाकाहारी रहने का आशीर्वाद देकर उसे बिदा किया और स्वयं बालमित्रों के साथ स्नान करके घर की चल निकले।

## 14. चिड़ियों को समाधि

एक दिन भक्तिमाता ने घनश्याम से कहा, 'बेटा! हमारे खेत में धान की फ़सल तैयार हो गई है। परंतु पंछी आकर पूरी फ़सल बरबाद कर रहे



हैं। आज तुम्हें फ़सल की रखवाली करने खेत पर जाना पड़ेगा।’

‘परंतु माँ, खेत पर तो बड़े भैया और पिताजी जाते हैं।’

‘वे दोनों आज कुछ काम के लिए दूसरे गाँव जानेवाले हैं, इसलिए तुम्हें खेत पर जाना होगा।’

‘ठीक है, मैं ही चला जाता हूँ।’ घनश्याम ने माता की आज्ञा सिर-माथे चढ़ाया। भक्तिमाता ने उनके सिर पर टोपी, पैरों में मखमल की सुन्दर जूती पहनाकर, हाथ में लाठी देकर कहा, ‘जाओ, बेटे, शाम तक वहीं रहना।’

घनश्याम थोड़ी ही देर में खेत पर पहुँच गए। वहाँ जामुन के पेड़ पर चढ़कर उन्होंने खेत की ओर देखा तो हज़ारों चिड़ियाँ उगी हुई फ़सल की बालियों पर बैठकर तैयार हुए दाने चुग रही थीं। बहुत सी तो ज़मीन पर बैठकर दाने चुग रही थीं। घनश्याम ने सोचा कि वाह, राम की चिड़ियाँ, राम का खेत। लेकिन ऐसा कुछ करूँ कि फ़सल भी बच जाए और इन्हें उड़ाना भी न पड़े! समग्र खेत पर दृष्टि घुमाकर उन्होंने जोर की पुकार लगाई। उसी पल सारी चिड़ियाँ समाधिस्थ होकर बालियों से भूमि पर गिर गईं। कुछ बालियों पर ही स्थिर रह गईं, कुछ ज़मीन पर ही शान्त हो गईं। सभी चिड़ियों को समाधिस्थ करके वे समीप में ही माधवराम शुक्ल के खेत में खेलने के लिए चले गए।

वहाँ रघुवीर, बकूसराम आदि बालमित्रों के साथ खेलते हुए उन्हें शाम

हो गई। धर्मदेव और रामप्रतापभाई संध्या के समय उन्हें घर लिवाने के लिए खेत पर आए तो पता चला कि घनश्याम तो वहाँ नहीं हैं! वे बगल के खेत में खेल रहे हैं!

धर्मदेवजी ने उन्हें बुलाकर पूछा, 'तुम्हें माँ ने यहाँ भेजते समय क्या कहा था? यहाँ फ़सल की देखभाल करने के बदले तुम खेलने क्यों चले गए!' 'लेकिन पिताजी, फ़सल की रखवाली तो मैंने की थी।'

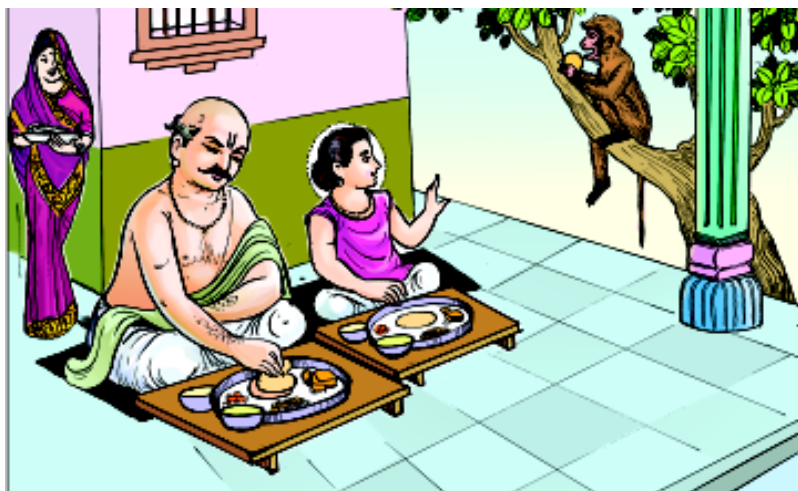
'वह कैसे?' पिताजी ने पूछा तो घनश्याम ने कहा, 'चलिए, आपको दिखलाता हूँ।' वे दोनों को लेकर खेत में आए, तो वहाँ का दृश्य देखकर दोनों अवाक रह गए! बहुत सी चिड़ियाँ ज़मीन पर पड़ी थीं, कुछ पेड़ पर ही शान्त होकर बैठी थीं, धान की बालियाँ हिलती-डुलती तक न थीं। बहुत सी पक्षियों की चोंच में दाना स्थिर हो चिपका हुआ-सा था! कई के मुँह में दाना ज्यों का त्यों रह गया था। धर्मदेवजी चिंतित हो गए कि 'इतनी सारी चिड़ियाँ मर तो नहीं गई?' तभी अचानक घनश्याम ने पुकार लगाई और सारी चिड़ियाँ 'फरररर..' करती हुई आकाश में उड़ गईं। दोनों को विश्वास हो गया कि घनश्याम वास्तव में परब्रह्म हैं। यह सब कुछ उनकी लीला ही है। प्राणीमात्र का जीवन उन्हीं के हाथों में है, ऐसा सोचते हुए वे घनश्याम को लेकर घर की ओर चल दिए।

## 15. बन्दर को समाधि

छपिया गाँव में आसुरीवृत्ति के दुष्ट और आततायी लोग घनश्याम के परिवार को बहुत पीड़ा देते थे। उनसे त्रस्त होकर धर्मदेवजी ने छपिया छोड़कर परिवार के साथ अयोध्या में निवास करने का निश्चय किया। एक दिन वे एक खूबसूरत बैलगाड़ी में घर का सामान लेकर अयोध्या के लिए रवाना हुए। बैलगाड़ी सरयू नदी के किनारे पर रुकी। सारा सामान नाव में रखवाकर वे सरयू के उस पार पहुँचे। अयोध्या नगरी के बरहट्टा मुहल्ले में एक सुन्दर मकान लेकर वे वहाँ रहने लगे।<sup>1</sup>

1. अयोध्या में निवास करते हुए वे कभी-कभी छपिया जाते। अब पुस्तक में जहाँ-जहाँ छपिया की लीलाओं का जिक्र हो, तब यह समझना कि घनश्याम अयोध्या से छपिया पधारे थे।





अयोध्या में इतने बंदर थे कि जब भी घनश्याम अपने पिताजी के साथ भोजन करने बैठते और भक्तिमाता भोजन परोसने आतीं, तो बन्दर रसोई में घुसकर रोटियाँ उठा ले जाते थे। एक दिन पिता-पुत्र भोजन के लिए बैठे थे। माता ने जैसे ही रोटियाँ इन दोनों के सामने रखी कि तुरंत घर के चौक में पड़नेवाले पेड़ से एक बन्दर हुप्.... हुप्.... करता हुआ घर के बरामदे में आ पहुँचा। अभी कोई कुछ समझे कि वह तेजी से झपटा और लगभग बीस रोटियाँ उठाकर छलांग लगाता पेड़ पर जा बैठा। घनश्याम ने उसकी ओर देखा, तो उस बन्दर को तुरंत समाधि लग गई। रोटियाँ वैसे की वैसे ही, उसके हाथ में धरी रह गईं। इसे देखकर धर्मदेवजी आश्चर्य में पड़ गये! तीन दिनों तक उस बंदर की ऐसी ही स्थिति रही।

बालप्रभु ने जब समाधि से जागृत किया तो बंदर कूदता हुआ घनश्याम के पास आ पहुँचा। प्रणाम की मुद्रा में घनश्याम के पास बैठ गया। घनश्याम ने उसे आशीर्वाद दिए। कुछ रोटी ओर मिठाईयाँ भी दी। इस प्रसादी को पाकर वह पुनः अपनी टोली में वापस चला गया।

## 16. बन्दरों की पिटाई

एक बार घनश्याम थाली में पूड़ी और दही लेकर बरामदे में भोजन कर रहे थे। अचानक एक शरारती बन्दर छलांग लगाकर वहाँ आ पहुँचा।



घनश्याम के हाथ से उसने पूड़ी झपट ली और इमली के पेड़ पर जा बैठा। घनश्याम ने वहाँ बैठे हुए इमली की उस शाखा तक अपना हाथ फैलाया और बंदर की गरदन पकड़कर उसे नीचे खींच लिया।

बन्दर जोरों से चिल्लाने लगा, उसकी आवाज़ सुनकर लगभग बीस बन्दर वहाँ आ पहुँचे। वे सभी चीखने-चिल्लाने लगे और घनश्याम से बदला लेने की सोचने लगे। धीरे-धीरे सभी ने मिलकर घनश्याम को घेर लिया। पिताश्री धर्मदेवजी ने यह देखा तो वे समझ गए कि ये बन्दर घनश्याम को जान से मार डालेंगे। वे लाठी लेने के लिए घर के भीतर दौड़े।

इधर बालप्रभु ने जितने बन्दर थे, उतने ही अपने रूप धारण किए। प्रत्येक बन्दर को पकड़ने के लिए घनश्याम का एक-एक स्वरूप उनके पीछे पड़ गया। घनश्याम के इतने स्वरूप देखकर सभी बन्दर घबड़ा गए। घनश्याम ने किसीको कान पकड़कर फेंका, किसीका पैर पकड़कर गिराया, किसीको पूँछ पकड़कर खींचा, किसीको गर्दन पकड़कर दे मारा।

यह देखकर सभी बन्दर 'चीं... चीं... चख... चख...' करते हुए दूर भाग निकले। घनश्याम ने तुरंत सभी रूपों को अदृश्य करके मूल रूप में आ गए। धर्मदेवजी लकड़ी लेकर जब घर से बाहर निकले तो कुछ ही पलों में मैदान साफ़ देखकर वे अचम्भे में पड़ गए।

## 17. रामदत्त को आम चखाया

एक दिन घनश्याम अपने बालमित्रों को लेकर स्नान के लिए सरोवर पर जा पहुँचे। सरोवर के पानी में सभी ने आँखमिचौनी का खेल खेला। इस तरह बड़ी देर तक जलक्रीडा करते हुए, सभी को जोरों की भूख लग गई।

स्नान के बाद वे सभी बालमित्रों को लेकर आम के बगीचे में जा पहुँचे। वहाँ पर सभी ने एक बड़ा भारी आम का पेड़ देखा। उस पर खूब पके हुए आम थे। घनश्याम तुरंत पेड़ पर चढ़ गए और नीचे रह गए बालकों के लिए वे ऊपर से पके आम नीचे गिराते जाते थे। वेणी, माधव और प्राग अपने गमछे में आम इकट्ठा करने लगे। दूसरे बच्चे आम के पेड़ की रखवाली करने लगे।

उसी दौरान उस रास्ते से ब्राह्मणों का एक संघ वहाँ से गुजरा। उस संघ का मुखिया रामदत्त बड़ा ऊँचा और तगड़ा आदमी था। उसने अपने साथी ब्राह्मणों से कहा, 'आप लोग ये सारे आम इकट्ठा कर लो।' यह सुनकर वेणी बोला, 'ये आम तो हमने गिराए हैं, ये हमारे हैं, यदि तुम्हें चाहिए तो तुम स्वयं ही तोड़ लो।'

वेणी की बात सुनकर रामदत्त क्रोधित हो उठा। वह आँखें लाल किए गरजने लगा और आम छीनने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। इसी बीच घनश्याम ने धीरे से पेड़ की नीचली डाली पर आकर रामदत्त के कन्धे पर लटक रही रस्सी और लोटा उठा लिया। रामदत्त ने चौंककर ऊपर की ओर देखा तो उसी क्षण घनश्याम रस्सी-लोटा लेकर पेड़ की चोटी पर पहुँच गए। रामदत्त क्रोधित हो उठा और घनश्याम को पकड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ गया। घनश्याम उसको एक डाली से दूसरी डाली पर दौड़ाते रहे, परंतु उस तगड़े ब्राह्मण की पकड़ में नहीं आए।

इसी आपाधापी में रामदत्त बहुत ऊँची डाल पर पहुँच गया, जहाँ से नीचे देखने पर उसे घबड़ाहट होती थी। उसने नीचे खड़े हुए ब्राह्मणों को पुकार लगाई, 'अरे, आप लोग खड़े-खड़े तमासा क्यों देख रहे हो? चढ़ो पेड़ पर। इस लड़के को हमें किसी भी हालत में अवश्य पकड़ना होगा।'

यह सुनकर सभी ब्राह्मण पेड़ पर चढ़ने लगे और सभी ने एक-एक डाली संभाल ली। परंतु घनश्याम चोटी की डाली पर बैठकर ब्राह्मणों की



विवशता और उनकी निराशा का आनन्द ले रहे थे। अब रामदत्त चोटी की डाली पर पहुँचने का प्रयत्न करने लगा। किसी तरह वहाँ पहुँचा तो घनश्याम वहाँ से अदृश्य होकर पेड़ के नीचे खड़े-खड़े रस्सी-लोटा दिखाकर रामदत्त को चिढ़ा रहे थे। अचानक घनश्याम ने कहा, 'मित्रों, एक भी ब्राह्मण को नीचे मत उतरने देना, आओ, इन्हें पत्थरों से मारें...।'

घनश्याम की आज्ञा होते ही सभी बच्चे मिलकर उद्दण्ड ब्राह्मणों पर

पत्थरों की बरसात करने लगे। ब्राह्मण हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते लगे। उन्हें अपनी भूलों पर पश्चात्ताप होने लगा कि मुफ्त का माल खाने की लालच में कहाँ आकर फँस गए? हराम का माल खानेवालों की भगवान ऐसी ही दुर्गति करते हैं! सबसे बड़ा विस्मय तो उन्हें यह हुआ कि चोटी की ऊँचाई पर बैठा यह बालक पल मात्र में नीचे कैसे दिख रहा है! 'निश्चित है - यह कोई सामान्य बालक नहीं; या तो वे स्वयं भगवान अथवा कोई दैवी अवतार हैं।' यह पवित्र विचार आते ही सभी ब्राह्मण, बालप्रभु घनश्याम से सहायता की प्रार्थना करने लगे; फलस्वरूप उन्होंने, सभी ब्राह्मणों को नीचे उतरने में सहायता की।

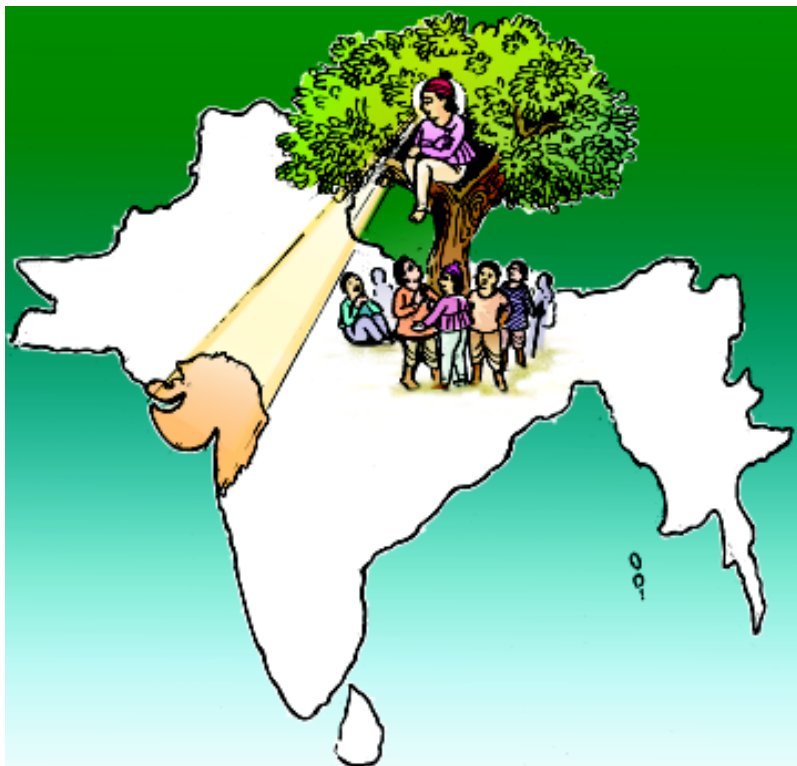
ब्राह्मणों ने विनम्र होकर बाल घनश्याम और सभी बालमित्रों से क्षमायाचना की। बालप्रभु को ब्राह्मणों पर दया आई और उन्होंने, उनके सामान वापस करने के साथ ही पके आम देकर सभी को जाने दिया। बाल्यकाल से ही वे अनीति और अन्याय का प्रतिरोध करने लगे थे।

## 18. मुमुक्षु किस दिशा की ओर ?

छपिया गाँव से कुछ ही दूरी पर एक पीपल का पेड़ था। घनश्याम को वह बहुत पसंद था। वे कई बार मित्रों के साथ खेलना छोड़कर उस पीपल के पेड़ पर चढ़कर न जाने कितनी देर तक पश्चिम दिशा की ओर दृष्टि किए बैठे रहते। घनश्याम की यह लीला किसी की समझ में नहीं आती थी।

एक दिन घनश्याम खेलकूद छोड़कर पूर्व की भाँति पीपल के पेड़ पर चढ़ गए और एक ऊँची डाली पर बैठकर गम्भीरतापूर्वक पश्चिम दिशा की ओर दृष्टि स्थिर कर ली। शाम ढल चुकी थी। मित्रों ने घनश्याम को नीचे उतरने के लिए पुकारा। जब वे नीचे उतरे, तब वेणी ने उनके कन्धे पर हाथ रखकर धीरे से पूछा, 'घनश्याम! तुम हमेशा पेड़ पर चढ़कर पश्चिम दिशा की ओर क्या देखते हो?'

'मैं वहाँ देखता रहता हूँ कि मुमुक्षु किस दिशा में हैं?' घनश्याम ने आगे कहा, 'यहाँ से हजारों कोस की दूरी पर पश्चिम भारत में गुजरात-सौराष्ट्र नाम का प्रदेश है। जहाँ श्रीकृष्ण की द्वारिका है, उस प्रदेश में भगवान से मिलने की भावना रखनेवाले कई मुमुक्षु रहते हैं। एक दिन मुझे



भी तो उसी ओर जाना है! हिमालय के पवित्र तीर्थों और समग्र भारत के तीर्थों के दर्शन करने हैं, इसके पश्चात् गुजरात में ही निवास करके रहना हैं, वहाँ के भक्त मेरा स्मरण करते हैं, मुझे पुकारते हैं।'

बेचारा वेणी इन बातों को क्या समझे? वह तो घनश्याम का हाथ पकड़कर घर की ओर चलने लगा।

## 19. एक साथ अनेक मंदिरों में दर्शन

अयोध्या में एक दिन दोपहर को घनश्याम भोजन करने लिए घर नहीं पधारे, तो भक्तिमाता ने रामप्रतापजी को कहा, 'बेटा, घनश्याम अभी तक भोजन करने नहीं आया। अभी-अभी जाकर बुला लो।' रामप्रतापजी घनश्याम की खोज करने के लिए सीधे हनुमानगढ़ी गए तो उस समय वहाँ रामकथा हो रही थी। बाल घनश्याम बड़े ध्यान से कथा सुन रहे थे।





रामप्रतापजी ने उन्हें घर वापस चलने को कहा तो घनश्याम ने कहा, 'दाऊ, मैं अभी आता हूँ।'

रामप्रतापजी वहाँ से चल दिए। रास्ते में एक अन्य मन्दिर देखकर रामप्रतापजी वहाँ भी दर्शन करने के लिए गए। वहाँ भी रामकथा हो रही थी। उन्होंने इस मंदिर में भी घनश्याम को रामकथा सुनते देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होंने लोगों को पूछा, 'यह बालक कब से कथा सुन रहा है?' वहाँ उपस्थित भाविकों ने रामप्रतापजी को बतलाया कि घनश्याम वहाँ पर काफी देर से कथा सुन रहे हैं। वहाँ से वे हनुमानगढ़ी आए, तो देखा कि वहाँ भी घनश्याम कथा-श्रवण में निमग्न थे। भिन्न-भिन्न मंदिरों में घनश्याम को एक ही समय कथा सुनते देखकर, रामप्रतापजी को कुछ भी समझ में न आया कि वह कैसा चमत्कार है! एक ही समय पर, एक साथ ही सभी मंदिरों में यह कैसे संभव है?

घर आकर उन्होंने इस चमत्कार की कथा जब पिता और माताश्री को बतलाई तो उन्हें आश्चर्य के साथ ही अद्भुत आनंद की अनुभूति हुई। कुछ ही क्षण के पश्चात् घनश्याम घर आ पहुँचे और स्वच्छ होकर परिवार के साथ भोजन के लिए बैठ गए।

## 20. भूतहा कुआँ

उन दिनों अयोध्या में राजा रायदर्शनसिंह का शासन चल रहा था। परंतु वहाँ एक नवाब ने आकर आतंक मचाना शुरू कर दिया। वह जहाँ भी जाता, वहाँ की जनता को परेशान करता, बच्चे उठाकर ले जाता और लोगों की धन-संपत्ति लूटकर उन्हें बर्बाद कर देता था।

नवाब के आतंक से चिंतित होकर धर्मदेवजी अपने परिवार को लेकर कुछ दिनों के लिए तिनसा नामक एक छोटे-से गाँव में चले गए। उस गाँव में प्रथित पाण्डे, धर्मदेवजी के मित्र थे। उनकी पत्नी का नाम वचनाबाई था। धर्मदेवजी परिवार के साथ उन्हीं के घर ठहरे। वचनाबाई प्रतिदिन स्वादिष्ट रसोई बनाकर घनश्याम को खिलाती थीं। भक्तिमाता भी कामकाज में वचनाबाई की सहायता करती थीं। एक दिन वचनाबाई ने कहा, 'देवी, सूर्यास्त के बाद आप पानी भरने के लिए कुएँ पर मत जाना। कुएँ में हज़ारों भूत रहते हैं, इसीलिए उसे 'भूतहा कुआँ' कहा जाता है। वहाँ के भूत, आपको परेशान कर सकते हैं।'

एक दिन संध्याकाल में भक्तिमाँ ने देखा कि घर में पानी बिल्कुल ही नहीं था। अतः वे स्वयं घड़ा लेकर कुएँ पर जा पहुँची। कुएँ में भूत-प्रेत रहनेवाली कहानी, उनके मन से न जाने कब निकल चुकी थी। ज्यों ही घड़ा पानी में पहुँचा कि एक भूत ने घड़ा पकड़ लिया। भक्तिमाता ने रस्सी खींचने में पूरी ताकत लगाई। परंतु घड़ा नहीं निकल रहा था। उन्होंने कुएँ में झाँककर देखा तो भय से वे काँपने लगीं। हज़ारों चित्र-विचित्र, कुरूप और डरावने भूत कीड़े की भाँति कुलबुला रहे थे। भक्तिमाता भागती हुई घर पहुँची। पसीने से तर-बतर वे काँप रही थीं। घनश्याम ने पूछा, 'माँ! क्या हुआ? आपके चेहरे पर इतना भय कैसे? आज इतनी जल्दी कैसे लौट आई? रस्सी और घड़ा कहाँ?' घनश्याम ने भक्तिमाता ने कुछ देर के बाद स्वस्थ होकर पूरी घटना सुनाई।

दूसरे दिन सुबह होते ही घनश्याम कुएँ पर जा पहुँचे। आज वे कुछ निश्चय करके आए थे। उन्हें देखकर गाँव के सारे लोग वहाँ इकट्ठा हो गए और बिनती करने लगे, 'घनश्याम! कुएँ में कूदने का साहस मत करना। इसमें



रहनेवाले भूत तुम्हें मार डालेंगे।' परंतु घनश्याम किसकी सुननेवाले नहीं थे! उन्होंने कुएँ में छलांग लगा दी। कुएँ पर इकट्ठी हुई भीड़ शोर मचाने लगी। कुएँ के भूत चौंककर जाग उठे और घनश्याम को पकड़ने के लिए आगे बढ़े।

उसी समय घनश्याम के शरीर से प्रकाश-पुंज निकला और उसके ताप से सारे भूत जलने लगे। वे समझ गए कि आज हमारा मोक्ष होनेवाला है। उन्होंने प्रभु को पहचान कर प्रार्थना करना आरंभ कर दिया, 'हे भगवन्! हमें बचा लें। हमारा मोक्ष करें।' घनश्याम ने उनसे पूछा, 'तुम लोग इतनी बड़ी संख्या में यहाँ कैसे?' एक भूत ने पूरी कहानी सुनाते हुए कहा, 'हमें, यहाँ रहते कई वर्ष गुजर गए। पूर्वजन्म में हम सभी राक्षसी वृत्तियों के वशीभूत होकर भाँति-भाँति के पाप और दुराचार किया करते थे। शराब पीना, जुआ खेलना, मांस खाना तथा झूठ और अनैतिक आचरण हमारा स्वभाव बन चुका था। एक दिन एक बादशाह के साथ हुई लड़ाई में हम सभी लोग मर गए और पाप कर्मों के कारण हमें भूत-योनि में जन्म लेना पड़ा। तभी से हम इसी कुएँ में रहते हैं। हे प्रभु, आप तो स्वयं भगवान हैं, हमारे अपराधों की क्षमा करें और हमारे पापों का नाश करें।''



भूतों की प्रार्थना सुनकर घनश्याम ने उनके पापों का नाश किया और सभी को तप करने के लिए बदरिकाश्रम में भेज दिया। उस दिन से कुएँ में एक भी भूत नहीं रहा। लोग जब चाहे पानी भरने जाने लगे। सारा गाँव घनश्याम की प्रशंसा करके उनको प्रणाम करने लगे।

## 21. पहलवानों की पराजय

अयोध्या में प्रतिदिन प्रातःकाल और संध्या समय घनश्याम अपने बालमित्रों के साथ राजघाट पर कुश्ती के दाँव खेला करते थे। एक दिन घनश्याम अपने मित्र केसरीसंग के साथ कुश्ती लड़ रहे थे कि नेपाल का एक महाबली नाम का पहलवान वहाँ आ पहुँचा। महाबली तगड़ा और ऊँचा पहलवान था, उसने कई बड़े-बड़े पहलवानों को कुश्ती में धूल चटा दिया था।

घनश्याम को कुश्ती के दाँव खेलते देखकर महाबली हँसने लगा। उस समय घनश्याम ने अपने शरीर में दस हजार हाथियों का बल उत्पन्न करके महाबली को पलभर में पछाड़ दिया। यह बात अयोध्या की गली-गली और आसपास के गाँवों में पवन की तरह फैल गई। जहाँ देखो वहाँ घनश्याम की चर्चा होने लगी।

यह बात जब अयोध्या के प्रसिद्ध मल्ल मानसिंह, भीमसिंह आदि के कानों में पड़ी, तो वे अयोध्या के महाराज रायसुदर्शनसिंह के पास जाकर कहने लगे कि 'हम, घनश्याम के साथ मल्लयुद्ध करके उसे पराजित कर सकते हैं।' दोनों पहलवानों की बात सुनकर राजा ने उन्हें आगाह करते हुए कहा, 'तुम लोग बहुत नादान हो! घनश्याम कोई सामान्य बालक नहीं, जिन्हें पराजित किया जा सके! अपनी हठ छोड़ो; उन्हें हराना तुम्हारे वश की बात नहीं।'।

'महाराज! आप देखिएगा कि हम, उस बालक को किस तरह चुटकी बजाते उड़ा देंगे और प्रसन्न होकर आप हमें पुरस्कार देने कैसे आते हैं!' दोनों पहलवान अपनी शेखी बधाते हुए रायसुदर्शनसिंह की चापलूसी करने लगे। 'ठीक है, जाओ तुम अपनी तैयारी करो।' राजा ने कहा, 'लेकिन याद रखना पराजित होकर सबकी नाक मत कटवाना।' तीनों मल्ल अभिमान से बोले, 'घनश्याम हमारे आगे क्या हैं? उसको तो एक मच्छर की भाँति उड़ा देंगे।'।

कुछ देर के बाद सारे अयोध्या शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया गया कि

नामदार महाराजा के हुक्म से आज संध्या समय पर बरहट्टा मुहल्ले में धर्मदेव के घर के सामने इमलीवाले कुएँ के बगलवाले मैदान में भीमसिंह, दिल्लीसिंह और मानसिंह-तीनों मल्ल घनश्याम के साथ मल्लयुद्ध करेंगे। राजा रायदर्शनसिंह स्वयं कुश्ती देखने पधारेंगे। सारे ग्रामजन वहाँ समय पर हाजिर हो...।’

राजा के नौकरों ने मैदान की सफाई प्रारंभ कर दी। कुछ देर के बाद शामियाना तैयार हो गया। राजा और दरबारियों के लिये गद्दे और तकिये लगा दिए गए, ध्वजा-पताकाओं से पूरा मुहल्ला सुशोभित किया गया।

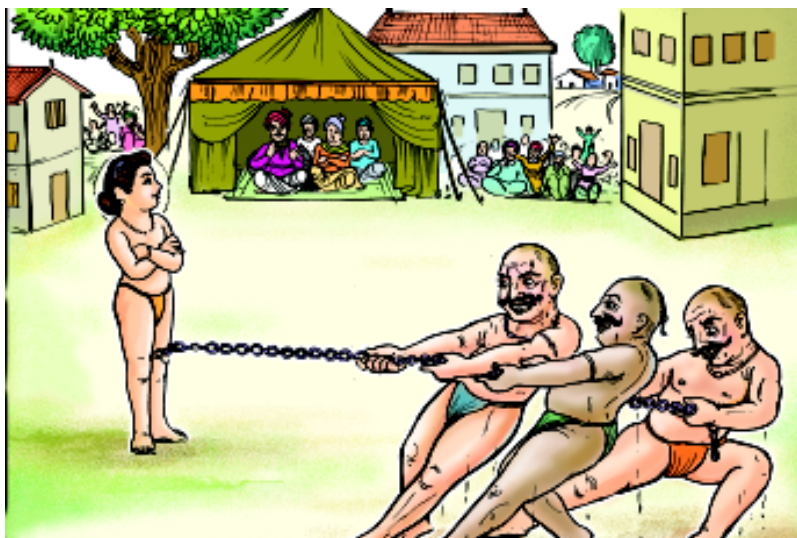
धर्मदेवजी तो यह सुनते ही चिंतित हो गए, ‘इतने बड़े-बड़े पहलवान मेरे मासूम बालक से भिड़ेंगे, तो उसका क्या हाल-हवाल होगा? आज तो मेरे पुत्र की परीक्षा के लिए राजा स्वयं उपस्थित रहेंगे। न जाने क्या होगा?’ पिताजी को चिन्तातुर देखकर घनश्याम ने आश्वासन देते हुए कहा, ‘पिताजी, आप को डरने की तनिक भी आवश्यकता नहीं। भगवान स्वयं अपनी प्रतिष्ठा संभाल लेंगे।’ इतना कहकर घनश्याम ने अपना विराट स्वरूप अपने माता-पिता को दिखाया, तो दोनों उनका अनुपम सामर्थ्य देखकर चिन्तामुक्त हो गए।

संध्या का समय हुआ। सारे नगर के लोग इमलीवाले मैदान में इकट्ठे होने लगे। मण्डप खचाखच भर गया था। निर्धारित समय आते ही सिपाहियों ने कार्यक्रम शुरू होने की घोषणा की। राजा और राज्य के अधिकारी स्पर्धा-स्थल पर आ पहुँचे। घनश्याम भी अपने पिता और भाई रामप्रतापजी के साथ स्पर्धा-स्थल पर पधारे।

घनश्याम को देखकर सारी सभा ने जयघोष किया। औपचारिक विधि के बाद मल्ल-संग्राम प्रारंभ हुआ। बड़ा पहलवान भीमसिंह जाँघ पर ताल ठोंककर गर्जना करता हुए बोला, ‘अखाड़े में आओ बालक, मेरी ताकत का परिचय पाते ही भाग खड़े होगे!’ प्रत्युत्तर में घनश्याम कुछ बोले नहीं, मुस्कुराते हुए उसके सामने आ खड़े हुए। मल्ल ने वजनदार जंजीर उठाई और उसे अपने दाँये पैर में बाँध दिया। फिर मैदान के मध्य भाग में खड़े होकर सारी सभा के सामने कहने लगा, ‘सभाजनों सुनिए, मेरे दाँये पैर में सौ हाथियों का बल है, इस पैर में बँधी जंजीर को खींचकर यदि घनश्याम मुझे गिरा दें, तो मानूँगा कि वह वाकई बलवान है।’

घनश्याम ने अपने इष्टदेव का स्मरण किया और पिताश्री को प्रणाम करके बाँयें हाथ से जंजीर का एक सिरा आसानी से उठा लिया। उन्होंने जंजीर को इतनी तेजी से खींचा कि उसके दो टुकड़े हो गए और भीमसिंह इमली के पेड़ से टकराकर दूर जा गिरा। चोट अधिक लगने के कारण उसके नाक और मुँह से रक्त की धारा बहने लगी। भीमसिंह क्रोधित होकर चिल्लाने लगा, 'घनश्याम! बाँध ले इस जंजीर को अपने पैर में और ताकत हो तो मैदान में आकर खड़े हो जा। हम तुम्हें बताएँगे कि हमारी ताकत कितनी है। जंजीर के साथ घुमाकर तुम्हें ऐसा फेकूँगा कि तेरी हड्डी-पसली तक न मिलेगी।' घनश्याम ने बिना किसी डर के तुरंत कहा, 'ठीक है, हम ऐसा ही करेंगे।' उन्होंने स्वयं अपने बाँये पैर पर जंजीर बाँधी और आँखें बन्द करके स्थिर खड़े हो गए।

भीमसिंह अपनी पूरी ताकत लगाकर जंजीर खींचने लगा, परन्तु घनश्याम को हिला भी न सका! बाद में तीनों मल्ल इकट्ठा होकर जंजीर खींचने लगे, लेकिन परिणाम कुछ भी नहीं आया। तीनों मल्लों ने इतना जोर लगाया कि उनके नथूने फूल गए, तंगिए और लंगोट ढीले पड़ गए, परन्तु घनश्याम तनिक भी विचलित नहीं हुए। यह देखकर सारी सभा ठहाके लगाने लगी। तीनों मल्ल क्रोध के मारे तिलमिलाने लगे। तीनों ने आखिरी



बार जोर लगाया, तो जंजीर अचानक टूट गई और तीनों मल्ल धड़ाम से ज़मीन पर गिर गए। उनकी हड्डियाँ टूट गईं। देर तक वे खड़े भी नहीं हो पाए। घनश्याम मुस्कराते हुए अपने स्थान पर खड़े रहे।

राजा रायसुदर्शनसिंहजी ने अपने स्थान पर खड़े होकर घनश्याम को विजयी घोषित किया। मूल्यवान वस्त्र-आभूषण से घनश्याम का सम्मान किया गया। सभा स्थल पर बताशे बाँटे गए। तीनों मल्लों को आदेश दिया गया कि तीनों मिलकर घनश्याम से क्षमायाचना करें। उन्होंने राजा की आज्ञा का पालन करते हुए कहा, 'आज से हम अपनी शक्ति का कभी अभिमान नहीं करेंगे। आप साक्षात् प्रभु हैं, हमारे अपराधों को क्षमा कीजिए।' घनश्याम ने तीनों को आशीर्वाद दिया। राजा ने पिता और पुत्र का हाथी पर बिठाकर बड़ी धूमधाम से सम्मान किया। लोग घर-घर घनश्याम की जय-जयकार करने लगे।

## 22. लोभी हलवाई को चमत्कार

एक सुबह सुवासिनी भाभी रसोईघर में थी। घनश्याम वहाँ आकर भाभी से कहने लगे, 'भाभी! मुझे बड़े जोरों की भूख लगी है। जल्दी से कुछ खाने के लिए दें।'।

भाभी ने कहा : 'भैया, रसोई में अभी कुछ देर है, अगर खाना है तो चने या गुड़पपड़ी दूँ।' परन्तु घनश्याम नहीं माने। उन्होंने ठान लिया कि मैं तो पेड़े ही खाऊँगा।

भाभी को आश्चर्य हुआ कि घनश्याम भूख लगने पर भी बोलनेवाले नहीं है। उन्होंने मिठाई में कभी रुचि ही न ली, तो आज यह क्या हुआ? आटा सानते हुए भाभी विचारों में खोई रहीं। उन्होंने हँसकर कहा, 'भैया, यदि आपको पेड़े खाने हैं, तो जाइए हलवाई के पास, मेरे पास तो पेड़े हैं नहीं।'।

'ठीक है मैं वहीं जा रहा हूँ।' घनश्याम ने कहा और सामने चौकी पर रखी हुई भाभी की अंगूठी लेकर वहाँ से फरार हो गए। यह देखकर भाभी किंकर्तव्यविमूढ़ हो घनश्याम के पीछे दौड़ी, पर वे ऐसे कैसे हाथ आनेवाले थे? भाभी ने उनको धमकाया कि अंगूठी दे दो, वरना बड़े भैया से चोरी की शिकायत करूँगी और वे खूब पीटेंगे। घनश्याम ने दूर ही से अंगूठी दिखाकर

कहा, 'भाभीजी, आपके सामने से मैंने अंगूठी ली है, चोरी कहाँ की?' भाभी को लगा कि इस प्रकार तो घनश्याम हाथ आने से रहे, अतः उन्होंने कमरे का दरवाजा ही बन्द कर दिया। पर यह क्या! घनश्याम तो घर के आंगन में खड़े-खड़े मुस्कुरा रहे हैं। भाभी को चिढ़ाते हुए अंगूठी लेकर वे हलवाई की दुकान पर जा पहुँचे।

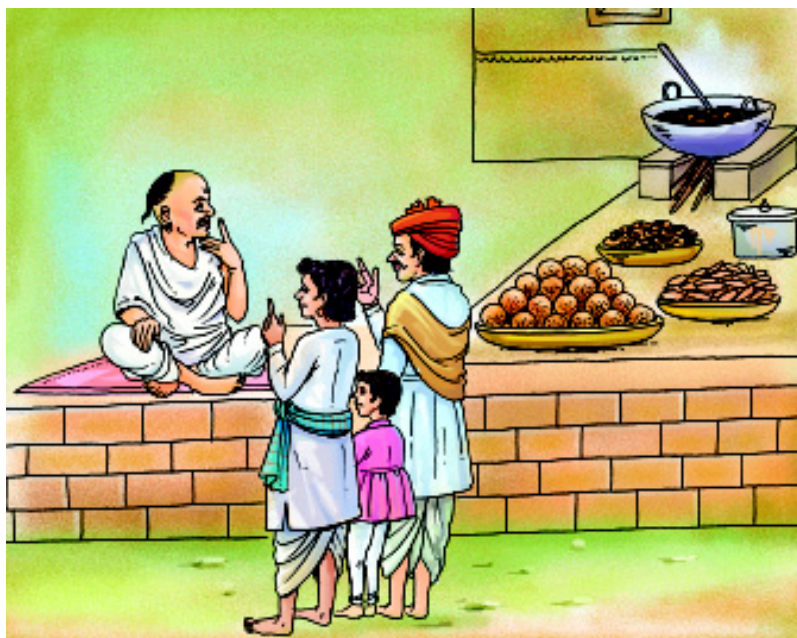
हलवाई बड़ा लोभी था। घनश्याम ने अँगूठी दिखाकर कहा, 'मुझे इस अंगूठी के बदले में आप क्या देंगे? इसके बदले में आप मुझे अपनी दूकान की मिठाइयाँ दे सकते हैं?'

यह सुनकर लोभी हलवाई ने अँगूठी देखा और उसे कीमती जानकर दूकान की सारी मिठाइयाँ टोकरे में भरकर घनश्याम को दे दी। घनश्याम अपने बालमित्रों के साथ मिठाई की डलियाँ लेकर बगीचे की ओर निकल गए। कुछ देर के बाद पं. धर्मदेवजी, पुत्र रामप्रताप के साथ घर वापस आए तो सुवासिनी ने अंगूठी संबन्धी सारी बातें रामप्रतापजी को बतला दीं। बड़े भैया गुस्से में आकर तुरन्त घनश्याम की तलाश के लिए निकल पड़े। इसी बीच बालप्रभु घनश्याम जब घर में आए, तो सारी स्थिति भाँप कर सीधे भक्तिमाँ की गोद में जा बैठे। वे कुछ भयभीत-से दिख रहे थे। उन्हें देखते ही रामप्रतापजी उन पर बिफर पड़े और पूछा, 'अगँूठी कहाँ हैं?'

'मैं क्या जानूँ?' घनश्याम ने सिर नीचे किए हुए गंभीर मुद्रा में कहा। रामप्रतापभाई अपने गुस्से को संभाल नहीं पाए और घनश्याम के गाल पर एक थप्पड़ जड़ दिया। घनश्याम सिसककर रोने लगे। सुवासिनी भाभी को कल्पना तक नहीं थी कि उनकी शिकायत का दंड घनश्याम को ऐसा मिलेगा। उन्होंने घनश्याम को गोद में उठा लिया। सिसकते हुए घनश्याम ने सुवासिनी भाभी को सारी बातें बतला दी।

सारी जानकारी मिल जाने पर धर्मदेव और रामप्रतापजी सीधे हलवाई की दूकान पर गए। उन्होंने हलवाई से पूछा, 'घनश्याम ने तुम्हें कोई अंगूठी दी है क्या?' 'जी हाँ, उसके बदले में वे लोग दूकान की सारी मिठाइयाँ भी ले गए। आप भीतर चलकर दूकान देख सकते हैं।'

हलवाई की बात सुनकर घनश्याम ने रोते हुए कहा, 'नहीं पिताजी, यह झूठ बोलता है। मैंने तो मिठाई ली ही नहीं। भीतर चलकर आप स्वयं



देख सकते हैं।’ यह कहते हुए उन दोनों का हाथ पकड़कर वे दूकान के अंदर ले गये।

दूकान के अंदर जाकर सभी लोगों ने देखा कि प्रत्येक टोकरे में मिठाइयाँ ज्यों की त्यों भरी पड़ी हैं। यह देखकर हलवाई के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। हाथ जोड़कर उसने धर्मदेवजी से कहा, ‘पंडितजी, क्षमा कीजिए! आपका पुत्र, लगता है कोई सामान्य बालक नहीं; मैंने इन्हें अपने हाथों से मिठाइयाँ दी थीं, परन्तु यह क्या चमत्कार है, मेरी समझ में नहीं आता!’

हलवाई ने अंगूठी वापस करके सभी को प्रणाम किया। इस प्रकार विस्मय में पड़े हुए धर्मदेवजी और रामप्रतापजी घनश्याम को लेकर घर वापस आए।

## 23. ‘खांपा’ तलैया

छपिया में घनश्याम के घर से थोड़ी सी दूरी पर एक सुंदर सा तालाब था, जो चारों ओर से वृक्षों से घिरा हुआ था। बगीचे के आस-पास चारों ओर सुरम्य हरियाली छाई रहती थी। घनश्याम अपने मित्रों के साथ प्रायः





वहाँ खेलने आया करते थे। गाँव के ग्वाले वहाँ आकर अपनी गायें चराते थे। उपवन के भीतर तालाब के चारों ओर सुंदर-सुंदर गुलाब और केवड़ा के फूल वातावरण को अत्यन्त ही मनोहर बना देते थे।

एक दिन घनश्याम तालाब के पास खेल रहे थे कि उसी दौरान कुछ ग्वाले अपनी गायों को लेकर वहाँ से गुजरे। एकाएक घनश्याम ने गायों को पुकारा, तो उनकी आवाज़ सुनकर सम्मोहित हो गायें, उनकी ओर भागने लगी। यह देखकर सभी ग्वाले आश्चर्यचकित हो गये। अपनी गायों को उन्होंने रोकने का भरसक प्रयास किया, लेकिन सभी गायें घनश्याम के पास जाकर खड़ी हो गई। कुछ देर तक गायों के सिर पर अपना हाथ फेरने के पश्चात् उन्होंने कहा, ‘अब जाओ।’ यह सुनकर सारी गायें रँभाती हुई घर की ओर दौड़ पड़ीं।

तालाब के किनारे पर इमली का एक वृक्ष था। वहाँ, अपने मित्रों के साथ कुछ देर तक खेलने के बाद घनश्याम इमली के वृक्ष पर चढ़ गए। कुछ देर तक बालक्रीड़ा करने के पश्चात् बालक घनश्याम जब पेड़ से उतरने लगे, तो उनका पाँव फ़िसल गया और वे नीचे भूमि पर आ गिरे। उनकी दायीं जाँघ में कुछ खरोंचे आ गई थी, जिसके कारण खून की बूँदे टपकने लगी। साथ के सभी बालमित्र चिंता में पड़ गए। उन्हीं में से एक सुखनन्दन नाम का बालक सीधे धर्मदेवजी को बुलाने के लिए दौड़ पड़ा। इसी बीच आकाश से इंद्र, चंद्र, ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता मनुष्य रूप में वहाँ उपस्थित हो गए। इन्द्रदेव ने देवों के वैद्य अश्विनी कुमार को बुलवाया। दोनों अश्विनी कुमारों ने मिलकर जाँघ पर लगी चोट पर मरहम-पट्टी की। इसके पश्चात् सभी देवगण बालक घनश्याम को प्रणाम करके वहाँ से अदृश्य हो गए।

पंडित धर्मदेवजी कुछ देर के पश्चात् जब आए, तो उन्होंने देखा कि घनश्याम की जाँघ में पट्टी बंधी हुई है। उन्होंने पूछा, ‘बेटे, पट्टी किसने बाँधी?’ वेणी ने उत्तर दिया, ‘चाचाजी, यहाँ तो देवों के वैद्य अश्विनी कुमार स्वयं आकाश से उतरकर उपचार कर गए हैं, पट्टी भी उन्हीं ने बाँधी है।’ धर्मदेवजी आश्चर्य में पड़कर सोचने लगे कि मेरा पुत्र कोई सामान्य विभूति नहीं। घनश्याम को अपने कन्धे पर बैठाकर वे घर को चल पड़े।

घर पर भक्तिमाता घनश्याम के शीघ्र आने की प्रतीक्षा कर रही थीं।

पैर में चोट लगने की बात सुनकर वे बहुत चिंतित थीं। घनश्याम को देखते ही वे व्याकुल होकर पूछने लगी, 'बेटा, तुम्हें कहाँ-कहाँ चोट लगी है?' यह सुनकर घनश्याम ने कहा, 'माँ, मुझे तो कहीं भी चोट नहीं लगी।' भक्तिमाता ने पूछा, 'फिर... तुम्हारी जाँघ में यह पट्टी क्यों बाँधी गई है?'

भक्तिमाता के पूछने पर घनश्याम ने अपनी पट्टी खोल दी। भक्तिमाता ने देखा कि वहाँ घाव बिल्कुल न था; मात्र खरोंच के निशान ही रह गए थे! भक्तिमाता के आनंद की सीमा न रही।

इस घटना के पश्चात् उस तालाब का नाम 'खरोंच तलैया' (खांपा तलावड़ी) पड़ गया।

## 24. सोलह चिह्न

एकबार पंडित धर्मदेवजी अपने पूरे परिवार के साथ तीर्थयात्रा के लिए निकले। उनके साथ में वसंताबाई और चंदामौसी भी थीं।

मार्ग में गुंडा नामक एक छोटा-सा गाँव आया। वहाँ एक छोटा-सा सुंदर मंदिर था। संध्या समय हो चुका था; मंदिर में संध्या आरती का घंटारव हो रहा था। दर्शन की इच्छा लिए हुए सभी लोग मंदिर में जा पहुँचे। नगाड़े और झालर की ध्वनि में घंटारव की मधुर ध्वनि मिलकर एक दिव्य संगीत का सृजन कर रहे थे। धर्मदेवजी जिस समय अपने पूरे परिवार के साथ एकाग्र चित्त होकर मूर्ति का दर्शन कर रहे थे, उसी समय एक विचित्र घटना घटी। भगवान की मूर्ति सिंहासन से उतरकर घनश्याम के पास आई और अपने गले में से पुष्पमाला निकालकर घनश्याम के गले में पहना दी। पुष्पमाला अर्पण करने के बाद भगवान की वह मूर्ति पुनः सिंहासन पर बिराजमान हो गई। उस समय मंदिर में उपस्थित सभी लोग यह दृश्य देखकर आश्चर्यचकित हो गये। इतना ही नहीं, वे सभी लोग अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर आँखों देखी इस घटना को सभी लोगों को सुनाया।

धीरे-धीरे मंदिर में घटी इस घटना का समाचार उक्त रियासत के सामंत राजा गुमानसिंह के कानों में पड़ी, तो वे अगले ही दिन घनश्याम की परीक्षा लेने का निश्चय किया। उन्होंने पंडित धर्मदेवजी से निवेदन किया कि वे अपने तीनों पुत्रों के साथ प्रातः 10.00 बजे राजभवन में उपस्थित हों।

परिणाम स्वरूप अगले दिन प्रातःकाल ही उचित समय पर पंडित धर्मदेवजी अपने पुत्रों के साथ राजभवन में पहुँच गए।

राजा गुमानसिंह ने पूछा, 'इनमें से सभी को चमत्कार दिखानेवाला आपका पुत्र घनश्याम कौन है?'

धर्मदेवजी ने घनश्याम के सिर पर हाथ रखते हुए कहा कि 'यही है मेरा मँझला पुत्र घनश्याम।' राजा ने सोचा कि यदि यह बालक स्वयं भगवान होगा, तो यह बात दो प्रकार से प्रमाणित की जा सकती है। शास्त्रों में लिखा है कि भगवान की परछाई नहीं होती और भगवान के चरणों में सोलह चिह्न



बिराजमान होते हैं। यदि ये दोनों बातें घनश्याम में पाई गई तो समझो कि यह स्वयं भगवान हैं और न मिली, तो समझूँगा कि यह सब केवल दिखावा ही है।

यह सोचकर राजा ने घनश्याम को आँगन में बुलवाया। उनके आते ही राजा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, क्योंकि धर्मदेव के साथ सभी की परछाई पड़ रही थीं, केवल घनश्याम की परछाई का कहीं निशान तक न था! राजा ने घनश्याम से कहा, 'आप पैर फैलाकर बिराजमान हों।' घनश्याम उसी प्रकार से बिराजमान हुए और राजा ने देखा तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। घनश्याम के दाहिने पैर में अष्टकोण, ऊर्ध्वरेखा, स्वस्तिक, जामून, यव, वज्र, अंकुश, केतु और पद्म ऐसे नौ चिह्न थे। तथा बायें पैर में त्रिकोण, कलश, गोपद, धनुष्य, मीन, अर्धचन्द्र और व्योम ऐसे सात चिह्न थे। दोनों चरणों में ऊर्ध्वरेखा, अँगूठे और तर्जनी के बीच से पैरों के तलवे तक जाती हुई दिखाई देती थीं। राजा को विश्वास हो गया कि घनश्याम स्वयं भगवान हैं। उन्होंने दंडवत् प्रणाम करके घनश्याम का पूजन किया।

राजा गुमानसिंह और रानी कुंवरबाई ने घनश्याम के चरणों में मस्तक टेक कर नमस्कार किया। उन्हें राजभवन में निमंत्रित करके रेशमी गद्दी-तकिये पर बिराजमान किया गया। पं. धर्मदेवजी और घनश्याम को बैठाकर दोनों की कुमकुम, चन्दन तथा पुष्पों से पूजा की, आरती उतारी तथा घनश्याम को मखमल की सुनहले बेलबूटे वाली टोपी और सुरवाल आदि भेंट में दिए। सम्मान के साथ उन्होंने सभी को विदाई दी।

तीसरे दिन वे सभी लखनऊ और कानपुर होकर अयोध्या वापस लौट रहे थे। तीनों भाईयों में इच्छारामजी सबसे छोटे थे, उन्हें चलना भी नहीं आता था। इसलिए वसन्ताबाई उन्हें उठाकर चलती थीं। घनश्याम भक्तिमाता की उंगली थामकर चलते थे। रास्ते में बालक घनश्याम ने हठ करते हुए अपनी माँ से कहा, 'मौसी इच्छाराम को उठाकर चलती है, तो आप मुझे पैदल क्यों ले चलती हैं?' भक्तिमाता ने कहा, 'बेटा, तू समझता क्यों नहीं? इच्छाराम तो बहुत छोटा है, उसको तो चलने भी नहीं आता और उसका वजन भी बहुत कम है और तुम तो कितना वजनदार हो! तुमको उठाकर ले चलना बहुत कठिन है।' घनश्याम ने कहा 'माँ, तुम जितना समझती हो, मैं उतना भारी नहीं हूँ। थकावट के कारण अब मैं आगे नहीं चल सकता।'।

इतना कहकर घनश्याम ने अपनी दिव्य शक्ति से इच्छाराम का वजन इतना बढ़ा दिया कि वसन्ताबाई को उसे नीचे उतारना ही पड़ा। वह भक्तिमाता से कहने लगी, 'इच्छाराम का वजन आज इतना बढ़ गया कैसे? रोज तो इतना वजन नहीं लगता!'

भक्तिमाता ने हँसते हुए कहा, 'यह तो घनश्याम का प्रताप है। उसको चलने की इच्छा नहीं है, इसलिए उसने इच्छाराम का वजन बढ़ा दिया है।' फिर चन्दामौसी से कहने लगी कि 'तुम घनश्याम को उठा लोगी तो सब ठीक हो जाएगा।'

चन्दामौसी ने घनश्याम को उठा लिया, तो बिल्कुल फूल जैसे! अब इच्छाराम का वजन बिल्कुल पहले की तरह हो गया। घनश्याम की ऐसी लीला देखकर धर्मदेवजी और भक्तिमाता हँसने लगे।

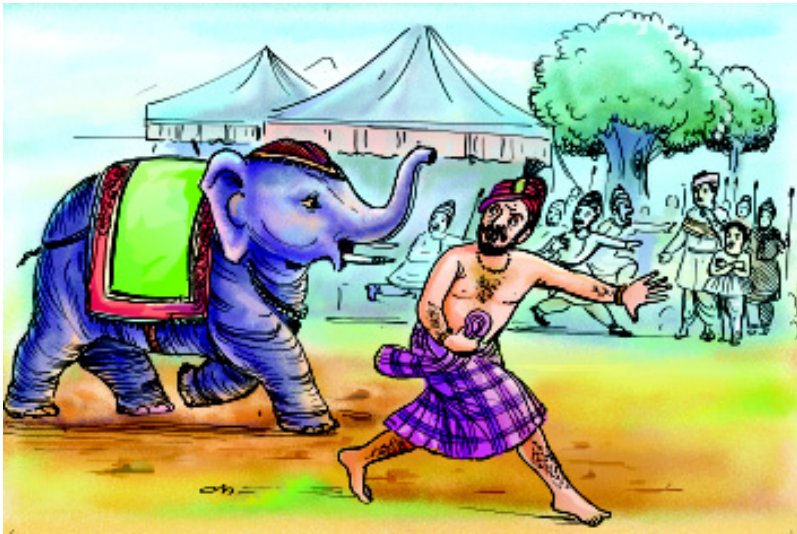
## 25. हिंसा बन्द करवाई

धर्मदेवजी के साढ़ूभाई बलदीधर तथा उनके भाई मुरलीगंगाधर दोनों नवाब की सेना में सिपाही थे। किसी समय नवाब की सेना घूमती हुई बल्लमपढरी गाँव में आ पहुँची। धर्मदेवजी ने सोचा कि बल्लमपढरी अयोध्या से नजदीक है। वहाँ ये दोनों भाई आए हैं तो चलो मुलाकात कर लें। धर्मदेवजी बल्लमपढरी पहुँचे। गाँव के बाहर एक बगीचे में सेना का पड़ाव था। वहाँ दरवाजे पर एक सिपाही बैठा हुआ था। धर्मदेवजी ने पूछा, 'मैं बलदीधर और मुरलीगंगाधर से मिलना चाहता हूँ, वे दोनों इसी सेना में सिपाही हैं, कृपया तुम हमें उनके पास ले जाओ।'

वह उन सभी को एक पीपल के पेड़ के पास ले गया। उस पेड़ के पास लगे हुए एक बड़े कैम्प में नवाब अपने कुछ सिपाहियों के साथ बैठकर गाय, बकरे आदि जानवरों का बध करवा रहा था।

पं. धर्मदेवजी उस भयानक क्रूरता को देखकर सिहर गए। उनका हृदय करुणा से भर गया। पिताजी का उदास मुख देखकर घनश्याम ने पूछा, 'पिताजी, आप इतने उदास क्यों दिख रहे हैं?' धर्मदेवजी ने कैम्प के दरवाजे की ओर इशारा किया। वहाँ हो रहे पशुओं का बध देखकर घनश्याम का हृदय पसीज गया। उन्होंने उसी क्षण संकल्प किया कि नवाब की सेना





के सारे हाथी और घोड़े पागल हो जाएँ और होकर अपनी-अपनी जंजीरों तोड़कर कैम्प की ओर दौड़ पड़ें। इस संकल्प के परिणाम स्वरूप सेना के सभी हाथी और घोड़ों ने अपनी-अपनी जंजीरों को तोड़कर कैम्प पर हमला कर दिया। कुछ हाथी वहाँ लगे विशाल कैम्प (तंबू) को उखाड़ने लगे तो कुछ हाथी कैम्प के भीतर घुस गए।

घोड़ों की हिनहिनाहट और हाथियों के चीत्कार से गाँव के आसपास का वातावरण डरावना-सा लगने लगा। सारे सिपाही जान बचाकर भागने लगे। नवाब भी नंगे पाँव भाग खड़ा हुआ। भागते-भागते उसकी लूंगी छूट गई। किसी तरह लूंगी थामकर वह पीपल के नीचे जा छिपा। हाथी उसका पीछा किए हुए था, इसलिए भयभीत हो वह पीपल के पेड़ पर चढ़ गया। हाथी दौड़ता हुआ दूर निकल गया।

अब घनश्याम ने अपनी दिव्य शक्ति से पूरे पेड़ को झकझोरना शुरू कर दिया। पेड़ की सारी डालियाँ काँपने लगीं। पत्ते नीचे झड़ने लगे। इस स्थिति में नवाब भी हिलने लगा। उसने नीचे देखा तो सारी धरती काँपती हुई दिखाई दी। वह अपने किए हुए पाप का प्रायश्चित्त करने लगा और जोर-जोर से रोने-चिल्लाने लगा, 'ओ अल्लाह! बचाओ, मुझे बचा लो।' नवाब इतना भयभीत हो उठा था कि उसे लगता था कि किसी भी क्षण पेड़



से नीचे गिरकर वह खत्म हो जाएगा।’

नवाब के बारबार प्रार्थना करने पर, उसके कानों में पेड़ से निकलती हुई एक आवाज सुनाई पड़ी, ‘तुम और तुम्हारे सैनिक निर्दोष पशु-प्राणियों की हिंसा करके घोर पाप कर रहे हैं। इसीलिए तुम लोगों पर परमात्मा कुपित हो उठे हैं। यदि तुम जीवित रहना चाहते हो, तो अभी प्रतिज्ञा करो कि फिर कभी हिंसा नहीं करोगे; अन्यथा कुछ ही क्षणों में तुम सभी लोग मौत के मुँह में चलो जाओगे। तुम जिस अल्लाह और खुदा की प्रार्थना कर रहे हो, वे तो उस पेड़ के सामने बालप्रभु घनश्याम के रूप में अपने पिता धर्मदेवजी के पास खड़े हैं। उनसे क्षमा माँगो तभी तुम्हारा इस संकट से छुटकारा होगा।’

यह सुनकर नवाब चकित रह गया। अदृश्य आवाज को उसने अल्लाह का फरमान समझकर उसने प्रतिज्ञा किया कि ‘आज से मैं कभी भी निर्दोष प्राणियों की हिंसा नहीं करूँगा और न तो मेरी सेना का कोई सैनिक ही हिंसा करेगा।’ नवाब की प्रतिज्ञा और उसकी प्रार्थना के साथ ही पीपल वृक्ष का हिलना बंद हो गया और सारे हाथी-घोड़े अपनी-अपनी जगह पर चले गए।

पेड़ से उतरकर वह नवाब सीधे बालक घनश्याम के पास गया और उनके चरणों में गिरकर प्रार्थना करने लगा, ‘हे घनश्याम! आप ही अल्लाह हो, खुदाताला हो, मैं तो आपका गुलाम हूँ, मेरे अपराधों को माफ़ कर दो, मेरे पापों को मिटा दो, अब मैं न तो हिंसा करूँगा और न ही किसीको हिंसा करने दूँगा।’ नवाब की प्रार्थना सुनकर घनश्याम ने उनको आशीर्वाद दिए। इसके पश्चात् नवाब प्रणाम करके वहाँ से सीधे अपनी कैम्प में गया। बलदीधर और मुरलीगंगाधर से मुलाकात करने के पश्चात् धर्मदेवजी अपने दोनों पुत्रों के साथ अयोध्या वापस लौटे।

## 26. महावत की रक्षा

अयोध्या में बलदेव नामक एक धनवान व्यक्ति रहते थे। उन्होंने एक बलवान हाथी पाल रखा था। हाथी को सम्हालने वाला महावत हमेशा हाथी के खाने की सामग्रियों में से मिठाइयाँ तथा घी आदि चुरा लेता था। हाथी उसकी चोरी हमेशा देखता और मन ही मन बदला लेने का अवसर ढूँढ़ता रहता था। एक दिन की बात है। महावत हाथी को लेकर सरोवर के किनारे जा पहुँचा।



वहाँ उसे पानी में उतारकर खपरैल से उसके शरीर को घिसने लगा। हाथी ने एकाएक क्रोधित होकर महावत को अपनी सूँड़ में लपेट लिया। वह उसे जमीन पर पटकनेवाला ही था कि किनारे पर खड़े लोगों ने शोर मचाना शुरू कर दिया। ‘अरे, बचाओ, कोई उस महावत को बचा लो!’

उसी शोरगुल के बीच घनश्याम अपने पिताजी के साथ वहाँ से गुजरे, तो हाथी का क्रोध देखते ही उन्हें पूरी बात समझ में आ गई। महावत पर उन्हें दया आ गई। तत्क्षण ही वे अपने दूसरे स्वरूप में पानी में उतरकर हाथी के पास जा पहुँचे और बलवान हाथी की सूँड़ से महावत को छुड़ा लिया। घनश्याम के दिव्य प्रभाव से हाथी शांत हो गया। हाथी पर सवार होकर बालप्रभु घनश्याम पानी से बाहर निकले। क्रोधित हाथी, गाय की भाँति शांत हो गया था। किनारे पर खड़े लोगों ने घनश्याम के दो स्वरूप देखकर विस्मित हो गए। कुछ ही पलों में उन्होंने अपना दूसरा स्वरूप अदृश्य कर दिया और स्वयं हाथी पर सवार होकर अपने घर के आँगन तक जा पहुँचे। महावत ने हाथी को बैठने का संकेत दिया। वह धीरे से बैठा और घनश्याम हाथी से उतर गए।

महावत तुरंत घनश्याम के चरणों में गिरकर रोने लगा, ‘हे प्रभु! यदि आज हाथी का क्रोध आपने शांत न किया होता, तो मेरी मृत्यु निश्चित थी।’ आज से मैं कभी भी इस हाथी के हिस्से में मिली मिठाई अथवा घी की चोरी नहीं करूँगा।’ घनश्याम ने उसे आशीर्वाद देकर विदा किया।

## 27. नई बत्तीसी

एक दिन घनश्याम ने सुवासिनी भाभी से कहा, 'भाभी, आज तो मेरी डाढ़ में बहुत पीडा हो रही है, रोटी के बदले में आज हलवा बना दीजिए।' सुवासिनी भाभी ने हलवा बना दिया। भोजन करते समय सभी साथ-साथ बैठे हुए थे। सुवासिनी भाभी ने इच्छाराम को रोटियाँ और घनश्याम को हलवा परोसा। अपनी थाली में से छोटे भाई इच्छाराम को हलवा देकर घनश्याम ने दो कौर हलवा खाया और हाथ-मुँह धो डाला। यह देखकर सुवासिनी भाभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा, 'क्यों भैया! दाँतों में बहुत पीडा हो रही है क्या?'

'हाँ भाभी! दर्द तो बहुत होता है और डाढ़ भी हिलने लगी है।' उन्होंने आगे कहा, 'यदि आप मेरे हिल रहे दाँतों को निकाल लें, तो मेरी पीडा बहुत कम हो जाएगी।' इतना कहकर घनश्याम ने मुँह खोला और अपनी दैवी शक्ति से सारे दाँत ढीले कर दिए। सुवासिनी भाभी ने दाँतों की स्थिति देखकर कहा, 'भैया, तुम्हारी डाढ़ के साथ-साथ सभी दाँत भी हिल रहे हैं।' यह सुनकर घनश्याम ने कहा, 'भाभी, हिलनेवाले सभी दाँतों के साथ ही डाढ़ों को भी निकाल दीजिए।'

सुवासिनी भाभी ने ऐसा ही किया। परंतु जब घनश्याम का पोपला मुँह देखा तो घबड़ाकर कहने लगी, 'अरे, अब आप कैसे खा पाएँगे?' उन्होंने तुरंत भक्तिमाता को बुलाया और घनश्याम का मुँह दिखाकर कहने लगीं, 'माँ, घनश्याम ने तो मुझ से बार-बार यही कहा था कि मेरे हिलते हुए दाँत खींच निकालो। इसलिए मैंने तो उनके सारे दाँत खिंच निकाले। अब ये भोजन कैसे करेंगे?' भक्तिमाता भी यह सुनकर घबड़ा गई। उनके सामने ही निकाले गए सभी दाँत पड़े हुए थे। उन्होंने घनश्याम से कहा, 'अपना मुँह खोलो तो!' जैसे ही घनश्याम ने मुँह खोला, भक्तिमाता और सुवासिनी भाभी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। घनश्याम के मुँह में दाँत की नई बत्तीसी फूट आई थी!

घनश्याम ने अपने निकाले गए दाँतों को उठाकर अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया। सुवासिनी भाभी ने जब उनकी मुट्ठी खुलवाई तो उसमें दाँतों के बजाय मोती झिलमिला रहे थे! घनश्याम ने उसे लेकर हाथ उठाया ही था कि



आकाश मार्ग से उड़ते हुए कई राजहँस मान सरोवर से आ पहुँचे। घनश्याम के हाथ से एक-एक मोती चुगकर वे पुनः आकाश की ओर उड़ गए।

यह लीला देखकर भक्तिदेवी और सुवासिनी भाभी घनश्याम की वन्दना करने लगीं।

## 28. बालमित्रों को भोजन करवाया

एक दिन घनश्याम, बालमित्रों के साथ छपिया गाँव के मीन-सरोवर के किनारे खेलने गए थे। खेलते-खेलते दोपहर के चार बज गए। माधव, वेणी, प्राग, सुखनन्दन आदि सभी लड़के भूख से व्याकुल होने लगे। हर कोई जल्दी से घर जाना चाहता था।

परंतु घनश्याम ने कहा, 'यदि आप लोग मेरी एक बात मानोगे तो मैं आप सभी को यहीं भोजन कराऊँगा।' सभी ने घनश्याम की बात मान ली और कहा, 'हम ऐसा ही करेंगे जैसा आप कहेंगे। अब यह बताइए कि हमें क्या करना है?' घनश्याम ने कहा, 'आज सूर्यास्त तक यदि आप सब खेलने का वादा करो तो मैं सभी को यहीं भोजन कराऊँगा।' सभी मित्र इस बात पर सहमत होकर बोले, 'ठीक है, हम लोग शाम तक जरूर खेलेंगे।'

घनश्याम ने एक बड़ा-सा रुमाल लिया और आम के पेड़ की एक



डाली पर बाँध दिया, बच्चों ने पूछा, 'आपने यह क्या किया?'

'इसकी चिंता आप मत करें। इस रुमाल में थोड़ी ही देर में मिठाई आ जाएगी, चलो हम लोग तब तक सरोवर में नहा लें।' सभी बालमित्र घनश्याम के साथ मीनसरोवर में नहाने लगे। संध्या ढलने लगी, तब घनश्याम ने कहा, 'चलो, अब शाम ढल रही है, घर जाते देर लगेगी तो बड़े भैया हमें डाँटेंगे।' यह सुनकर सभी बाहर निकलकर तैयार हो गए।

वेणीराम ने कहा, 'घनश्याम! अब मिठाई खिलाओ ! हम तो भूख से मर रहे हैं।' घनश्याम ने कहा, 'तो चढ़ जाओ इस आम के पेड़ पर, वहाँ मिठाई रखी हुई है।' सभी बालमित्र आम के पेड़ पर चढ़ गए। घनश्याम ने जहाँ रुमाल रखा था, उसमें हाथ डाला तो इतनी सारी मिठाइयाँ निकली कि हर किसी ने भर पेट खाया। बालमित्र सोचने लगे कि रुमाल में मिठाई कैसे आई होगी? घनश्याम ने उन सभी को एक और अद्भुत लीला का दर्शन कराया। उन्होंने आकाश की ओर दृष्टि की और एक साथ आठ स्त्रियाँ दिव्यरूप धारण करके घनश्याम के सामने उपस्थित हो गईं। सभी सिद्धियों के हाथ में बत्तीस प्रकार के पकवानों से भरे सोने के थाल थे। उन सिद्धियों के दूसरे हाथ में जल से भरे हुए स्वर्ण-पात्र थे। उसी समय सभी बालमित्र

पेड़ से नीचे उतर आए और गोलाकार पंक्ति में बैठ गए।

आठों सिद्धियों ने गीत गाते हुए घनश्याम और मित्रों को भरपेट भोजन कराया। सभी ने ठण्डा पानी पिया और सिद्धियों को धन्यवाद दिया। सिद्धियाँ वहाँ से अदृश्य हो गई। सूर्यास्त होने को था; अतः सभी बालमित्रों के साथ घनश्याम घर वापस आए।

## 29. जमात को भोजन, अभिमान का नाश

बालक घनश्याम एक दिन अपने पिताश्री के साथ छपिया पधारे थे। उसी दिन वहाँ संन्यासियों की एक जमात घूमती-फिरती गाँव में आ पहुँची। सभी ने खांपा तलैया के किनारे पड़ाव डाला था। इस जमात में कुल एक हजार साधु थे। कोई जटाधारी तो कोई दाढ़ीवाला, कोई भयंकर वेशधारी तो कोई श्वेत परिधान करनेवाला। किसीके हाथ में चिमटा था, तो किसीके हाथ में भाला, किसीके हाथ में दण्ड था, तो किसीके हाथ में तलवार, किसीके पास कटार थी, तो किसी के पास बछ्नीं। बाबाओं के मुखिया ने शंखध्वनि करके अपने आगमन का संकेत दिया। उन्होंने अपने-अपने तंबू लगा दिए। इसके पश्चात् वे स्नान के लिए खांपा तलैया पर जा पहुँचे।

घनश्याम अपने बालमित्रों वेणी, माधव, प्राग आदि के साथ उन वैरागियों को देखने निकल पड़े।

गाँव में, पाँच वैरागियों की एक टोली भिक्षा माँगने के लिए आ धमकी। संन्यासियों का भिक्षा मागने का तरीका ही अलग था। वे जहाँ जाते वहाँ जोर-जुल्म से लोगों को डरा-धमकाकर खाने का प्रबंध किया करते। छपिया में आकर भी उन्होंने गाँव के मुखिया मोतीभाई तरवाडी को ऐसे ही धमकाया था। वैरागियों का झुण्ड, धर्मदेवजी का घर ढूँढ़ते हुए वहाँ तक आ पहुँचा। अपने-अपने चिमटे उछालकर कहने लगे, 'हम एक हजार वैरागी खांपा तलैया पर उतरे हैं। हमारे लिए सीधा-सामग्री का प्रबंध करें।' घर के बाहर भारी शोरगुल सुनकर धर्मदेवजी बाहर निकले और बोले, 'बावाजी, घर में उतना अनाज और घी-तेल नहीं है कि हम एक हजार वैरागीओं को खिला सकें। सौ-पचास साधुओं का प्रबंध कर सकता हूँ। बाक़ी लोगों के लिए गाँव से माँग लीजिए।' यह सुनकर एक बावा भड़क उठा, 'तुमने हम

लोगों को क्या भिखारी समझ रखा है? हम नहीं जाएँगे। हमारे लिए इसी समय सीधा-सामान लाकर दो।’

अब पंडितजी चिंतित होकर सोचने लगे। उसी दौरान घनश्याम भी वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने अपने पिताश्री को चिंतित-सा देखकर पूछा, ‘पिताजी, आप इतने चिंतित क्यों हैं?’ धर्मदेवजी ने सारी बात बतलाई, तो घनश्याम ने हँसते हुए कहा, ‘पिताजी! आप कोई भी चिंता न करें। घर के कोठलों में से अनाज निकालाना आरंभ करें। अनाज की कोई कमी नहीं होगी।’

धर्मदेवजी ने सुवासिनी को बुलाकर सीधा-सामग्री निकालने का आदेश दिया। उन्होंने बावाओं के लिए जितनी चाही उतनी सामग्री निकालकर दे दी, किन्तु किसी भी वस्तु का घाटा नहीं हुआ। सभी कोठले ज्यों के त्यों भरे पड़े थे! लगता था, जैसे कहीं से कुछ निकाला ही न गया हो। यह चमत्कार देखकर लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा!

बावाओं की अब बहुत प्रसन्न थी। सभी ने भोजन पकाया धर्मदेवजी के परिवार को आशीर्वाद देकर चलते बने।

संध्या के समय घनश्याम पिताश्री के साथ तलैया की ओर घूमने





निकले थे। तालाब के आस-पास बाबाओं के तंबू लगे थे। एक तंबू के सामने लोगों की छोटी सी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। वहाँ शोरगुल सुनकर बालप्रभु पिताश्री के साथ वहाँ जा पहुँचे। देखा तो एक बाबा बाघाम्बर (बाघ की खाल) पर बैठा हुआ किसी से बहस कर रहा था। उसके बाघम्बर को देखकर घनश्याम ने बाघाम्बर पाने की इच्छा प्रकट की। धर्मदेवजी ने जब इसकी चर्चा की, तो वैरागी क्रोधित होकर अनाप-शनाप बकने लगा।

बाबा की बातें सुनकर घनश्याम ने सोचने लगे कि यह आडम्बरी हैं। साधु के वेश में भोले-भाले लोगों को ठगता है। इसे सबक तो सिखाना ही पड़ेगा। क्योंकि सच्चा साधु कभी अभिमानी नहीं होता, उसे क्रोध नहीं आता, वह पैसे का मोह नहीं रखता और हर प्रकार के त्याग में अपनी संतुष्टि समझता है। उन्होंने वैरागी से कहा, 'यह बाघम्बर मुझे दोगे?' यह सुनकर वैरागी ने क्रोधित होकर चिमटा उछाला और बोला, 'अरे, तुम क्या इस पर बैठोगे? बाघ की असली खाल है यह! तीन सौ रुपये से भी अधिक कीमत है इसकी। तेरी क्या औकात?'

ढोंगी बाबा की यह बात सुनकर घनश्याम ने मन ही मन कुछ संकल्प किया और तत्काल एक बाघ प्रकट हो गया। वैरागी बाबा की तो सिट्टी-पीट्टी गुम हो गई। वह भयभीत होकर 'बचाओ, बचाओ' की पुकार लगाते हुए, अपना थैला-चिमटा छोड़कर भाग खड़ा हुआ। जीवंत रूप में बाघ को देखकर, आसपास के लोग भयभीत होकर भागने लगे।

घनश्याम ने स्नेहभाव से बाघ को बुलाया, उसे शान्त किया और लोगों को शान्त करते हुए कहा, 'डरिए मत, यह किसी का कोई नुकसान नहीं करेगा। उस आडम्बरी वैरागी का घमण्ड तोड़ने के लिए ही मैंने इसे खड़ा किया था।' घनश्याम की सामर्थी देखकर सभी वैरागी अपनी भूलों की क्षमा-याचना करने लगे, और कहने लगे की 'हे प्रभु, आप तो साक्षात् भगवान हैं! हमारे द्वारा आपका जो भी अपमान हुआ हो, उसके लिए हम क्षमा माँगते हैं।'

कुछ ही क्षणों बाद बाघ वहाँ से अदृश्य हो गया। धर्मदेवजी, पुत्र घनश्याम को साथ लेकर घर वापस आए।

### 30. लक्ष्मीबाई ने देखा - एक चमत्कार !

बालप्रभु प्रतिदिन कोई न कोई लीला किया ही करते थे। कभी तो वे पड़ोसी के घर में घुसकर दही खा जाते तो कभी अपने बालमित्रों के घर में घुसकर दूध-दही खा लेते तथा अपने मित्रों को खिला देते।

एक दिन घनश्याम अपने मित्र वेणीराम के साथ उसके घर गए। वेणीराम की माता का नाम लक्ष्मीबाई था। जिस समय वे दोनों घर में आए, उस समय लक्ष्मीबाई आँगन में अनाज साफ कर रही थी। अवसर पाकर दोनों बालमित्र चुपके से रसोईघर में घुस गए। वहाँ सिकहर पर रखी हुई मक्खन की मटकी उतारी और दोनों मित्र मक्खन खाने लगे। इसी बीच एकाएक लक्ष्मीबाई रसोईघर में आई, देखा तो घनश्याम और वेणी, बड़े आनन्द से मक्खन खा रहे थे! लक्ष्मीबाई को देखते ही वेणी और घनश्याम वहाँ से भाग निकले।

लक्ष्मीबाई को बहुत क्रोध आया। वह उसी समय भक्तिमाता के पास जा पहुँची। उलाहना देते हुए उसने कहा, 'भक्तिमाँ, आपका लाड़ला घनश्याम हमेशा मेरे घर में घुसकर दूध-दही और मक्खन खा जाता है। अरे, उसने तो मेरे सीधे-सादे पुत्र वेणी को भी चोरी करना सिखा दिया है। आज मैंने स्वयं अपनी आँखों से इसे देखा है।'

भक्तिमाता यह सुनकर कहने लगीं, 'यदि तुमने देखा, तो उसे पकड़ा क्यों नहीं? मैं नहीं मानती कि मेरा घनश्याम चोरी कर सकता है। तुम्हारा वेणी ही चोरी में पारंगत है। वह मेरे घर में आकर कुछ न कुछ चुराकर खा लेता है।' फिर कहा, 'यदि तुम घनश्याम को चोरी करते हुए देखो, तो उसके हाथ-पैर बाँधकर मुझे बताना, तभी मैं सत्य मानूँगी।'

'आप ठीक कहती हैं। अब मैं वही करूँगी, जैसा आप चाहती हैं। घनश्याम के हाथ-पैर बंधे हुए देखकर आप अवश्य मान लेंगी कि वह चोर है।' इतना कहकर लक्ष्मीबाई वहाँ से चली गई।

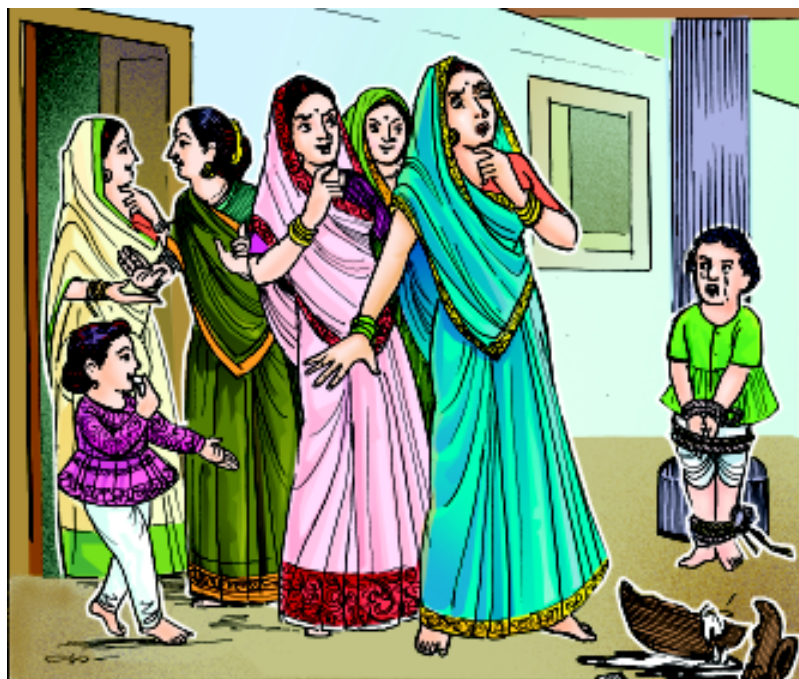
एक दिन दोपहर का लक्ष्मीबाई अपने कमरे में आराम कर रही थी। घर में चारों ओर सन्नाटा था। उस समय वेणी को साथ लेकर घनश्याम पिछले दरवाजे से घर में घुसे और सीधे रसोईघर में जाकर दही की मटकी

उतारकर जल्दी-जल्दी दही खाने लगे। कुछ खटखटाहट सुनकर लक्ष्मीबाई की नींद टूट गई। उसने सोचा कि हो सकता है बिल्ली रसोईघर में घुसी हो! वह दौड़कर सीधे रसोईघर में गई, देखा तो दोनों लड़कों के हाथ-मुँह दही से सने हुए थे और दही की मटकी जमीन पर लुढ़की पड़ी थी। लक्ष्मीबाई को देखकर दोनों बालक भागे, किन्तु वेणी को तो उसने जाने दिया परन्तु घनश्याम को पकड़ लिया। एक रस्सी से घनश्याम के हाथ-पैर बाँधे और कहने लगीं, 'आज मैं पूरे गाँव को दिखला दूँगी कि तुम चोर हो। सभी लोग 'मक्खन चोर' 'दही चोर' कहकर तुम्हारी फजीहत करेंगे।'

इतना कहकर वह बालप्रभु को कमरे में बंद करके भक्तिमाता के घर जा पहुँची। आँगन में खड़ी होकर शोर मचाते हुए उसने कहा, 'भक्तिमाँ, चलकर अपने लाड़ले की करतूत देखो। रंगे हाथ चोरी करते हुए मैंने उसे पकड़कर बाँध रखा है। आज सभी को मालूम हो जाएगा कि घनश्याम कितना बड़ा चोर है।' घर लौटते हुए लक्ष्मीबाई ने पड़ोश की कुछ औरतों को भी यह दृश्य दिखाने के लिए साथ में लेती गई।

इधर कमरे में बंद घनश्याम ने वेणीराम को अपने पास बुलाया और उसे खड़ा रहने को कहा। जब वह आया तो घनश्याम अपनी चमत्कारिक शक्ति से रस्सी के बंधनों से मुक्त हो गए और वेणीराम को खंभे के साथ बांध दिया। भक्तिमाता जब लक्ष्मीबाई के साथ वहाँ पहुँची तो पहले से ही यहाँ औरतों की भीड़ लगी हुई थी। लक्ष्मीबाई ने कहा, 'आइए, भक्तिमाता! अपनी ही आँखों से अपने पुत्र की करनी देख लीजिए।' इतना कहकर उसने कमरे का दरवाजा खोल दिया। किन्तु यह क्या? कमरे के भीतर वेणीराम के हाथ-पैर बंधे हुए थे और घनश्याम का तो कहीं पता ही नहीं था! वह दृश्य देखकर लक्ष्मीबाई को इतना आघात लगा कि उसकी तो आँखें ही फैल गई।

गाँव की स्त्रियाँ लक्ष्मीबाई को ही भला-बुरा कहने लगीं। उसी दौरान घनश्याम गुड़ खाते हुए वहाँ आकर खड़े हो गए और भक्तिमाता से पूछने लगे, 'माँ, यहाँ इतनी भीड़ क्यों लगी है?' भक्तिमाता ने घनश्याम का हाथ पकड़कर वेणीराम की हालत दिखलाई, तो घनश्याम हँसने लगे। लक्ष्मीबाई अभी तक उस चमत्कार को समझ न पा रही थी। वह सोच रही थी कि उसने तो घनश्याम के हाथ-पैर बाँधे थे, परन्तु यह कैसे हो गया? अंत में



उसने श्रद्धापूर्वक बालप्रभु से क्षमा-याचना की। अब उसे विश्वास हो गया था कि घनश्याम कोई सामान्य बालक नहीं है।

### 31. एकादशी की महिमा

अयोध्या में हनुमानगढ़ी का मंदिर बालप्रभु घनश्याम का सबसे प्रिय देवस्थान था। वे प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर पूजापाठ करते और हनुमानगढ़ी के मंदिर में कथा सुनने चले जाते। उन दिनों मंदिर के बाबा मोहनदासजी 'रामचरितमानस' की कथा सुना रहे थे। उस दिन कथाप्रसंग में एकादशी के माहात्म्य का वर्णन किया गया कि 'एकादशी का व्रत करने से एक हजार अश्वमेध यज्ञ करने के समान पुण्यलाभ मिलता है।'

यह बात सुनकर घनश्याम बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने महंतजी से पूछा, 'महंतजी, बहुत से लोग एकादशी का व्रत नहीं करते; इसका कारण क्या हो सकता है?'

बाबा मोहनदासजी, घनश्याम को मात्र बालक समझकर हँसी उड़ाते

हुए बोले, 'भगवान ने जो दुर्लभ मनुष्य शरीर दिया है, उसे एकादशी आदि व्रत रखकर कष्ट क्यों दें? यह शरीर दुःख भोगने के लिए तो मिला नहीं है।' वह आगे भी धृष्टतापूर्वक बोलने लगा, 'तुम्हें इस बात की जानकारी नहीं है कि जगन्नाथपुरी में जबसे एकादशी को ऊँचे टाँग दिया गया, तबसे कोई एकादशी का व्रत करता ही नहीं। अरे, भूखे-प्यासे रहकर आत्मा को कष्ट देने से क्या लाभ? जिसके पास खाने-पीने का ठिकाना नहीं, व्रत-उपवास ऐसे लोग करते हैं। इसलिए हे बालक! खाओ-पीओ और मौज करो। व्रत-उपवास सबकुछ व्यर्थ है।'।

यह सुनकर घनश्याम को लगा कि महंतजी गलत उपदेश दे रहे हैं। ऐसे उपदेशक द्वारा दी गई प्रेरणा व्यर्थ है। वास्तव में यह महंत लोगों को अपनी बातों से भ्रमित कर रहा है।' अगले ही क्षण उन्होंने महंत से कहा, 'महंतजी, गलत उपदेश मत दीजिए, जो शास्त्र-विरुद्ध हो। ऐसी बातें करके पुण्य के स्थान पर आप पाप के गट्ठर क्यों बाँध रहे हो? एकादशी की महिमा तो स्वयं भगवान ने ही कहीं है।'।

बालक घनश्याम की हिम्मत देखकर महंतजी क्रोधित हो गए। घनश्याम को डाँटते हुए उन्होंने कहा, 'कल के छोकरे! मुझे उपदेश देते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती?'

महंत का अहंकार देखकर घनश्याम ने सोचा कि इसका घमण्ड दूर करना चाहिए। उन्होंने उसी क्षण महंत की ओर दृष्टिपात किया और महंत को समाधि लग गई। उसने समाधिदशा में यमपुरी का भयावह दृश्य देखा। यमदूतों ने उसकी जमकर पिटाई की और कहा, 'लोगों को गलत उपदेश देकर कुमार्ग पर ले जानेवाले ढोंगी! आज तुम्हें बतला देंगे कि एकादशी का व्रत रखने से कितना बड़ा पुण्य होता है! यदि तुमने सच्चे हृदय से एकबार भी एकादशी का व्रत किया होता, तो आज तुम्हें इस नरक की यातना न मिलती।'।

समाधि अवस्था में मार खाकर आसन पर ही लुढ़के हुए बाबा का शरीर उछलने लगा। उसके मुख से दबी हुई चीख निकली, 'बचाओ, बचाओ, ये यमदूत मुझे मार डालेंगे। इनकी मार से मेरी हड्डी-पसली टूट गई है। मुझे बचाओ...बचाओ...'। जब महंत समाधि अवस्था से मुक्त हुआ, तो तुरंत घनश्याम के चरणों में गिर पड़ा। उसने श्रोताओं से कहा, 'सभाजनों,

घनश्याम कोई सामान्य बालक नहीं है, यह तो सर्वावतारी परमात्मा हैं! मैंने इनकी बातों को सत्य नहीं समझा, इनकी उपेक्षा की; इसीलिए मुझे यमपुरी की यातना सहनी पड़ी। एकादशी का व्रत न करने से ही मेरी ऐसी दुर्दशा हुई है। आज से मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि एकादशी का व्रत नियमित रूप से करूँगा और किसीको गलत उपदेश नहीं दूँगा। आप लोगों से भी निवेदन है कि श्रद्धापूर्वक एकादशी का व्रत रखें।'

महंत व्यासपीठ से नीचे उतरकर घनश्याम के समक्ष दंडवत् प्रणाम करने लगा। यह देखकर वहाँ उपस्थित सभी भक्त श्रीहरि को प्रणाम करके अपने-अपने घर गए।

### 32. घनश्याम को यज्ञोपवीत संस्कार

बालप्रभु घनश्याम की उम्र लगभग आठ वर्ष की हो चुकी थी। माता-पिता ने उन्हें यज्ञोपवीत देने का निश्चय किया। इस सन्दर्भ में उन्होंने गाँव के विद्वान एवं पवित्र पुरोहित हरिकृष्ण उपाध्याय को घर आने का निमंत्रण दिया। वे तुरंत अपनी पोथी लेकर धर्मदेवजी के घर आ पहुँचे।

पं. धर्मदेवजी ने सम्मानपूर्वक उनका आदर-सत्कार किया और उन्हें उचित आसन प्रदान किया। धर्मदेवजी ने कहा, 'आप मेरे पुत्र घनश्याम के यज्ञोपवीत के लिए अच्छा-सा मुहूर्त निकालिए।' यह सुनकर उपाध्यायजी ने अपनी पोथी खोली और कुछ गणना करने के पश्चात् फाल्गुन शुक्ला दशमी, सोमवार के दिन मुहूर्त निश्चित किया।

मुहूर्त के अनुसार यज्ञोपवीत की सारी तैयारियाँ शुरू हो गईं। धर्मदेवजी ने इस शुभ अवसर पर अपने सगे-सम्बन्धियों, परिचितों तथा साधुओं-ब्राह्मणों को कुमकुम पत्रिकाएँ भेजीं। घर को सुंदर ढंग से सजाया गया। घर की दीवारों पर पक्षियों और हिरण आदि के चित्र बनाए गए। घर के सामने नीम-वृक्ष के नीचे एक बड़ा-सा शामियाना लगाया गया। मंडप को भाँति-भाँति के रंगबिरंगी बेलबूटों, काँच के झालर तथा काँच से ही बने हुए खुबसूरत वृक्षों आदि से सजाया गया। काँच के वृक्षों में रखे गए दीपों, तथा रंगबिरंगे रेशमी वस्त्रों से सजाया गया मंडप बहुत ही सुंदर दिख रहा था। इसके अतिरिक्त पूरा शामियाना अशोकपत्र के बन्दनवारों से सजाया

गया था। अयोध्या के बरहट्टा मुहल्ले की शोभा आज कुछ और थी।

फाल्गुन शुक्ला दशमी के दिन बड़े सबरे धर्मदेव का घर शहनाई के सुरों से गूँज उठा। स्त्रियाँ मंगल गीत गाने लगीं। पुरोहित हरिकृष्ण उपाध्याय ब्राह्मणों के साथ मंत्रोच्चार करने लगे। यज्ञ में आहुतियाँ दी जाने लगीं। पुरोहित ने घनश्याम को संकल्प करवाया। बाद में रामबलि नाई को बुलाकर घनश्याम का मुण्डन करवाकर, स्नान आदि के बाद उन्हें पीताम्बर पहनाया गया।

घनश्याम ने यज्ञमण्डप में आते ही सर्वप्रथम अपने माता-पिता का चरणस्पर्श किया। इसके पश्चात् उन्होंने यज्ञ में आहुतियाँ दीं। बालप्रभु द्वारा किए जा रहे यज्ञ-विधानों को देखने तथा उनका दर्शन करने के लिए आकाश में उपस्थित ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि देवता पुष्पवृष्टि करने लगे। घनश्याम ने गुरुमंत्र प्राप्त करके ब्रह्मचारी के वेश में मुंज-मेखला धारण की। इसके साथ ही हाथ में पलाश का दण्ड और भिक्षापात्र भी ले लिया। तत्पश्चात् उन्होंने माता-पिता से भिक्षा माँगकर, उसे गुरु को अर्पण किया। दोपहर तक सारा विधि-विधान पूर्ण होने के बाद घनश्याम को जनेऊ अर्पण किया गया। दिन ढलते ही बटुक का वेश धारण करके घनश्याम बरुआ दौड़ाने के लिए गाँव से बाहर निकले।

मामा वशरामभाई, धर्मदेव और दूसरे सगे-सम्बन्धी तथा सबके पीछे मंगल गीत गाती स्त्रियाँ चल रही थीं। वे सभी शहर के चौराहे की ओर जा रही थी। चौक में आकर सभी सोच रहे थे कि 'अभी बरुआ दौड़ेगा और मामा घनश्याम को पकड़कर ले आएँगे। लेकिन घनश्याम के मन में एक दूसरी ही सोच चल रही थी कि, 'मुझे अनन्त जीवों का कल्याण करना है, इसलिए मुझे अब सीधा हिमालय का मार्ग चुनना है। वन-जंगल में पहुँचकर मुझे तपश्चर्या करनी है। इसीलिए मैं इतने वेग के साथ दौड़ूँगा कि मामा मुझे पकड़ ही नहीं पाएँगे। हिमालय से वापस लौटने पर मैं हर प्रांत में जाकर लोगों का उद्धार करूँगा।'

आखिर बरुआ दौड़ना प्रारंभ हुआ। घनश्याम के पीछे मामा वशराम भी खूब दौड़े, परंतु आज घनश्याम पकड़ में आनेवाले नहीं थे। थककर मामा ने घनश्याम की स्तुति की 'हे घनश्याम! आप पकड़ में आइए, वापस लौटिए, मेरी इज्जत बचाइए, आप चले जाएँगे तो माँ-बाप बहुत दुःखी होंगे।'





यह सुनकर घनश्याम सोचने लगे कि मुझे अपने निर्दोष एवं पवित्र माता-पिता को वैसे ही छोड़कर चले जाना ठीक नहीं है। कल्याण यात्रा के विषय में मैं अपने माता-पिता के देहत्याग के बाद ही सोचूँगा। इसी सोच-विचार में वे एक ही स्थान पर खड़े रह गए। मामा ने अति स्नेहपूर्वक उनको गोद में उठा लिया। जब घनश्याम मण्डप में पधारे, सभी बहुत प्रसन्न हुए। घनश्याम के हाथ में मामा ने पाँच रुपये दिए। उसे वे पिताजी को देकर सभी को नमस्कार करने लगे। माँ के साथ बैठकर उन्होंने घी, गुड़ और भात का भोजन किया।

धर्मदेवजी ने सभी ब्राह्मणों और साधुओं को भोजन करवाया तथा उन्हें दान-दक्षिणा देकर बिदा किया। इस शुभ अवसर पर गाँव में घर-घर मिठाइयाँ बाँटी गईं। चारों ओर घनश्याम और उनके माता-पिता की जयजयकार हो रही थी।

### 33. रामचन्द्र के रूप में दर्शन

एक दिन छपिया में घनश्याम अपने बालमित्रों के साथ मीन सरोवर में नहाने गए। घनश्याम ने कहा, 'चलो, हम पानी में पकड़दौंव खेलें।' सभी

लड़के खेल खेलने लगे। परंतु घनश्याम को कोई नहीं पकड़ पाता था। घनश्याम अच्छे तैराक भी थे। पानी में गहराई तक डुबकियाँ लगाते और दूर जाकर निकलते। अचानक उन्होंने कुछ सोचकर पानी में गहराई तक डुबकी लगाई और नीचे जाकर चुपचाप ध्यानस्थ हो गए। वे बहुत देर तक ऊपर नहीं आए तो, सभी लड़के चिंतित होकर सोचने लगे कि 'घनश्याम कहाँ गए? तालाब में रहनेवाले घड़ियाल ने कहीं घनश्याम का शिकार तो नहीं किया?'

किनारे पर कपड़े धो रहे मंछा धोबी के पास जाकर सभी लड़कों ने अपनी चिंता व्यक्त की। 'भाई मंछा, पानी के भीतर डुबकी लगाने के बाद अभी तक घनश्याम बाहर नहीं निकले। हमें चिंता हो रही है कि कहीं वे डूब तो नहीं गए? अथवा कोई घड़ियाल तो उनका शिकार नहीं कर गया होगा। तुम यदि पानी में कूदकर उनका पता लगाओ, तो हमारा बड़ा उपकार होगा।'

धोबी ने परिस्थिति देखकर पानी में छलांग लगाई। गहराई तक डुबकियाँ लेता रहा। उसने तालाब का कोना-कोना छान मारा, परंतु घनश्याम का कोई पता न चला। उसने थककर लड़कों से कहा, 'अब आप घनश्याम के पिताजी को बुलाकर सारी बात बता दो।'



यह सुनकर एक लड़का दौड़ता-भागता धर्मदेवजी के पास पहुँचा और सारी बातें बतलाई। धर्मदेवजी चिंता से व्याकुल हो गए। भक्तिमाता, रामप्रताप, वशरामभाई आदि परिवारजनों के साथ वे मीनसरोवर के किनारे आ पहुँचे और सोचने लगे कि किनारे पर बैठे रहने से क्या होगा? हमें कुछ प्रयास करना चाहिए। उस समय गहरे पानी में बैठे हुए घनश्याम ने सोचा 'मातापिता मेरी चिन्ता कर रहे हैं, अब मुझे पानी से बाहर निकलना चाहिए।' वे कुछ ही पलों में बाहर आ गए।

घनश्याम को देखते ही सभी आनंदित हो गए। सभी ने देखा कि घनश्याम तो पानी पर चलकर किनारे आ रहे हैं। उस समय सभी को घनश्याम के स्वरूप में रामचन्द्र भगवान के दर्शन हुए। गाँव के लोग आश्चर्यचकित रह गए। घनश्याम ने आकर माता-पिता को प्रणाम किया और कहा, 'मैं तो अपना काम करने के लिए गहरे जल में पैठ गया था। आप लोग क्यों चिन्ता करते थे?' घनश्याम की भोली-सी वाणी सुनकर भक्तिमाता ने घनश्याम को गले लगा लिया। धर्मपिता ने उस समय निर्णय लिया कि इस रामनवमी के मेले में घनश्याम को साथ लेकर ही अयोध्या की यात्रा करनी है।

### 34. पत्थर पर यात्रा

चैत्र मास के दिन थे। परिवार तथा ग्रामजनों के साथ धर्मदेवजी अयोध्या जाने के लिए रवाना हुए। सरयू नदी को पार करने के लिए सभी के लिए नाव का प्रबंध किया गया था। परन्तु एक ही नाव से लोगों को पार ले जाने में बहुत समय लग रहा था।

घनश्याम ने नाविक से कहा, 'आप हमारे लिए अलग नाव की व्यवस्था क्यों नहीं कर देते?' उसने कहा, 'यदि आप स्वतंत्ररूप से नाव चाहते हैं तो आपको सवाये दाम चुकाने पड़ेंगे। क्या आप लोग इसके लिए तैयार हैं?' घनश्याम ने कहा, 'सवाये दाम क्यों चुकायेंगे? जो कुछ मिलता है, वही मिलेगा।' परन्तु नाविक तैयार नहीं हुआ। घनश्याम ने कुछ सोचकर पिताजी से कहा, 'आप सब मेरे पीछे-पीछे चले आइए।'।

सभी लोगों को साथ में लेकर, घनश्याम कुछ दूर पानी में पड़ी हुई



एक विशाल शिला के पास आ पहुँचे। उन्होंने सभी लोगों से कहा, 'आप सब इस पत्थर पर अपना-अपना स्थान ग्रहण करें।' किसी चमत्कार की आशा लिए हर कोई घनश्याम के आदेशों का पालन कर रहा था। सभी ग्रामजनों को एक विशाल शिला पर बैठाकर घनश्याम स्वयं अपने बड़े भैया रामप्रतापजी के साथ एक छोटी शिला पर बिराजमान हुए। सभी देख रहे थे कि अब घनश्याम कौन-सा कौतुक करेंगे?

अचानक घनश्याम ने दायें हाथ से दोनों शिलाओं का स्पर्श किया कि तुरन्त दोनों शिलाएँ नाव की तरह पानी में तैरने लगीं। किनारे पर खड़े लोग और नाविक यह देखकर स्तब्ध रह गए और शोर मचाते हुए कहने लगे 'अरे, यह बालक तो साक्षात् भगवान रामचन्द्र ही हैं।' इतना कहकर दूर से ही बालप्रभु को बार-बार वन्दन करने लगे, कुछ देर में सरयू पार करके सभी अयोध्या की ओर चल दिए।

### 35. मौसी को चमत्कार

एक दिन छपिया में भक्तिमाता के घर उनकी बहनें-वसन्ताबाई और चन्दनबाई आई थी। वे अपने-अपने पुत्र माणिकधर और बस्ती को साथ में लेकर आई थीं। दोनों मौसियों ने भक्तिदेवी से पूछा, 'बहन, घनश्याम घर

में नहीं हैं?’ उन्होंने कहा, ‘वे तो फिरोजपुर गए हैं, अभी आ जाएँगे।’ संध्या ढलते ही घनश्याम और इच्छाराम धर्मदेवजी के साथ घर लौटे। मौसियों ने बड़े प्यार से दोनों को बताशे बाँटे और बाद में भोजन करके विश्राम किया।

प्रातःकाल वसन्ताबाई और चन्दनबाई चक्की पर गेहूँ पीसने बैठीं। चन्दनबाई उस समय तुलसीदासजी कृत प्रभाती पद गाने लगी: ‘उठो लाल, प्रभात भयो है।’ यह सुनकर पास में ही पलंग पर सोये हुए घनश्याम बोले, ‘मौसीजी! मैं तो जाग ही रहा हूँ, उठने को क्यों कहती हैं? मेरा कुछ काम है क्या?’ यह सुनकर मौसी ने कहा, ‘अरे भाई, तुम्हें कौन बुलाता है? हम तो भगवान को जगाती हैं?’

यह सुनकर बिछौने में पड़े-पड़े घनश्याम ने हाथ फैलाया और चक्की पर रख दिया। दोनों मौसियों ने मिलकर चक्की घुमाने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन चक्की हिली तक नहीं। तब घनश्याम बोले, ‘मौसी! तुम मुझे ही जगाती थीं ऐसा कहो, तुम जिस भगवान को जगाती थीं, उसीने इस चक्की पर हाथ रखा है।’ यह सुनकर भी दोनों मौसियों ने घनश्याम का हाथ चक्की पर से हटाने का भरसक प्रयास किया, लेकिन वे हाथ को हिला न सकीं।



इतने में भक्तिमाता दीया लेकर उस कमरे में आई। दोनों मौसियों ने भक्तिमाता से कहा, 'घनश्याम को कह दो कि चक्की पर से अपना हाथ हटा ले, हमसे तो यह हाथ नहीं हटता।' भक्तिमाता ने तुरन्त आदेश दिया, 'घनश्याम! हाथ हटा लो।' माता की आज्ञा पाते ही घनश्याम ने कहा, 'माँ! दोनों मौसियों से पहले यह पूछो कि वे किसे जगाती थीं?' यह सुनते ही वसन्ताबाई बीच में ही बोल उठीं, 'अरे भाई! हम तुम्हीं को जगाती थीं, बस, अब तो पीसने दो।'

घनश्याम ने हँसते हुए, 'पहले से ही यदि सच बोल दिया होता, तो चक्की रुकती ही क्यों?' दोनों ने बड़े प्यार से कहा, 'वास्तव में तुम ही परमेश्वर हो, बेटा, तुम्हारे ऐश्वर्य को हमने बार-बार देखा है, लेकिन हम भूल ही जाते हैं। तुमसे आज हम इसीलिए क्षमा माँगती हूँ।' इतना कहकर दोनों ने घनश्याम के चरणों प्रणाम किया।

### 36. सारी रसोई खा गए

रामनवमी का उत्सव धर्मदेव ने अपने घर बड़े धूमधाम से मनाने का निश्चय किया। उन्होंने निमंत्रण पत्रिका लिखकर अपने सारे परिवार को अयोध्या बुला लिया। आसपास के गाँवों से काफी सगे-सम्बन्धी अष्टमी के दिन ही आ गए थे। सभी ने रामनवमी के दिन उपवास किया और सारा दिन कथा, कीर्तन तथा भजन में बीता दिया। दशमी के दिन प्रातःकाल उठकर भक्तिमाता और सुवासिनी भाभी ने सभी के लिए स्वादिष्ट रसोई तैयार की। घनश्याम भक्तिमाता के साथ प्रातःकाल उठकर तैयार हो गए। रसोई तैयार होते ही भक्तिमाता ने ठाकुरजी के लिए थाल तैयार कर दिया।

उस समय घनश्याम ने कहा, 'माँ, मुझे भूख लगी है।' यह सुनकर थाल से थोड़ी-थोड़ी सामग्री निकालकर माँ ने एक थाली परोसकर घनश्याम के सामने रख दी। घनश्याम ने कुछ पलों में ही उसे चट कर दिया। फिर ठाकुरजी के थाल से भोजन करने लगे। वह भी समाप्त हो गया तो वे रसोई के बड़े बरतनों में से निकालकर भोजन करने लगे। देखते ही देखते उन्होंने रसोई में तैयार किए गए सारा भोजन समाप्त कर दिया। वे पानी पीकर घर





से बाहर निकल गए।

जब भक्तिमाता रसोई में आई और देखा तो अचम्भित रह गई। अब क्या करूँ? घनश्याम ने सारे बरतन खाली कर दिए। उन्होंने धर्मदेवजी से कहा, 'अब तो बाजार में जाकर दाल, चावल, आटा, घी, गुड़ सब कुछ खरीद कर ले आइए। घनश्याम तो इतने सारे लोगों की रसोई अकेले ही खा गया! मुझे फिर से रसोई बनानी पड़ेगी, वरना मेहमानों को क्या खिलाएँगे?'

यह सुनकर घनश्याम ने कहा, 'माँ, मैंने तो कुछ नहीं खाया। रसोई तो ज्यों की त्यों पड़ी है। कुछ भी कम नहीं हुआ। चलें देखते हैं। भक्तिमाता ने कहा, 'अब सयाने बनने की कोशिश मत करो मैंने और सुवासिनी ने अभी जाकर सबकुछ देखा है। सारे बरतन खाली पड़े हैं।' घनश्याम ने कहा, 'अरे मैया चलो तो सही!' इतना कहकर वे हाथ खींचकर माता को रसोईघर में ले गए।

वहाँ देखा तो चमत्कार! सारे बरतन पहले की तरह पूरे भरे पड़े थे! भक्तिमाता गद्गद होकर घनश्याम को गले लगाकर प्यार करने लगीं। धर्मदेवजी ने प्रसन्न होकर आए हुए मेहमानों को भरपेट भोजन करवाया।



### 37. गौरी गाय की खोज में

धर्मदेवजी की गोशाला में बहुत सी गायें थीं। उनमें से एक का नाम था गोमती। गोमती घनश्याम को बहुत ही प्यारी थी। उसकी दो बछिया थी, एक का नाम था गौरी और दूसरी का नाम था कपिला।

प्रतिदिन सुबह एक ग्वाला आकर उनकी गायों को गाँव से दूर तक चराने ले जाता था। दिनभर चराकर शाम को उसे वापस ले आता। एक दिन शाम को वह सारी गायों को लेकर घर आ गया। परन्तु आज गौरी नहीं दिख रही थी। माँ ने कहा, 'जाकर गौरी को ढूँढ़ निकालो।' ग्वाला उसे खोजने के लिए दूर जंगल तक चला गया। परन्तु गौरी कहीं नहीं मिली। उसने आकर धर्मदेव से पूरी बात बता दी।

धर्मदेव तो रामप्रताप और घनश्याम को लेकर गौरी गाय की खोज के लिए निकल पड़े। आसपास कई खेतों में और वन-उपवनों में घूमे, कुछ ही दूरी पर जंगल शुरू होता जाता था। सभी ने जंगल में प्रवेश किया। पूर्णिमा की रात होने से सर्वत्र चन्द्रमा की चांदनी फैल रही थी। दूर तक जाने पर भी गौरी के होने का कहीं संकेत भी नहीं मिल रहा था। अचानक घनश्याम और रामप्रतापभाई ने जोर से गौरी गाय को पुकारा। आवाज़ सुनते ही वह वह रँभाती हुई दूर की झाड़ी से निकलकर घनश्याम के पास आ पहुँची।



सभी बहुत प्रसन्न हुए।

वे जंगल से बाहर निकल ही रहे थे की अचानक धर्मदेव स्थिर हो गए। घनश्याम ने पूछा, 'पिताजी! क्यों अचानक रुक गए?' धर्मदेव ने मौन रह कर एक वृक्ष की ओर संकेत किया। घनश्याम ने देखा तो वहाँ एक विकराल शेर उनकी ओर शोले बरसाती नजरों से देख रहा था। मनुष्य की गन्ध आते ही वह दहाड़ता हुआ उठ बैठा। धर्मदेव, रामप्रताप और गौरी गाय थर-थर काँपने लगे। धर्मदेव को लगा कि अब चारों का मामला खतम है, परन्तु घनश्याम बिना किसी डर से सीधे शेर के सामने पहुँच गए। उनकी आँखें मिलते ही वह गाय की तरह शान्त हो गया। घनश्याम के सामने झुका और उनकी प्रदक्षिणा करके अपने स्थान पर जाकर सो गया।

'चलिए पिताजी! बिल्कुल मत डरें, गाय को लेकर मेरे पीछे-पीछे चले आइए, शेर अब कुछ भी नहीं करेगा।' धर्मदेव और रामप्रताप गौरी के साथ शेर के पास होते हुए आगे की ओर निकल गए। कुछ ही देर में वे जंगल पार करके एक छोटे से गाँव में पहुँच गए। वहाँ उनके सगे मान ओझा रहते थे, वहाँ रात बिताकर वे दूसरे दिन गाय को लेकर घर वापस लौटे। भक्तिमाता सभी को सुरक्षित देख कर और घनश्याम का चमत्कार सुनकर बहुत प्रसन्न हुईं।

### 38. पानी पर चले

एक दिन घनश्याम छोटे भाई इच्छाराम तथा बालमित्रों के साथ मीन-सरोवर की ओर खेलने के लिए गए। सरोवर में स्नान किया और बरगद के पेड़ के नीचे इमली-पीपली खेल खेलने लगे। संध्या के समय बरसात आने लगी तो सभी ने सोचा कि कुछ देर में बरसात बन्द हो जाने पर घर चलेंगे।' परन्तु अब तो मूसलाधार बरसात शुरू हो गई। चारों ओर घना अँधेरा छा गया। बिजली की गड़गड़ाहट से इच्छाराम और उसके समान छोटे लड़के जोरों से रोने लगे। देखते ही देखते चारों ओर पानी ही पानी हो गया। वेणी, माधव और प्राग को भी चिन्ता होने लगी कि अब क्या होगा? घर कैसे पहुँचेंगे? इच्छाराम ने घनश्याम से कहा, 'इतने पानी में हम कैसे जाएँगे? मैं तो पानी में डूब ही जाऊँगा!'



घनश्याम ने सभी को आश्वासन दिया, और कहा, 'आप लोग घबड़ते क्यों हैं? चलो, पेड़ से उतरो और मेरे साथ चलो। मैं सब से आगे चलूँगा। इच्छाराम! तू मेरी धोती पकड़कर मेरे पीछे-पीछे चलना। इसी तरह सब एक दूसरे की धोती पकड़कर मेरे पीछे-पीछे चले आओ। हम पानी पर चलकर घर की ओर निकल जायेंगे, और बरसात से मत डरना। एक बूंद भी हमें नहीं छूएगी।' इतना कहकर घनश्याम सबसे पहले पेड़ से नीचे उतरे। पीछे इच्छाराम और उसके पीछे वेणी, प्राग इस तरह एक के बाद एक, एक-दूसरे की धोती पकड़कर घनश्याम के पीछे-पीछे चलने लगे। पानी आते ही घनश्याम के साथ सभी लड़के पानी के ऊपर उठ गए! सभी एक ही पंक्ति में गाँव की ओर चलने लगे। उनके चारों ओर बरसात बरस रही थी, परंतु किसी बच्चे पर पानी की एक भी बूंद नहीं गिरी।

सभी नदी पार कर गाँव तक पहुँच गए। वहाँ धर्मदेव, भक्तिमाता, तथा दूसरे लड़कों की माँ-बाप अपने बच्चों की तलाश के लिए खड़े दिखाई दिए। सभी ने दूर से यह अनुपम दृश्य देखा तो आश्चर्यचकित रह गए। घनश्याम के शरीर से दिव्य तेज की धारा निकल रही थी। सभीने भगवान जानकर उनको बार-बार नमस्कार किया तथा अपने-अपने बच्चों के साथ घर चले गए।

### 39. चोर चिपक गए

पं. धर्मदेवजी ने बड़े परिश्रम से एक उपवन तैयार किया था। घर से थोड़ी ही दूरी पर स्थित उस उपवन में उन्होंने भाँति-भाँति के फल-फूल उगाए थे। धर्मदेव तथा रामप्रतापजी हमेशा इस उद्यान की देखभाल किया करते थे।

एकबार दोनों ने बड़े चाव से कटहल के पेड़ उगाए। उन्होंने सोचा कि कटहल पूरे पक जाएँगे तो घर लाकर भक्तिमाता को खिलाएँगे। परंतु एक दिन, देर रात गए दो चोर बाड़ तोड़कर बगीचे में आ गए। उन्होंने देखा कि कटहल बहुत ही अच्छे पक गए हैं। हम कटहल को बोरे भर लेंगे और कल सुबह उन्हें बाज़ार जाकर बेच देंगे, तो काफी पैसे मिलेंगे।' दोनों पेड़ पर चढ़े और जैसे ही कटहल तोड़ने के लिए हाथ लगाया कि दोनों के हाथ कटहल पर चिपक गए। चारों ने बहुत प्रयत्न किया लेकिन न तो उनके हाथ उखड़ रहे थे न तो कटहल डाली से टूट रहे थे। समय बीतता गया और प्रातःकाल हो गया।

धर्मदेवजी रोज की तरह हाथ में पानी का लोटा लेकर बगीचे में दातून करने आ पहुँचे। पेड़ पर लटके हुए चोरों ने उनको देखा तो आँसू गिराने लगे। मन ही मन पछताते हुए प्रार्थना करने लगे कि, 'अब हम कभी चोरी नहीं करेंगे, बिना पूछे, किसीकी चीज़ कभी नहीं लेंगे। हे भगवान! हमारी रक्षा करें। यदि रामप्रतापभाई आएँगे तो हमारी हड्डियाँ तोड़ देंगे, हम पुनः पुनः प्रार्थना करते हैं कि हमें बचा लीजिए।' दोनों चोर प्रार्थना कर रहे थे कि दूर से उन्होंने रामप्रताप और घनश्याम को आते देख लिया। अब तो उनकी रही सही हिम्मत भी पस्त हो गई।

रामप्रतापजी ने चोरों को देखा तो उन्होंने लाठी उठा ली और गरज़ने लगे, 'क्यों मुफ्त का माल उड़ाने के लिए आए हो? तुम्हारे बाप का बगीचा है क्या? अभी बताऊँगा तुम्हें, तुम्हारी नानी याद करा दूँ।' परन्तु घनश्याम ने उनको रोक लिया। पिताश्री को साथ लेकर घनश्याम पेड़ के पास आए, चोरों ने सिसकते हुए क्षमायाचना की और कहा, 'हे पंडितजी! हमारी गलती हो गई, हम कटहल की चोरी करने आए थे, पर देखो हमारा क्या हाल हुआ। हमारे हाथ ही कटहल के साथ चिपक गए हैं, न तो हम पेड़ से उतर



सकते हैं, न तो हम चोरी करके भाग सकते हैं। हमारे अपराध को क्षमा कीजिए, हम दुबारा ऐसा कभी नहीं करेंगे।’

चोरों की प्रार्थना सुनकर रामप्रताप और धर्मदेव दोनों विस्मित हो गए। दोनों ने घनश्याम की ओर देखा। चोरों को चिपकाने का काम घनश्याम के सिवा और कौन कर सकता है? घनश्याम ने चोरों की ओर दृष्टिपात किया।

दोनों के हाथ छूट गए। नीचे उतरकर दोनों ने घनश्याम को प्रणाम किया, और धर्मदेव से माफ़ी माँगी। घनश्याम ने उनको उपदेश देते हुए कहा, 'भाइयों, चोरी कभी मत करना, चोरी करना महापाप है।' इतना कहकर दोनों को एक-एक कटहल देकर आशीर्वाद दिया। फिर एकबार प्रणाम करके दोनों ने विदा दी।

## 40. दो रूपों में दर्शन

दीपावली के दिन प्रारंभ हुए। धर्मदेवजी और भक्तिमाता ने धन-त्रयोदशी के दिन से अन्नकूट के उत्सव की तैयारी शुरू कर दी थी। घर में ठाकुरजी के नैवेद्य के लिए विभिन्न सामग्री तैयार होने लगी। लड्डू, जलेबी, मैसूब, मोहनथाल, साटा, बरफी, पेडे आदि मिठाइयाँ और सेव, चिवड़ा, भुजिया, चोलासींग आदि कई फरसान तैयार किए गए थे। दीपावली के दिन प्रातःकाल से भक्तिमाता और सुवासिनी भाभी अन्य महिलाओं के साथ अन्नकूट की सेवा में लग गई थीं।

भक्तिमाता ने खीर, श्रीखण्ड, राबड़ी, हलुवा, मीठा भात आदि पदार्थ बनाए। सुवासिनी भाभी ने ढोकलां, परांठा, आलुदम, पकोड़े, कचौड़ी आदि व्यंजन बनाए। किसीने विविध प्रकार की सब्जियाँ तैयार की। किसीने अनेक प्रकार के दालें बनाई तथा किसीने पूड़ी, रोटी, पकौड़ी, खाजा आदि बनाये। रामप्रतापजी बगीचे से चीकू, अनार, कटहल, अंगूर, ईख, केले, संतरे, काजू आदि फल ले आए।

घनश्याम पिताजी के साथ ठाकुरजी का कमरा सजाने में लग गए। ठाकुरजी की मूर्ति को सुंदर वस्त्र परिधान करवाया। चारों ओर बन्दनवार बाँध दिए। दीपक जलाकर कमरा सुशोभित किया। ग्यारह बज गए थे। ठाकुरजी के पास थाल सजाना शुरू हो गया। ठीक बारह बजे ठाकुरजी के पास मिठाई, नमकीन, सब्जी, दलहन आदि पदार्थों के थाल और फल सजा दिए गए। नैवेद्य के साथ पानबीड़े भी रख दिए गए। चाँदी के पात्र में पानी भी रख दिया गया। अन्त में ठाकुरजी के समक्ष परिवारजनों ने बैठकर समूह में नैवेद्यगान गाया। धर्मदेवजी ने बड़े भक्तिभाव पूर्वक आरती की। गाँव के लोग बड़ी संख्या में दर्शन के लिए एकत्रित हो गए थे।



उसी वक्त एक चमत्कार हुआ, लोग कभी धर्मदेवजी की ओर ताकते, तो कभी ठाकुरजी की ओर देखते। सभीको ठाकुरजी के पास घनश्याम दिखाई देते थे और धर्मदेवजी के साथ आरती उतारते घनश्याम भी दिखाई देते थे। आरती समाप्त होने तक सभी को घनश्याम के दो रूप दिखाई दिए। गाँववालों के आश्चर्य का पार न रहा। सभी ठाकुरजी और घनश्याम को वन्दन करने लगे।





धर्मदेवजी को फिर एकबार प्रतीति हो गई कि वास्तव में घनश्याम ही स्वयं भगवान हैं। उन्होंने तुरन्त एक बड़े थाल में अन्नकूट की सामग्रियाँ रखी और घनश्याम को भोजन के लिए बिठाया। घनश्याम छोटेभाई इच्छाराम को बुलाकर ठाकुरजी की मूर्ति के सामने ही भोजन के लिए बैठ गए। सभी को दोपहर के दो बजे तक अन्नकूट दर्शन हुआ। तत्पश्चात् घनश्याम ने स्वयं अपने हाथ से ग्रामजनों को प्रसाद बाँटा।

स्वयं भगवान के हाथों प्रसादी पाकर सभी धन्य हुए।

#### 41. अन्धे को आँखें दीं

अयोध्या में धर्मदेव के घर के पीछे महादेवजी का एक छोटा-सा मन्दिर था। वहाँ दर्शन करते समय घनश्याम ने देवीबक्ष नाम के एक कायस्थ को देखा। वह शिवजी से न माँगने जैसी चीज़ माँग रहा था। यह सुनकर घनश्याम उदास हो गए, उनको घर छोड़कर तपश्चर्या के लिए कहीं दूर चले जाने की इच्छा हो गई। उन्होंने सोचा, 'दुनिया में ऐसे ही कई अज्ञानी जीव रहे होंगे, उनको उपदेश देकर उनका कल्याण करना ही मेरा उद्देश्य है। मुझे अब चले जाना चाहिए। ऐसे विचार के साथ वे उदास मन से घर लौटे।

धर्मदेवजी ने पूछा, 'बेटा घनश्याम! आज इतने उदास क्यों?' घनश्याम ने मुस्कराकर तुरन्त कहा, 'नहीं, नहीं मैं उदास कहाँ हूँ?' कहकर उन्होंने बात उड़ा दी।

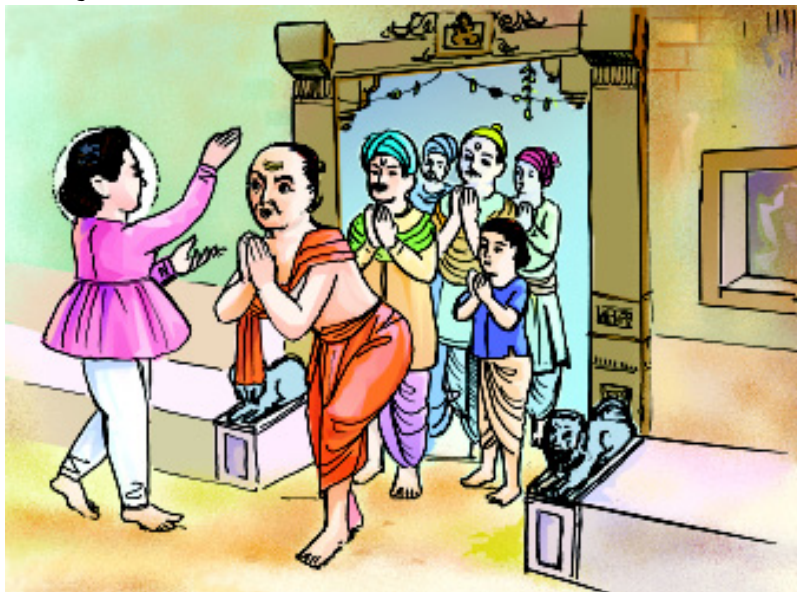
दूसरे दिन वे अयोध्या स्थित विद्याकुण्ड मन्दिर में दर्शन करने पधारे। वहाँ के पुजारी व्रजविहारीजी अन्ध ब्राह्मण थे। उनको पूरी रामायण और पूरा महाभारत कण्ठस्थ था! वे हमेशा रामायण की कथा सुनाते रहते। एक दिन कथा में रामचन्द्र भगवान के वन-प्रस्थान का प्रसंग चल रहा था।

यह सुनकर घनश्याम को फिर एकबार घर छोड़कर वन में जाने की तीव्र इच्छा होने लगी। उन्होंने कथा के बीच व्रजविहारीजी महाराज से वैराग्य सम्बन्धी प्रश्न पूछना आरंभ कर दिया। परंतु कथाकार विप्र ने कहा, 'बेटा घनश्याम, चालू कथा में प्रश्न करके विघ्न नहीं डालना चाहिए। कथा के बीच प्रश्न नहीं पूछते, यदि तुम्हें कुछ पूछना ही है, तो मेरे घर आकर पूछना।' घनश्याम यह सुनकर उदास हो गए और मन्दिर के बाहर एक

छोटे-से ओटे पर जाकर बैठ गए। यह देखकर भक्तों ने ब्रजविहारीजी से कहा, 'विप्रवर, आप घनश्याम से परिचित नहीं लगते। वे अपने आप में एक अनन्य विभूति हैं। आप उनके पास जाइए और आशीर्वाद लीजिए। वे चमत्कारिक बालक हैं, हम तो कहेंगे कि वे स्वयं भगवान ही हैं, उनको कभी उदास मत करना।' ब्रजविहारीजी को अपनी गलती महसूस हुई। वे तुरंत अपने शिष्य का हाथ पकड़कर घनश्याम के पास आ पहुँचे।

प्रणाम करके बार-बार क्षमायाचना की और कहा, 'हे घनश्याम! आप तो परमेश्वर हैं, चमत्कारिक हैं, मुझ अन्धे को आँखें दीजिए ताकि मैं भगवान का दर्शन कर सकूँ। उनकी पूजा कर सकूँ तथा कथा एवं भजन भी ठीक ढंग से सुना सकूँ। मेरे समान गरीब का उद्धार कीजिए, मुझ पर कृपा करके आशीर्वाद देकर आँखें दीजिए।'

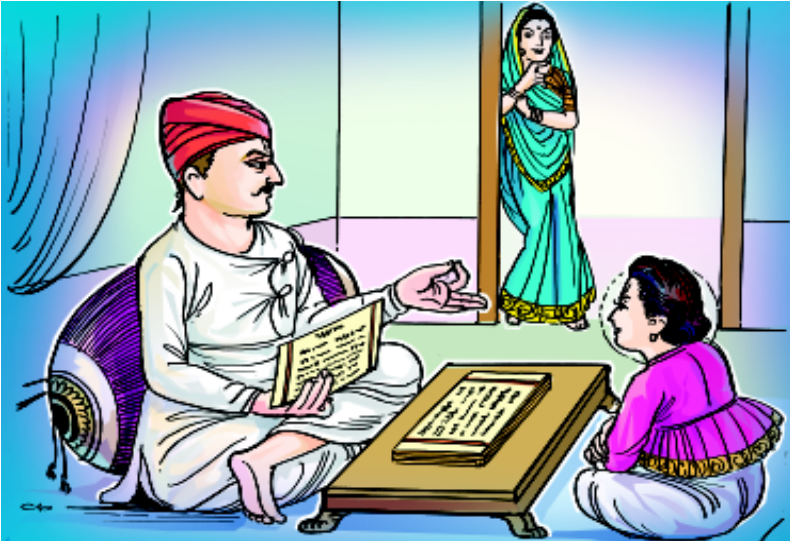
घनश्याम को इस विद्वान ब्राह्मण पर दया आ गई, उनके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। उसी पल ब्रजविहारीजी की आँखों से रोशनी फूट पड़ी। वे सबकुछ देखने लगे थे। गद्गद होकर उन्होंने प्रभु को प्रणाम किया। आज साथ में उपस्थित सभी को घनश्याम के स्वरूप में भगवान रामचन्द्रजी के दर्शन हुए। सभी को आशीर्वाद देकर घनश्याम अपने घर लौट गए।



## 42. नित्यक्रम

घनश्याम प्रतिदिन प्रातः चार बजे उठते थे। जागकर बिस्तर में ही बैठकर प्रभुस्मरण करके वे मित्रों के साथ सरयू नदी पर स्नान के लिए पहुँच जाते थे। शौच, दातून के बाद स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूजा एवं ध्यान में एकाग्र हो जाते।

घर आकर गाय का दूध पीकर वे अपने विद्वान पिताजी से शास्त्रों का अध्ययन करने लगते। धर्मदेवजी उनको व्याकरण, न्याय, धर्मशास्त्र, वेद, उपनिषद्, गीता, सांख्य, योग आदि शास्त्रों का बड़ी गहराई से अध्ययन करवाते। घनश्याम भी पूर्ण एकाग्रता से इन ग्रन्थों के रहस्यों को आत्मसात् करते रहते। देर तक पढ़ाई के बाद वे स्वयं भी उन ग्रन्थों का चिंतन करने लगते। सुबह नौ बजे अयोध्या के अनेक मन्दिरों में दर्शन करना उनका नित्यक्रम था। जहाँ भी रामायण की कथा होती, वहाँ बैठकर वे एकचित्त होकर कथाश्रवण किया करते। ठीक बारह बजे घर आकर स्वस्थ होकर वे पिताजी के साथ भोजन करते और स्वाध्याय में लग जाते। दोपहर तीन बजे नदी पर स्नान करना, मित्रों के साथ देवदर्शन करना तथा सन्ध्या आरती के समय हनुमानगढ़ी पर जाना कभी नहीं भूलते।



सन्ध्या वंदन के बाद घर लौटकर स्वच्छ होकर वे पिताजी के साथ रात्रि-भोजन करने बैठते। रात्रि के समय धर्मपिता रामायण, महाभारत और पुराणों के कथाप्रसंग से घनश्याम को भारत में हुए विभिन्न अवतारों, राजाओं तथा ऋषियों की कहानी सुनाते। घनश्याम ध्यानपूर्वक उसे सुनते, और कहानियों के मूल्यों को आत्मसात् करते रहते। तत्पश्चात् विश्राम के लिए जाते। कितना सुन्दर था उनका नित्यक्रम!

### 43. काशी की सभा में दिग्विजय

एकबार काशी के तत्कालीन राजा ने एक बड़े यज्ञ का आयोजन किया। उस समय उन्होंने देश के सारे विद्वान ब्राह्मणों को निमंत्रित किया था। अयोध्या के सम्मानीय धर्मदेवजी भी इस समारोह में सादर निमंत्रित थे।

यज्ञ के अगले ही दिन पूरी काशी नगरी विभिन्न सम्प्रदायों के विद्वान ब्राह्मणों से ऊभरने लगी। राजा ने सभी का स्वागत किया। धर्मदेव भी एक एक सुंदर आसन पर घनश्याम को साथ लिए बिराजमान हुए। उनको राजाने अपने समीप ही आसन दिया था।

देखते ही देखते पण्डितों में तत्त्वचर्चा का आरंभ हो गया। अद्वैतवादी पण्डितों ने कहा कि 'केवल ब्रह्म ही सत्य है, बाकी सब मिथ्या है'; जब कि द्वैतमतवादी कहने लगे कि 'ब्रह्म, जीव तथा जगत-तीनों सत्य हैं।'

दोनों पक्ष के पंडित अपने-अपने मत की स्थापना बड़े आग्रहपूर्वक तथा शास्त्र प्रमाणों के साथ कर रहे थे। बात इतनी बढ़ गई कि बहस से ऊबकर कुछ बुद्धिमान पण्डितों ने राजा से निवेदन किया कि, 'यह विवाद यदि बढ़ गया तो आपस में कटुता फैलेगी, झगड़ा भी हो सकता है। इसलिए किसी तटस्थ विद्वान को मध्यस्थी बनाकर इस विवाद को अभी ही समेटना चाहिए।'

राजा ने उसी क्षण धर्मदेवजी से मध्यस्थता करने का निवेदन किया। सभी पण्डितों ने उनकी मध्यस्थता को स्वीकार किया और चर्चा आगे चलने लगी। कुछ देर के बाद घनश्याम ने पिताजी से कहा, 'पिताजी, यदि आप आज्ञा दें तो मैं इस विवाद का निर्णय दूँ।' धर्मदेवजी तथा राजा ने मिलकर घनश्याम को निर्णय देने के लिए सम्मति दी। सारे सभागृह में एक विशिष्ट कुतूहल फैल गया।



छोटे से घनश्याम विनम्रतापूर्वक खड़े हुए। पिताजी को प्रणाम किया और दोनों मतों की खामियाँ तथा खूबियाँ बड़ी विद्वत्तापूर्ण शैली में व्यक्त की तथा अपनी रुचि 'विशिष्टाद्वैत' मत में बता दी। उनके निर्णय को सुनकर सारे पण्डित चकित रह गए। पंडितों तथा राजा ने घनश्याम का निर्णय मान्य रखा, इस प्रकार विद्वत् सभा में विजयी होकर घनश्याम ने अपने प्राकट्य के उद्देश्य को फिर एकबार लोगों के सामने रख दिया। सारी सभा घनश्याम की जयकार करने लगी तथा राजा ने भी उनको पारितोषिक देकर सम्मानित किया।

#### 44. भक्तिमाता और धर्मपिता देहोत्सर्ग

घनश्याम अब ग्यारह साल के हो चुके थे। भक्तिमाता और धर्मदेवजी वृद्धावस्था तक पहुँच चुके थे। एक दिन भक्तिमाता का शरीर बुखार के कारण तपने लगा। कुछ ही दिनों में बिमारी के कारण वे अशक्त रहने लगीं। घनश्याम हर प्रकार से माँ की सेवा में लगे रहते। परंतु एक दिन माता ने तीनों पुत्रों को अपने पास बुलाया और कहा, 'बेटा, मेरी बीमारी बढ़ती जा रही है, सारा शरीर पीड़ा से टूट रहा है। मुझे लगता है कि अब मेरे लिए ज्यादा दिन शेष नहीं बचे। रामप्रताप, सुवासिनी, आप दोनों घनश्याम का पूरा खयाल रखना। इच्छाराम को ठीक ढंग से संभालना और घनश्याम, इच्छाराम! आप दोनों भी निरंतर बड़े भैया तथा भाभी की आज्ञा में रहना।'

यह सुनकर रामप्रताप गद्गदित हो गए। उन्होंने माता की हर बात को स्वीकार किया। धर्मदेवजी और रामप्रतापजी ने चिट्ठी भेजकर अपने सभी सगे-सम्बन्धियों को बुलवा लिया। भक्तिमाता का अन्तकाल नजदीक था, घनश्याम ने माता के सामने बैठकर उनको ब्रह्मज्ञान का अद्भुत उपदेश दिया, इसके उपरान्त अक्षरधाम में स्थित अपने तेजोमय दिव्य स्वरूप का दर्शन भी करवाया। भक्तिमाता घनश्याम की मूर्ति के ध्यान में तल्लीन हो गई, कुछ ही देर में वे अक्षरधाम में सिधार गईं।

तीनों भाइयों ने पिताजी तथा सगे-सम्बन्धियों के साथ मिलकर माता का अन्तिम संस्कार किया।

अब धर्मदेवजी उदास रहने लगे। केवल छः महीने के भीतर वे बीमार

हो गए। वृद्धावस्था के कारण थकावट स्थायी बन चुकी थी। अशक्ति इतनी बढ़ गई थी कि वे बिस्तर से उठ नहीं सकते थे। उन्होंने गरीबों और ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देने का पुण्यकर्म प्रारम्भ किया। अपने पास पुत्रों को बिठाकर वे कथा सुनाने लगे।

एक दिन कथा पूरी होते ही उन्होंने अपने तीनों पुत्रों को अपने पास बुलाया और रामप्रतापजी से कहने लगे, 'देखो रामप्रताप! घनश्याम तो भगवान हैं, वह संसार से हमेशा उदासीन रहता है, इसलिए उसको लाड़-प्यार से रखना, कभी कटु वचन नहीं कहना। मेरी तरह अब तुम घनश्याम और इच्छाराम दोनों को सम्हालना और सुनो घनश्याम, इच्छाराम! तुम दोनों को भी रामप्रताप की आज्ञा में रहना है, मेरी इतनी बात स्मरण में रखना।'

उस समय धर्मदेवजी को घनश्याम के शरीर से तेज की फुहारे फूटती हुई दिखाई दीं। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, राम तथा श्रीकृष्ण आदि देवताओं तथा अवतारों के दर्शन होने लगे। धर्मदेवजी का मन घनश्याम की मूर्ति में स्थिर हो गया। हाथ जोड़कर उन्होंने घनश्याम की प्रार्थना की, कुछ ही पलों में वे अक्षरधाम सिधार गए।

सारा परिवार शोकसागर में डूब गया। सभीने धर्मदेवजी के शरीर को गंगाजल से शुद्ध करके अन्तिम क्रिया संपन्न की। गरीबों तथा ब्राह्मणों को दान दिया गया। रामप्रतापजी ने धर्मदेवजी के परिवार का उत्तरदायित्व बड़ी कुशलता पूर्वक संभाल लिया। घनश्याम भी अब अपने मुख्य उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए उचित अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

## 45. घनश्याम का गृहत्याग

प्रातःकाल का समय था। घनश्याम का मन कहीं पर भी लग नहीं रहा था। संसार की मायाजाल को तोड़कर कहीं दूर तपश्चर्या के लिए चले जाने का मन हो रहा था।

सरयू स्नान करके वे हमेशा की तरह अयोध्या के मन्दिरों में दर्शन करने के लिए जाने लगे। उस दिन लौटते समय बीच में कुछ पहलवान कुश्ती के दाँव करते दिखाई दिए। उन्होंने घनश्याम प्रभु को घेर लिया और उन्हें परेशान करने लगे। उदास हुए घनश्याम को इन लोगों के साथ उलझना



अच्छा नहीं लगा। उन्होंने पल-दो-पल में अपना शरीर पहलवान की तरह विशाल और बलवान बनाकर सभी पहलवानों को मिट्टी में मिला दिया। एक-एक पहलवान को हवा में उछालकर पटक-पटककर सबकी हड्डियाँ चकनाचूर कर दी। सारे के सारे सताईस पहलवान रोने और चिल्लाने लगे।

सभी पहलवानों के परिवारजन घनश्याम के बड़े भाई-साहब के पास शिकायत करने आ गए। उन्होंने रामप्रतापजी से कहा, 'अरे, भाई तुम्हारे छोटे भैया को अनुशासन में रखना सीखो। हमारे बेगुनाह लड़कों को घनश्याम ने इतना पीटा कि उनकी हड्डियाँ ही चकनाचूर हो गई हैं।'



रामप्रतापजी ने इन लोगों की बातें सुनकर घनश्याम को बुलाया और सोचने लगे कि घनश्याम को सूचित नहीं करेंगे और उसकी शिकायतें यदि रोज आती रहीं तो गाँव में रहना दूभर हो जाएगा। माँ-बाप के नहीं रहते, ऐसा ऊधम मचाना ठीक नहीं है। घनश्याम के आते ही उन्होंने डाँटना शुरू कर दिया। घनश्याम चुपचाप सुनते रहे, अन्त में इतना ही कहा: 'बड़े भैया! अब से मेरी कोई शिकायत कभी नहीं आएगी।'

बस, उसी वक्त उन्होंने मन ही मन घर छोड़कर चले जाने का निश्चय कर लिया। रात्रि का भोजन उन्होंने बड़े भैया और भाभी के साथ लिया। रात को सब गहरी नींद सो रहे थे। केवल एक घनश्याम की आँखों से नींद कोसों दूर रह गई थी।

आषाढी वर्षा के दिन थे। रात को करीब साढ़े तीन बजे घनश्याम बिस्तर से उठ बैठे। चारों ओर देखकर उन्होंने कपड़े बदलकर केवल कौपीन धारण की। छोटा-सा वस्त्र, पीठ पर मृगचर्म, एक जपमाला, पलाश का दंड और सभी शास्त्रों के साररूप स्वलिखित गुटका लेकर उन्होंने एकबार सोये हुए भाई-भाभी की ओर नजर डाली। कहीं वे जागृत तो नहीं हुए? हाथ में कमंडल तथा शालिग्राम एवं बालमुकुंद का बटुआ लेकर उन्होंने घर का द्वार धीरे से खोल दिया। बिना कुछ आहट किए वे सरयू नदी की ओर निकल पड़े।

मुंज की एक मेखला अर्थात् कटिसूत्र धारण करके कपाल पर तिलक-चन्दन के साथ सिर के बालों को जटा की तरह बांधकर चले जा रहे घनश्याम का यह स्वरूप अनुपम था। नंगे पैर उन्होंने गाँव और घर से दूर चले जाने के लिए सब से बहेतरीन मार्ग चुना, सरयू नदी का। अब उनका एक मात्र लक्ष्य था हिमालय के शिखरों पर तपश्चर्या और लोककल्याण।

## 46. सरयू के किनारे

ब्रह्मचारी का वेश धारण करके घनश्याम तीव्र गति से सरयू की ओर चले जा रहे थे। बार-बार पीछे मुड़कर देख रहे थे कि कहीं बड़े भैया वापस घर न ले जाएँ! उनको अब किसी भी हालात में घर नहीं जाना था। तपश्चर्या उनका लक्ष्य था और लोगों का कल्याण करना उनकी करुणा थी। वे जल्दी से सरयू के किनारे आ पहुँचे।



संवत् 1849 (सन् 1792) की आषाढ़ शुक्ला दशमी का वह प्रातःकाल इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। उस दिन बरसात की हल्की सी बूंदें गिर रही थीं, सरयू नदी बाढ़ के कारण दोनों किनारों तक लबालब भरी थी। नदी का रौद्र रूप देखकर भी घनश्याम आगे बढ़ते चले!

उन दिनों तांत्रिक कालिदत्त का मित्र और ऐसे ही असुरों के सरदार कालिय ने अपने एक राक्षसी वृत्ति के आदमी कौशिक को घनश्याम के पीछे लगाए रखा था। आज प्रातःकाल घनश्याम को अकेले सरयू के किनारे पर बैठे हुए देखकर वह अचानक घनश्याम के पीछे आ धमका। घनश्याम को जान से मार देने का ही उसका लक्ष्य था। बिल्ली की भाँति पीछे से आकर उसने घनश्याम को बाढ़ में पागल हुई सरयू के जल में धक्का देकर फेंक दिया। समुद्र-सी लहरें सरयू नदी में उछल रही थी। घनश्याम ऐसी ही तीव्र लहरों के साथ शीघ्र वेग से गहरे पानी में बहने लगे। कुछ ही पलों में वे अदृश्य हो गए। कौशिक खुशी के मारे पागल हो उठा। अट्टहास्य करके वह अपनी सफलता का समाचार देने के लिए अपने सरदार कालिय के पास पहुँच गया।

## 47. भाभी का विलाप

इस ओर बड़े भाई रामप्रताप और सुवासिनी भाभी जागे तो पता चला कि घनश्याम घर में नहीं हैं। उन्होंने सोचा कि शायद रोज की अपेक्षा कुछ जल्दी ही स्नान के लिए सरयू चले गए होंगे। अभी स्नान करके लौट आएगा।' रामप्रतापजी स्नानादि से निपटकर खेत में चले गए। भाभी घनश्याम के लिए नाश्ते की तैयारी करने लगे। समय बीतता जा रहा था। सभी अपने-अपने काम में उलझ चुके थे कि किसीको दोपहर तक घनश्याम का स्मरण ही नहीं हुआ।

दोपहर तक किसी ने घनश्याम को नहीं देखा तो कुछ चहल-पहल होने लगी। भाभी प्रतीक्षा कर रही थी कि घनश्याम के आने पर साथ में भोजन करूँगी। परन्तु घनश्याम वापस नहीं लौटे। भाभी चिंतित होकर घनश्याम के बालमित्रों को घर बुलाकर पूछने लगी, 'आपने घनश्याम को देखा है? कहीं आपके साथ नदी पर स्नान करने तो नहीं आया था? अभी

तक वे घर नहीं लौटे हैं। तुम लोग जानते हो कि वह कहाँ गए हैं?’

सभी बालमित्रों ने कहा, ‘भाभी, हमें तो बिलकुल नहीं मालूम, क्योंकि स्नान के समय वे आज तो हमारे साथ नहीं थे।’ ‘अच्छा!’ भाभी के मुँह से निकल गया। उनकी चिन्ता और भी बढ़ गई। भाभी स्वयं देवरजी की तलाश करने अपने सभी सगे-सम्बन्धियों के घर पर पहुँच गई। लक्ष्मीबाई और चन्दनमौसी के घर पूछताछ की, आस-पड़ोस से लेकर हर मंदिर, हर देवालयों को छान मारा। पर घनश्याम का पता कहीं नहीं लगा। संध्या होने तक वे बेचारी दर-दर भटकती फिरी, आखिर रामप्रतापजी को बुलाने के लिए आदमी भेजा। उनके आने पर रोती हुई भाभी ने पूरी बात कह सुनाई।

रामप्रतापजी दुःखी होकर अपने आपको पूछने लगे कि वह कहाँ गया होगा? फिर एकबार उन्होंने अयोध्या के जिन मन्दिरों में घनश्याम का हमेशा डेरा लगा रहता वहाँ जाकर तलाश करना आरंभ किया। सारे शहर में समाचार फैल गए कि नगर के विभूति स्वरूप घनश्याम अयोध्या में नहीं है। अब सभी ने छपिया का रुख लिया। जामुन के वन में और गाँव की सींव में तलाश होने लगी। वेणी, माधव और प्राग के खेतों में भी तलाश की गई। घनश्याम जहाँ जहाँ खेलने जाते थे, उन सभी स्थानों पर जाकर लोगों ने घनश्याम को ढूँढने का प्रयास किया। पर वे कहीं भी नहीं दिखाई दिए।

छोटेभाई इच्छाराम बार-बार भाभी से पूछने लगते, ‘भाभी! घनश्याम भैया कहाँ गए? घर में उनके बिना मेरा जी नहीं लगता। घनश्याम को बुला लो न!’ भाभी फूटफूटकर रोने लगती। किसी काम में उसका मन नहीं लगता था। हर पल घनश्याम की याद ने उनको पागल बना दिया। घनश्याम के बालमित्र भी बिना घनश्याम के बेचैन घूम रहे थे। सभी के मन में यही प्रश्न बार-बार चुभ रहा था कि ‘घनश्याम कहाँ गए?’ वे बार-बार घनश्याम के आकर भाभी से पूछते थे कि ‘घनश्याम मिले? हम लोग सब जगह हो आए, वे कहीं नहीं मिले। सभी मुहल्लों में, सभी छोटे-बड़े बाजारों में भी देख लिया, वे कहीं नहीं हैं, वे कहाँ गए होंगे? उनका क्या हुआ होगा? वे अभी तक घर क्यों नहीं लौटे?’

अब तो रामप्रतापजी का धैर्य भी जवाब दे गया। उनकी आँखों से भी आँसू बहने लगे। सब सगे-सम्बन्धी भी पुनः पुनः मुहल्लों में, बाजारों में और बालमित्रों के घर तलाश कर आए। पर कहीं भी किसी को कोई पता नहीं चला। अयोध्या के आकाश में अँधेरा छाने लगा था, सभी हाथ में लालटेन लेकर गाँव के बाहर सीव और खेतों में, नदीकिनारे और जंगलों में घनश्याम की खोज के लिए निकल पड़े थे।

भाभी रो रोकर जान दे रही थीं, इच्छाराम भी बारबार घनश्याम को याद कर रो रहे थे। सभी बालमित्रों के तो रो-रो के बुरे हाल हो रहे थे, घनश्याम सभीको प्यारे थे। नगर की सभी स्त्रियाँ और सभी पुरुष रो रहे थे। भाभी ने सोचा, शायद वह जंगल की ओर गए हों और वहाँ शेर या भेड़िये के शिकार तो नहीं हो गए होंगे? शायद उन्हें साँप ने काट लिया हो, हो सकता है, नदी में घड़ियाल ने उन्हें निगल लिया हो... वे बुरे विचारों के कारण सिर पटक-पटककर रोती रहीं।

उन्होंने सोचा कि कल उनके बड़े भैया ने उलाहना दी थी, इसीलिए वे उदास होकर, घर छोड़कर, संन्यासी बनकर तप करने तो नहीं चले गए? परंतु जूते और कपड़े तो यहाँ पड़े हैं! वे नंगे पैर कैसे चल पाएँगे? जंगल में उनकी तबियत का क्या हाल होगा? खुले बदन से वे जाड़ा, गर्मी कैसे सहन कर पाएँगे? जंगल में उन्हें रसोई बनाकर कौन खिलायेगा? रोज़ दूध, दही, मिठाई खानेवाले घनश्याम को जंगली फल-फूल कैसे पसन्द आएँगे? जंगली प्राणी तो उन्हें मार ही डालेंगे। ऐसे-ऐसे विचार आते थे कि भाभी बस केवल रोते हुए अपनी पीड़ा बहाती रहती थी।

रामप्रतापजी सब जगह पूरी तलाश करके मध्यरात्रि को वापस लौटे। घनश्याम घर पर नहीं आए थे, यह देखकर अब वे स्वयं को नहीं सम्हाल सके, फूट-फूटकर रोने लगे। भैया और भाभी दोनों को कहीं भी पलभर चैन नहीं पड़ता था। रोते-रोते वे परमात्मा से प्रार्थना करते थे, 'हे भगवन्! आप हमारे घनश्याम को वापस लौटा दीजिए। अब हम अपने आपको काबू में नहीं रख सकते। आप हमारे प्राण भले ही ले लें, लेकिन हमको अपने प्राणों से भी अधिक प्यारे घनश्याम को खोज दीजिए। हमारे घनश्याम को हम से मिला दीजिए।' लोग कहेंगे, 'भाई-भाभी ने घनश्याम को घर से



निकाल दिया।' तो कोई कहेगा, 'इन लोगों से परेशान होकर ही घनश्याम भाग निकले। अब हम घनश्याम की इच्छा के अनुकूल ही सबकुछ करेंगे... वैसे ही रहेंगे जैसा वे चाहेंगे, लेकिन हमारे.... घनश्याम को.... आप....।'

इस प्रकार प्रलाप करते हुए दोनों जार-जार आँसू बहाते रहे। रोते हुए दोनों बेहाल हुए थे और दूसरा दिन आ गया। रामप्रतापजी ने घनश्याम की तलाश करने के लिए चारों ओर घुड़सवार भेजे। उनको खेत में जाने का मन नहीं करता था, घर में कोई भोजन नहीं करता था। किसीको भोजन अच्छा ही नहीं लगता था। छोटे भाई इच्छाराम दिनभर घनश्याम की याद में रोते रहते थे। इसी हालत में दो-पाँच-दस दिन बीतते रहे। घनश्याम का पता कहीं नहीं लगा। सभी हताश हो गए, छोटेभाई इच्छाराम और भाभी तो कई बार नींद में भी घनश्याम... घनश्याम... की पुकार करते हुए जाग जाते थे। सारा अयोध्या शहर सूना हो गया।





